गोविन्ददास-भजनावली

सम्पादक

गोविन्द झा



मैथिली अकादमी, पटना

मैथिली अकादमी प्रकाशन-१८

SBN-81-85763-27-5

प्रकाशकः
मैथिली अकादमी
पटना ।

प्रथम संस्करण : १९८२
द्वितीय संस्करण : २००७
तृतीय संस्करण : २०१२
पृष्ठ : १६८

प्रति : १०००

मूल्य : =७०.०० (सत्तर टाका) मात्र

मुद्रक :
शोभा प्रिंटिंग प्रेस,
नयाटोला पटना-4

पुर्नप्रकाशकीय

जहिना हमरालोकनि महाकवि विद्यापतिकेँ सुप्रतिष्ठित कयने छियनि, तहिना बंगाली लोकनि गोविन्द दासकेँ बंगला कविक मान्यता दय स्तुत्य बनौने छथि ।

कहबाक प्रयोजन नहि जे गोविन्द दास महाराज सुन्दर ठाकुर'क समकालीन छलाह, जनिक जीवनकाल 1643/44-1770/71 अछि । आनन्द विजय नाटिकाक रचनाकार आ गोविन्द दासक छोट भाय रामदास अपन रचनामे हिनक गुणक विषयमे वृहत चर्चा कयने छथि ।

गोविन्द दासक रचनाक मार्मिकतासँ स्पष्ट होइछ जे ई अपन पूर्ववर्ती विद्यापतिकेँ आदर्श मानैत छलाह । विद्यापतिक लेल हिनक एकटा पाँती देखल जाय-

कविपति विद्यापति मतिमा
जाक गीत जग चीत चोराओल
गोविन्द गौरि सरस रस जाने ।

मैथिली साहित्यक प्रकाण्ड विद्वान पं॰ गोविन्द झा द्वारा ई पोथी सम्पादित अछि, एहि कारणेँ एहि पोथीक उपयोगिता आओर बेसी बढ़ि गेल अछि ।

एहि पोथीक तेसर संस्करण पुनर्मुद्रण करा अकादमी अपनेक अभिष्ट सिद्धि हेतु कृत संकल्पित अछि ।

कमलाकान्त झा
अध्यक्ष
मैथिली अकादमी
पटना

पटना
दिनांक 22-12-2012

निदेशक सह सचिवक कलम सँ

प॰ गोविन्द झाक सम्पादकत्वमे अकादमी द्वारा पुनर्मुद्रित पोथी गोविन्द दास भजनावली एकटा महत्वपूर्ण आ उपयोगी कृति अछि ।

मैथिली प्रेमी एहि पोथीक सुस्वागत करताह से विश्वास अछि ।

जितेन्द्र प्रसाद
निदेशक-सह-सचिव

पटना
दिनांक 22-12-2012

प्रकाशकीय

विद्यापतिए जेकाँ गोविन्ददासकेँ सेहो बंगाली लोकनि बंगलाक कवि मानि प्रतिष्ठित कयने छलाह । सर्वप्रथम डा० नगेन्द्रनाथ गुप्त एकर संकेत देलनि जे गोविन्ददास सेहो विद्यापतिए जेकाँ मैथिलीक कवि छथि । पं० चेतनाथ झा तथा चन्दा झा एहि बातकेँ पुष्ट कयलनि जे गोविन्ददास मैथिलीक कवि छलाह । सभसँ पहिने स्व० मथुरा प्रसाद दीक्षित गोविन्ददासक पदावलीक एक संग्रह प्रकाशित कयने छलाह । चन्दा झा द्वारा संगृहीत पदक आधार पर डा० अमरनाथ झा गोविन्ददासक पद सभकेँ *शृंगार-भजनगीतावलीक* नामसँ प्रकाशित कयने छलाह ।

कहल जाइत अछि जे गोविन्ददास महाराज सुन्दर ठाकुरक समकालीन छलाह जनिक जीवनकाल १६४३/४४-१६७०/७१ अछि । गोविन्ददासक छोट भाय रामदास अपन **आनन्दविजय** नाटिकामे हिनक गुणक विषयमे लिखने छथि । ई सभ भाय कवि छलाह ।

गोविन्ददासक कविता सभमे अद्भुत वर्णनछटा अछि आ साधारणतः ई राधा आ कृष्णक प्रेमलीला तथा विरहक वर्णन कयलनि अछि । विद्यापतिक कवितासँ गोविन्ददासक कवितामे बहुत स्पष्ट भिन्नता देखल जाइछ । गोविन्ददासक भाषा गहन रहैछ, संगहि ध्वनि, अर्थ ओ शब्दक व्यवहार दिस हिनक ध्यान विशेष रूप सँ पाओल जाइछ । हिनक कविता ताहि तरहक नहि अछि जकरा राज दरबारक हेतु वा राजाक हेतु लिखल कविता कहल जाय । कखनहुँ-कखनहुँ हिनक कविता शब्दक कठिनताक कारणेँ सहज बोधगम्य नहि होइछ, तथापि शृंगारिक तथा भाववर्णनसँ हिनक काव्यात्मक कला पूर्णतः प्रकटित होइछ । एहि रूपेँ गोविन्ददासक कविताक मार्मिक विश्लेषण कयनिहार विद्वानलोकनिक ई कहब हमरहु पूर्णतः समुचित बूझि पड़ैत अछि जे गोविन्दासक काव्य नारिकेल फलक सदृश होइतहुँ श्रुति-माधुर्यसँ परिपूर्ण अछि ।

गोविन्ददासक कविताकेँ पढ़लासँ बुझना जाइछ जे ई अपन पूर्ववर्त्ती विद्यापतिकेँ आदर्श मानैत छलाह । एक कवितामे विद्यापतिक प्रति ई अपन श्रद्धा निम्नलिखित शब्दमे व्यक्त कयने छथि :-

कविपति विद्यापति मतिमाने
जाक गीत जग चीत चोराओल
गोविन्द गौरि सरस रस गाने ।

विद्यापतिए जेकाँ राधाकृष्णक विविध रूपमे ई वर्णन कयने छथि । संगीत आ शब्द हिनक कविताक मुख्य गुण अछि । शृंगारभजनगीतावलीमे हिनक एहि गुणक संकेत निम्नलिखित शब्द मे अछि :-

रसना रोचन श्रवन विलास,
रचइ रुचिर पद गोविन्ददास ।

एहि ठाम हिनक कविताक विशद आलोचना करब हमर ध्येय नहि अछि, केवल हिनक कविताक गुणक सम्बन्धमे दू एक बात सांकेतिक रूपमे कहब आवश्यक बुझना गेल ।

मैथिली अकादमीक ई प्रकाशन पं० गोविन्द झा द्वारा सम्पादित अछि जे मैथिली भाषाक प्रकाण्ड विद्वान् आ साहित्यक मर्मज्ञ छथि । एहि संस्करणमे ओ कविता सभक अर्थ सेहो देलनि अछि जाहिसँ एहि पुस्तकक उपयोगिता आओरो बढ़ि गेल अछि ।

गोविन्ददासक कवित्वशक्ति आ हुनक साहित्यिक कृतिक आओरो विशद अध्ययन एवं आलोचना आवश्यक बुझना जाइछ जाहिसँ ई धारणा दूर हो जे मैथिलीमे विद्यापतिक बाद बड़ कम श्रेष्ठ कवि भेल छथि ।

४ दिसम्बर, १९८२

मदनेश्वर मिश्र
अध्यक्ष, मैथिली अकादमी ।

द्वितीय संस्करणक प्रसंग

गोविन्ददास-भजनावली आइसँ लगभग पचीस वर्ष पूर्व प्रकाशित भेल। शिक्षा आ प्रतियोगिताक क्षेत्रमे एकर आशातीत आदर भेल। एकर सभ प्रति किछुए दिनमे समाप्त भ' गेल। लगातार माङ पर माङ होइत रहल। परन्तु अनेकानेक अनुल्लेखनीय कारणेँ मैथिली अकादमी एकर, तथा अन्यान्यो कतोक महत्त्वपूर्ण पुस्तकक पुनर्मुद्रण करयबामे असमर्थ रहल।

जखन वर्तमान बिहार सरकार अकादमीक काज सम्हारबाक हमरा देलक आ उदारतापूर्वक आर्थिक साधन उपलब्ध करओलक तँ अकादमीमे सक्रियता आयल आओर अधिक माङबाला पुस्तक सभक प्रकाशन आ पुनर्मुद्रणक प्राथमिकता देल गेल।

एही क्रममे गोविन्ददास भजनावलीक ई द्वितीय संस्करण पाठकक समक्ष प्रस्तुत अछि। एकर प्रथम प्रकाशनक बाद गत बीस-पचीस वर्षमे गोविन्ददासक विषयमे विद्वान् लोकनि बहुत चिन्तन-मनन कयलनि अछि आ बहुतो नब-नब तथ्य उद्‌घाटित भेल अछि। तँ सोचल गेल जे एकर सोझे पुनर्मुद्रण नहि कराय पुनः संस्करण कराओल जाय जाहिसँ ई अधिक अद्यतन आओर अधिक उपयोगी भ' सकय। एकर सम्पादक पं. श्री गोविन्द झा उक्त कार्य सहर्षस्वीकार क' थोड़े समयमे सम्पन्न क' देलनि, तदर्थ हम हुनका प्रति ससम्मान कृतज्ञता ज्ञापन करैत छी।

प्रस्तुत संस्करणमे पूर्वक सभ सामग्री मानू ओहिना अछि जेना पहिने छल। जोड़ल गेल अछि केवल चारि वस्तु-पुनश्च, टिप्पणी, सहायक ग्रन्थसूची तथा शब्दार्थ। पुनश्चमे विद्वान् सम्पादक गोविददासक सम्बन्धमे, विशेषतः हुनक धार्मिक सम्प्रदायक सबन्धमे बहुत रास नव-नव उपयोगी तथ्य आ' विवेचन प्रस्तुत कयलनि अछि। टिप्पणीमे प्रत्येक गीतक सूत्ररूपमे काव्यशास्त्रीय विश्लेषण, मूल्यांकन आ' प्रासंगिक तथ्य प्रस्तुत कयलनि अछि।

आशा अछि, एहि संस्करणक आदर प्रथम मुद्रणहुसँ अधिक होयत।

श्यामनारायण कुमर

दिनांक-20/3/2007

अध्यक्ष-सह-निदेशक

भूमिका

मैथिली-साहित्यक निर्मातामे विद्यापति कनिष्ठिका पर अबैत छथि तँ गोविन्ददास अनामिका पर । विद्यापतिक गीतक एक संकलन *विद्यापति-गीतावली* नामसँ हमर सम्पादकत्वमे मैथिली अकादमीसँ प्रकाशित भेल । तत:पर गोविन्ददासहुक गीतक एक गोट संकलन प्रस्तुत करबाक भार अकादमी हमरा देलक । फलस्वरूप ई *गोविन्ददास-भजनावली* आइ पाठकक हाथमे अछि ।

मैथिली-साहित्यमे गोविन्ददासक गीत सभसँ कठिन मानल जाइत अछि । हमरा ई स्वीकार करबामे कनेको संकोच नहि होइत अछि जे हिनक बहुत-रास गीतक पूरा-पूरा अर्थ एखनहु धरि हमरा नहि लागल अछि । एकर मुख्य कारंण अछि हिनक अति गहन आलंकारिक अभिव्यक्ति, ओ दोसर कारण अछि गीत सभक बिगड़ल पाठ । विशेष क' अनुप्रासबाला गीतसभक अर्थ बैसायब तँ आओर कठिन अछि । अर्थ लगायब हमरहि जकाँ मैथिलीक छात्रलोकनि तथा अध्यापकलोकनिकेँ सेहो कठिन लगैत होयतनि, ई सोचि हम एहि संकलनमे गीतक पूरा-पूरा अर्थो लिखि देबाक साहस कयल अछि । कठिन काव्य लिखबाक आ' तकरा व्याख्याद्वारा सर्वजनबोध्य बनयबाक परिपाटी अपन देशमे बहुत दिनसँ अछि । संस्कृतमे ढेरक ढेर एहन रचना अछि जकर अर्थ बूझब मूलसँ नहि, केवल टीकासँ सम्भव अछि । जँ *बिहारी सतसईक* नाना व्याख्या नहि लिखल गेल रहैत तँ आइ ओकर अनेक दोहाक अर्थ लगायब कठिन भ' जाइत । एहिना आवश्यक अछि जे गोविन्ददासक सकल गीतक टीका लिखि ओकरा बोधगम्य बनाओल जाय । ज्ञातव्य जे आइसँ लगभग अढ़ाय सय वर्ष पूर्व संकलित वैष्णव-पदावली *पदामृत-समुद्र* मे गोविन्ददासक गीतक संस्कृत टीका कयल गेल छल, जाहिसँ अनुमान कयल जा सकैत अछि जे एकर टीका लिखब कतेक आवश्यक बुझल जाइत रहल अछि । प्रस्तुत संकलनमे एहि काजक श्रीगणेश मात्र कयल गेल अछि । जँ अवसर भेल तँ भविष्यमे एहि काजकेँ पूरा करबाक प्रयास करब ।

लगभग चारि सय गीत गोविन्ददासक रचल कहल जाइत अछि । एहिमे सँ चुनि चुनि प्रस्तुत संकलनमे केवल एक सय बीस गीत राखल गेल अछि । सकल गीत अर्थ-सहित एकत्र प्रकाशित कयलासँ पोथी मोट भ' जाइत ओ

छात्रलोकनिकेँ से किनबामे असुविधा होइतनि । तेँ सम्प्रति एतबे गीत राखल। दोसर बात ई जे मुक्तक गीत रचनिहार प्राचीन कविलोकनि प्राय: एके भाव (वा ढाँचा) पर भंगी बदलि-बदलि अनेक गीत रचैत छलाह । अत: प्रस्तुत संकलनमे भावक पिष्टपेषणसँ बँचबाक हेतु ई ध्यान राखल गेल अछि जे एक भावक एके-दूटा गीत रहय, तथा कविक जतेक भाव (वा ढाँचा) प्रचलित अछि से सभ उचित रूपेँ निदर्शित भ' जाय । संगहि इहो ध्यान राखल गेल अछि जे गीत रमणीय हो, स्पष्ट हो, झलफल वा गोङ नहि हो । हमरा विश्वास अछि जे एहिमे जतबा गीत संकलित अछि ततबो पढ़ि लेलासँ छात्र-लोकनिकेँ गोविन्ददासक भाव ओ भंगी हृदयंगत भ' जयतनि आ' ओ हिनक आनो-आन गीतसभक अर्थ बुझबामे स्वयं समर्थ भ' जयताह ।

× × ×

एतय गोविन्ददासक व्यक्तित्व ओ कृतित्वपर विशेष प्रकाश देब आवश्यक नहि, कारण जे मिथिला विश्वविद्यालयक अध्यापक डा० अमरनाथ झाक लिखल *गोविन्ददास* नामक पुस्तक जे मिथिलाक विभूति ग्रन्थमालामे मैथिली अकादमीसँ प्रकाशित अछि ताहिमे एहि विषयक विवेचन विद्वत्तापूर्वक सविस्तार कयल जा चुकल अछि । परन्तु एतेक विवेचनक बादो गोविन्दासक परिचय विवादास्पद अछिए । रमानाथ झा प्रभृति *नार्मलकुजौलिबार* भखरौली मूलक शिवदासक पुत्र ओ *आनन्दविजय* नाटक कर्ता रामदासक अनुज मानैत छथि । तदनुसार हिनक समय १५७०-९६४० ई० क मध्य सिद्ध होइछ । डा० शैलेन्द्रमोहन झा प्रभृति विद्वान् हिनका घुसौते नगबार मूलक *काव्यप्रदीप*कार गोविन्द ठाकुरसँ अभिन्न प्रतिपादित करैत छथि । एक अन्य विद्वान् डा० रामदेव झा हिनका दिघबय सन्दह मूलक *नलचरित* नाटककर्ता राजा कंसनारायणक मंत्री मानैत छथि । परवर्ती दूनू मतक अनुसार हिनक समय सोलहम शताब्दीक मध्य भाग होइत अछि । एतय हम एहि विवादमे प्रवेश करब अनावश्यक बुझैत छी ।

विद्यापतिए जकाँ गोविन्दासहुक विषयमे बंगालमे ई धारणा बद्धमूल छल ओ एखनहु अछि जे गोविन्ददास बंगाली छलाह । एकर आन जे कोनो प्रमाण हो मुदा एतबा तँ मानहि पड़त जे हिनक गीत मिथिलामे ने कोनो लिखित स्रोतसँ भेटल अछि आ ने मौखिक स्रोतसँ । हिनक गीतसभक एकमात्र स्रोत छल बंगालक गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय ओ एहि सम्प्रदायक विद्वान्लोकनि द्वारा संकलित विविध पदावलीसभ । मिथिलामे वा देवनागरी लिपिमे गोविन्ददासक गीत जे सर्वप्रथम प्रकाशमे आयल से थिक राज लाइब्रेरी दरभंगाक लाइब्रेरिअन पं० मथुरा प्रसाद दीक्षित द्वारा सम्पादित ओ पुस्तक भंडार, लहेरियासरायसँ १९३२ ई० मे प्रकाशित **गोविन्द-गीतावली** । परन्तु एकर भूमिकामे गीतक उपलब्धिस्थानक कोनो चर्चा नहि अछि । १९४२ ई० मे मैथिली साहित्यपत्र कर्यालय, दड़िभंगासँ पण्डित श्री अमरनाथ झा, वाँइस-चान्सलर, प्रयाग द्वारा संकलित *महाकवि गोविन्ददास झा कृत शृङ्गार-भजन गीतावली* प्रकाशित भेल जाहिमे गोविन्ददासक ३३५ गोट गीत अछि । एहिमे एकर संकलयिता तँ स्वयं किछु नहि लिखने छथि, किन्तु श्री रमानाथ झा एकर भूमिकामे दू गोट नव बात प्रकाशमे अनलनि : गोविन्ददास कुजौलिबार रामदासझाक अनुज छलाह ओ हुनक गीतक संग्रह कवीश्वर चन्दा झा 'मिथिलामे' कयलनि । तहियासँ वहुत दिन धरि मिथिलामे रमानाथ झाक उक्त मत मानल जाइत रहल । किन्तु आब कतोक विद्वान् हुनक ओहि दुहू तथ्यकेँ शंकाक दृष्टिसँ देखैत छथि । *शृङ्गार-भजन-गीतावलीक* भूमिकामे रमानाथ झा लिखैत छथि–

"...... विद्यापतिक गीतक संग्रहमे इएह कवीश्वर समस्त मिथिलाक पर्यटन कएने छलाह तथा ओही उपक्रममे गोविन्ददासहुक गीत सब संगृहीत होअए लागल छल । एकरे एक प्रति प्राय: बंगाल गेल जाहिमे आओरो-आओरो बंगलाक गोविन्ददास-भनिताक गीत सब मिलाए शुद्धो गीतक बंगला स्वरूप वनाए बंगालक संस्करण सभ भेल । एकरे एक प्रति दरभंगा राजकीय लाइब्रेरीमे सेहो छल जकरे किछु अंश (प्राय: दू तृतीयांश) अन्यान्य गोविन्ददास भनिताक पद सब मिलाए- विशेषत: प्राय: बंगला संस्करणसँ लए किन्तु सभ पदक रूप किछु-ने-किछु संस्कृतक व्याजेँ विकृत कए लहेरिआ सराएक विद्यापति प्रेससँ प्रकाशित भेज । मूल जे लेख कवीश्वर अपन

पोथीमे लिखने जाथि से सब ओही पुरना पोथीमे लिखल अछिए तथा ओही पुरना पोथीसँ जाही क्रमेँ कवीश्वरक लेख छैन्हि शुद्ध ताही स्वरूपमे ताही क्रमेँ उतारि श्री मदमरनाथ बाबू एहि गीतावलीकेँ छपओलैन्हि अछि । एतावता प्रस्तुत ग्रन्थरत्न शुद्ध मिथिलहिटामे प्रचलित गीत सबहिक संग्रह थीक.....।''

कतोक विद्वानक मत अछि जे उपर्युक्त बात रमानाथ झाक अनुमानमात्र थिक, कारण जे चन्दाझाकेँ मिथिलामे ३३५ गोट गीत भेटलनि, किन्तु अनका ककरहु आइ धरि हिनक एको गोट गीत ने कोनो लिखित स्रोतसँ भेटलैक अछि आ ने कोनो मौखिक स्रोतसँ । ततबे नहि, चन्दा झाक समय थिक १८३०-१९०७ ई०, जखन कि शृङ्गार-भजनमे संकलित गीत सभ ओही रूपमे हुनकासँ लगभग सय वर्ष पूर्वहि १७५०-१७७० ई० क आस-पास बंगालमे संकलित *पदामृतसमुद्र, पदकल्पतरु* आदि वैष्णव पदावलीसभमे संगृहीत भ' चुकल छल ओ बहुत रास सम्भवत: कवीश्वर चन्दा झाक जीवन-कालहिमे प्रकाशितो भ' चुकल छल । *शृङ्गार-भजन-गीतावलीमे* बहुत गीतक पौर्वापर्य-क्रम हू-बहू ओहिना अछि जेना *पदकल्पतरु* मे । चन्दा झाक कर्मसखा जस्टिस सारदा चरण मित्र ओ नगेन्द्रनाथ गुप्त बंगालमे संकलित ओ प्रकाशित उक्त वैष्णव पदावली सभसँ अवश्य परिचित छल होयताह । एहि स्थितिमे ई विश्वसनीय नहि लगैत अछि जे चन्दा झा गोविन्ददासक ओही गीतसभक संग्रह मैथिल स्रोतसँ कयलनि जे बंगाली स्रोतसँ सहजहि उपलब्ध छल । अत: कतोक विद्वान् आब ई मानय लगलाह अछि जे चन्दा झा बंगालक वैष्णव पदावलीसभसँ गोविन्ददासक एहन गीतसभ चुनलनि जकर भाषा मैथिली छल ओ सएह गीतसभ **शृङ्गार -भजन-गीतावलीमे** प्रकाशित अछि। चन्दा झाक द्वारा मिथिलामे संगृहीत गीतक प्रतिलिपि बंगाल गेल तखन वैष्णव पदावली सभमे समाविष्ट भेल ई बात उनटा जकाँ लगैत अछि आ काल-क्रम साक्ष्यक प्रतिकूल होइत अछि, अस्तु । गोविन्ददासक गीतक स्रोतक विषयमे एखनहु गहन तत्वानुसान्धानक आवश्यकता अछि ।

गोविन्ददासक यथोपलब्ध लिखित स्रोतसभमे प्राय: कोनो टा एहन नहि अछि जे पाठक दृष्टिएँ निर्भरयोग्य मानल जाय । अत: जेना विद्यापति-गीतावली

क सम्पादनमे कयने छलहुँ तहिना एहूमे उपलब्ध विभिन्न पाठ, अर्थसंगति, व्याकरण, छन्द आदिक साक्ष्य पर ओ बहुधा अपन ऊहिसँ पाठोद्धार करय पड़ल अछि । एहि क्रममे कयल गेल संशोधन दू प्रकारक अछि- पहिल वर्तनी-संशोधन ओ दोसर पाठ-संशोधन ।

शृङ्गार-भजन-गीतावली मे चन्दा झा बहुत शब्दक वर्तनीकेँ आधुनिक रूप द' देने छथि, जे हमरा जनैत गोविन्ददासक समयमे ओ तत्पश्चातो बहुत दिन धरि शिष्ट गृहीत नहि भेल छल । पहिने एके टा उदाहरण लेल जाय । निषेधार्थक अव्यय 'न' प्राचीन मैथिलीमे तत्सम रूपमे लिखल जाइत छल, किन्तु प्राचीन बङलामे 'ना' लिखाइत छल । चन्दा झा एहन स्थलमे बङलासँ प्रतिलिपि करबाक काल 'ना' केँ 'नै' क' देलनि अछि जे स्पष्टतः 'नहि' शब्दक आजुक विकृत उच्चारण थिक आ तेँ साहित्यिक मैथिली लेखमे ग्राह्य नहि भेल अछि । मानि लिअ, पदकल्पतरुमे पाठ अछि- भाल करि पेखल ना भेल, एकर रूपान्तर चन्दा झा करताह *भलकैपेखलनैभेल* जखन कि हमरा विचारेँ होयबाक चाही-*भलकएपेखलनभेल'* । एहिना भेल। *ऐछन-अइसन,भैगेल*-भए गेल, कहै *नैपारिय-कहएनपारिअ,बिछुरल-बिसरल* इत्यादि रूपक वर्तनी-संशोधन हम यथासंभव सर्वत्र क' देल अछि । एहि प्रकारक परिवर्तनक उल्लेख पाठशुद्धिक टिप्पणीमे अनावश्यक बूझि छोड़ि देल गेल अछि ।

कतोक सार्वनामिक रूपक विषयमे सेहो चन्दा झा आधुनिक रूपकेँ विशेष प्रश्रय देलनि अछि । यथा *जइसन, तइसन, अइसन, ताकर, जाकर, ताक, जाक* इत्यादिक स्थानमे *जेहन, तेहन, केहन, एहन, तनिकर, जनिकर* इत्यादि । गोविन्ददासकालीन मैथिलीमे दुनू रूप प्रायः समान मात्रा मे चलैत छल, तेँ हम छन्दकेँ देखैत यथास्थान दुनू रूप रहय देल अछि । एहू तरहक परिवर्तनक उल्लेख पाठशुद्धिक पादटिप्पणीमे नहि कयल अछि ।

पाठ-संशोधन अधिकतर अन्य स्रोतमे पाओल गेल पाठान्तरक आधार पर कयल अछि परन्तु बहुत संशोधन अपने ऊहिसँ कयल अछि । कतहु-कतहु केबल एक-आध अक्षरक परिवर्तन क' देलापर अर्थ दर्पणवत् स्पष्ट भ' जाइत अछि आ शब्द पनबट्टीक खप्पा जकाँ बैसि जाइत अछि । एहन आधा

अक्षरक संशोधनक एक रोचक उदाहरण देखल जाय । *शृङ्गार-भजन-गीतावलीमे* तथा *पदकल्पतरु* मे एकटा गीत अछि जाहिमे कृष्ण सोनारक रूपमे चित्रित छथि । एकर पहिल वाक्य दूनूमे एहि रूपैं अछि- *बेनुक फूक बूक मदनानल*। कृष्णरूपी सोनार अपन वंशीरूपी फोँफीसँ कामाग्निकैं बूकैत अछि । बूकब थिक चूर्ण करब, किन्तु एतय कामाग्निकेँ बूकब अनन्वित लगैत अछि । जँ बूक केँ धूकक' दैत छिऐक तँ अर्थ बैसि जाइत अछि । धूकब थिक फूकि-फूकि आगिकैं प्रज्वलित करब, जेना सोनार फोँफीसँ करैत अछि ओ जेना केरा धुकबा मे कयल जाइत अछि । तिरहुतामे ओ बङलामे 'ब' मे बामा भाग एक ऊर्ध्वमुख अंकुश जोड़ि देलासँ ओ 'ध' भ' जाइत अछि । हमर अनुमान अछि जे एतय उक्त अंकुशक टूटि वा छूटि गेलासँ धूक बिगड़िक' बूक भ' गेल अछि । अत: एतय एको अक्षरक नहि, मात्र आधा अक्षरक संशोधनसँ पाठोद्धार भ' गेल अछि ।

गोविन्ददासक भनिताबाला जतेक गीत सम्प्रति उपलब्ध अछि ताहि सभकेँ भाव, भाषा ओ काव्य-सौष्ठव तीनू आधार पर एके कविक रचना मानब कठिन बुझाइत अछि । इहो मानल जाइत अछि जे मिथिलामे तथा बंगालमे एकाधिक कवि गोविन्ददास नामक भेल छलाह । तेँ ई बात पक्का-पक्का कहब कठिने नहि, असम्भव अछि जे एहि संकलनक सभ गीत एके कवि मैथिल गोविन्ददासक थिक । चन्दा झा ओहने गीतसभक चयन कयलनि जे भाव ओ भाषाक दृष्टिएँ हुनका मैथिल भक्त कवि गोविन्ददासक मैथिली रचना बूझि पड़लनि । हमहूँ गीतक चयनमे एहि सूत्रकेँ ध्यानमे राखल अछि । तथापि स्पष्टवादिताक रक्षार्थ एक बात कहि देब उचित बुझैत छी जे विद्यापति जेहन विशुद्ध मैथिलीक प्रयोग प्रचुर मात्रा मे क्षेत्रीय रंग दैत कयलनि अछि से गोविन्ददासक रचनामे नहि पबैत छी । हिनक गीतक भाषा मैथिली होइतहुँ ब्रजबुलिसँ बहुत पृथक् नहि अछि, ओ बङलाक प्रभाव स्पष्ट अछि । बङलाक ई प्रभाव गोविन्ददासक गीतक प्रकृति थिक, विकृति नहि । चन्दा झा हिनक गीतसभकैं विशुद्ध मैथिली रूपमे प्रत्यावर्तित करबाक लाख चेष्टा कयलनि, तथापि *शृङ्गार-भजन-गीतावलिओमे* बङलाक शब्द सभ ठाम-ठाम अनिवार्यतया दृष्टिगत

होइत अछि, यथा (अंक शृङ्गारभजन-गीतावलीक गीतांक थिक, क-प्रथम भाग, ख-द्वितीय भाग)

नाइ (नहि)-६३क	नाइ (आनिक')-१११क
ठाइँ (ठाम)-६३क	घुमाएल (सूतल)-२क
मरबेक (मरत)-६७क	घूम (निद्रा)-१३५क
थाके(अछि)-६७क	घूम (निद्रा)-५६ख

बङ्लाक एतबा पुट अनेक प्राचीन कविक मैथिली रचना मे भेटैत आयल अछि। तँ एहिसँ गोविन्ददासक मैथिलत्व मे कोनो शंका करब निराधार होयत। हमरा विश्वास अछि जे एहिमे संकलित गीत मैथिल गोविन्ददासक थिक ओ एतबा नीक जकाँ पढ़ि लेला पर केओ पाठक कविक हृदयक स्पष्ट आभास पाबि सकैत अछि।

अन्तमे अधिकारी विद्वान् लोकनिसँ हमर निवेदन जे एहि संकलनमे जं कोनो त्रुटि अछि से क्षमा क' हमरा सूचित करथि जाहिसँ आगाँ ओकर परिमार्जन कयल जा सकय।



गोविन्द झा

पुनश्च

द्वितीय संस्करणक अवसर पर

गोविन्ददास-भजनावलीकेँ पुनर्मुद्रणक सौभाग्य भेलैक से प्रसन्नताक बात । पुनर्मुद्रण तँ हमर अनेक पोथीक भेल किन्तु पुनरीक्षण-परिमार्जनक अवसर पहिल बेर मैथिली अकादमीक वर्तमान अधिकारीलोकनि देलनि, तदर्थ हुनकालोकनिकेँ धन्यवाद ।

एकर प्रथम मुद्रण आइसँ चौबीस वर्ष पूर्व भेल । एहि दीर्घ अवधिमे हम गोविन्ददासक आओर अध्ययन-अनुसन्धान करैत रहलहुँ । **गोविन्ददास** नामक एक टा विनिबन्ध लिखल । एहि क्रममे बहुत रास नव-नव तथ्य आ कथ्य दृष्टिगत भेल । एकर सुफल प्रस्तुत संस्करणकेँ भेटौक तदर्थ पुनः कलम उठाओल ।

पुनः कलम उठएबाक एक आओर कारण । किछु छात्र, अध्यापक आ' समीक्षकसभक प्रतिक्रिया आएल जे एहिमे गीतसभक केवल सरल भाषामे गद्य रूपान्तर देल गेल अछि । ततबहिसँ छात्र परितुष्ट नहि छथि । यथार्थे, गोविन्ददासक गीतमे अगाध भावगाम्भीर्य, अलंकारक घटाटोप, अभिव्यक्तिक विचित्रता आ' सभसँ बढ़ि अभिनव वैष्णव साधनाक गूढ़ रहस्य भरल अछि । अतः एहि सभक विवेचना रहबाक चाही । एहि अपेक्षाक पूर्ति **पुनश्च** मे यथासाध्य कएल गेल अछि । आशा जे एकर सहायतासँ छात्रगण गीतक मर्म बुझबामे आ' विशद व्याख्या करबामे समर्थ होएताह । इएह सोचि गीतक विशद व्याख्या नहि कए अर्थ जहिना देल गेल छल लगभग तहिना रहए देल गेल । हँ, कोनो-कोनो गीतक प्रसंग जे किछु विशेष बात उल्लेखनीय अछि से टिप्पणीमे देल गेल अछि।

गोविन्ददासक अध्ययनमे सभसँ पहिने हुनक धार्मिक सम्प्रदाय जड़िसँ जनबाक होएत । मैथिली-साहित्यक शिलान्यास सहजिआ सन्तसभक वाणी **चर्यापद** सँ भेल । एहि सन्तलोकनिक साधनामार्गमे परकीया-संगम अपेक्षित छल । ई लोकनि तदर्थ डोम्बिनी रखैत छलाह । पछाति ई मार्ग धार्मिक नहि रहि कामतृप्तिक साधन भए गेल । अतः अग्रिम सन्तलोकनि अपनहिकेँ राधा बूझि ध्यान मे कृष्णसँ संगम करए लगलाह । चैतन्यमहाप्रभुक कालमे

ई संगम शुद्ध प्रीतिक रूप लेलक । साधारणीकरण द्वारा राधा-कृष्णक प्रीति साधकक स्वीय प्रीति होइत मधुर रसमे परिणत भए जाइत छल । एहि प्रीतिक नाना अवस्थामे रमैत रहब साधनाक प्रशस्त मार्ग भए गेल । एहि साधारणीकरणमे साधकक अपन पुंस्त्व वा स्त्रीत्व तिरोहित भए जाइत छल–के भोक्ता के भोज्य से मान लुप्त भए जाइत छल । खन अपनामे राधाक भान होइत छल तँ खन कृष्णक । जखन राधासँ तादात्म्य होइत छल तखन कृष्णक विरह आओर जखन कृष्णसँ तादात्म्य तखन राधाक विरह साधककेँ व्याकुल कए दैत छल । एहि अवस्थाक पारिभाषिक नाम पड़ल **महाभाव** । इएह थिक गोविन्ददासक धार्मिक सम्प्रदाय । एहिमे पुरुष साधक सामान्यतः अपनाकेँ राधासँ वा गोपीसँ दातात्म्य स्थापित कए महासुख (सम्भोगजन्य परम आनन्द) पबैत छलाह । परन्तु गोविन्ददास कृष्णक आराधना राधा-भावेँ नहि, सखी-भावेँ करैत छलाह । एहिमे कामवासना जगबाक संकट नहि, किएक तँ सखी ने भोज्या होइत अछि, ने भोक्त्री । ओ तँ दूरहिसँ प्रणय-लीला देखि-देखि आप्यायित होइत रहैत अछि । आचार्य रमानाथ झाक शब्दमे **गोविन्ददास झा सर्वत्र अपनाकेँ ओहि मधुर लीलाक साक्षीं मात्र मानैत रहैत छथि** ।

गोविन्ददास मिथिलामे हाल धरि प्रच्छन्न, अज्ञात छलाह । ई मिथिला मे कोनो-कोनो प्रकट भेलाह तकर विवरण प्रकाशकीय (पृ. ३) मे, भूमिका (पृ. ८-९) मे तथा **शृङ्गार-भजन-गीतावलीक** भूमिका मे देखल जाए। चन्दाझा द्वारा उद्घाटित आ' आचार्य रमानाथ झा द्वारा सुप्रतिष्ठापित गोविन्ददासक ओ परिचय आब मिथिलामे आ बंगालहुमे सामान्यतः मान्य भए चुकल अछि। तैओ किछु विद्वान् मतान्तर उपस्थित कएने छथि । बंगालमे वैष्णव साहित्यक प्रकाण्ड पण्डित विमान विहारी मजूमदार अपन संकलित २९१ गीतमे एकमात्र गीत मैथिल गोविन्ददासक मानैत छथि, आओर सभटा बंगाली गोविन्ददासक, मुख्यतः गोविन्ददास कविराजक । मिथिलामे शैलेन्द्र मोहन झा हिनका काव्यप्रदीपकार घुसौते नगमा मूलक गोविन्द ठाकुर (१४९७-१५३५) सँ अभिन्न मानैत छथि । रामदेव झा हिनका दिघबए मूलक रविकरक पुत्र गोविन्द ठाकुर (१४८७-१५२७) सँ अभिन्न मानैत छथि। एक अन्य विद्वान् नरेन्द्रनाथ दासक मतेँ ई गोबिन्ददास विद्यापतिक समकालीन अमृतकरक

अधिकसँ अधिक १५५० ई० भए सकैत अछि। प्रपौत्र छलाह, जनिक काल अधिकसँ अधिक १५५० ई० भए सकैत अछि। ई तीनू मतान्तर कालक कसौटी पर खण्डित भए जाइत अछि; किएक तँ एहि गोविन्ददासकेँ जीवगोस्वामीक समय (१५२३ - १६१८) मे उपस्थित पबैत छी आ' रूपगोस्वामी (१४९०-१५६३) केर **उज्जवलनीलमणिक** अनेक श्लोकक अनुवाद गोविन्ददासक गीतमे पबैत छी।

गोविन्ददासक गीतक प्रथम दर्शन होइत अछि १६६०-७०क आस-पास **रसमंजरी** नामक संस्कृत काव्यशास्त्रक उदाहरण रूपमे। आगाँ वैष्णव पदक प्रायः सभ संकलन मे हिनक गीत पाओल जाइत अछि। प्रतीत होइत अछि जे हिनका गीत लिखबाक प्रेरणा मुख्यतः वैष्णव काव्यशास्त्रसँ भेलनि। एहि कालक काव्यशास्त्रक परम्परामे नायक-नायिकाक (विशेषतः नायिकाक) भेदोपभेद (मध्या, मुग्धा इत्यादि) तथा विविध काम-केलि, कामावस्था आदिक वर्णन, श्लोकमे तकर उदाहरण सहित, प्रमुख विषय रहैत छल। विश्वानाथ महापात्रक **साहित्यदर्पण**, भानुदत्तक **रसमंजरी** इत्यादि परम प्रचलित छल।

वैष्णव पण्डितलोकनि काव्यास्त्रक एहि परम्पराकेँ एक नब मोड़ देलनि। ई लोकनि कामुकतासँ भरल लौकिक प्रेमकेँ त्यागि राधा-कृष्णक दिव्य प्रेमकेँ काव्यक विषय बनओलनि। रूपगोस्वामीक **उज्ज्वनीलमणि** एहि परम्पराक सर्वोत्कृष्ट काव्यशास्त्र सिद्ध भेल। तकर विशेष कारण छल। चैतन्य महाप्रभु (१४८५-१५३४) अभिनव वैष्णव सम्प्रदायक प्रवर्तन कएल केवल मौखिक प्रवचन आ तदनुरूप आचरण द्वारा। हुनक एहि सम्प्रदायक सिद्धान्त आ' व्यवहारकेँ शास्त्रनिबद्ध कएल उक्त रूपगोस्वामी (१४९०-१५६३)। हिनक **भक्तिरसामृतसिन्धु** चैतन्य सम्प्रदायक सिद्धान्त शास्त्र मानल जाइत अछि तँ **उज्ज्वलनीलमणि** ओहि सिद्धान्तक अनुगामी काव्यास्त्र। एही बीच चैतन्य महाप्रभुक १५३४ मे आ रूपगोस्वामीक १५६३ मे वैकुण्ठवास होइत अछि आओर तकरा बाद लगभग १६०० ई० मे एहि दृश्यपटल पर अबैत छथि गोविन्ददास। एतए रूपगोस्वामीक छोट भाए पण्डितप्रवर वैष्णवाचार्य जीवगोस्वामीसँ हिनक संगति होइत अछि। शीघ्रे गोविन्ददास रूपगोस्वामीक **उज्ज्वलनीलमणिसँ** प्रभावित भए एकरे श्लोकसभक भावभूमिपर, एकरे लक्षण सभक उदाहरण रूपमे तत्कालीन भाषामे गीत

लिखैत गेलाह । ततबे नहि, **उज्ज्वलनीमणिक** बहुतो श्लोकक गीतबद्ध अनुवादो कएल । एहन अनुवादक सात गोट उदाहरण **गोविन्ददास** नामक विनिबन्ध मे (पृष्ठ ८१-८४) देखाओल गेल अछि । गोविन्ददास नवद्वीप मे गीत रचैत छलाह आ' से वृन्दावनमे गाओल जाइत छल । ई बात एक प्राचीन पत्रसँ ज्ञात होइत अछि जे एहि प्रकार अछि :

सम्प्रति यत् श्रीकृष्णवर्णनामयस्वीयगीतानि प्रस्थापितानि पूर्वमपि यानि तैरमृतैरिव तृप्ता वर्त्तामहे, पुनरपि नूतनतत्तदाशया मुहुरतृप्तिं च लभामहे ।

अर्थात् 'सम्प्रति जे श्रीकृष्णक वर्णनमय अपन गीतसभ पठाओल आ पूर्वहु जे सभ पठओने रही ताहिसँ हम सभ तेना तृप्त छी जेना अमृत पीलासँ; आओर पुन: एहन नब-नब गीत पबैत रहबाक आशासँ अतृप्तिबोध सेहो भए रहल अछि ।

एहि बातक पुष्टि **पदकल्पतरु** (पृ. ८०) मे आएल एक श्लोकहुसँ होइत अछि :

श्रीगोविन्दकवीन्द्रचन्दनवने चञ्चद्वसन्तानिले
नानीत: कवितावली-परिमल: कृष्णेन्दुसम्बन्धभाक् ।
श्रीमज्जीवसुराङ्घ्रिपाश्रययुषो भृङ्गान् समुन्मादयन्
सर्वस्यापि चमत्कृतिं व्रजजने चक्रे किमन्यत् परम् ।।

अर्थात् गोविन्ददासरूपी चन्दनवनमे विचरण करैत वसन्त पवन द्वारा व्रज-वनमे आनल गेल भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र सम्बन्धी कवितावलीक परिमल श्रीमान् जीवगोस्वामी रूप सुरतरुपर मड़राइत भ्रमरगणकेँ उन्मद करैत सभकेँ चमत्कृत कए देलक । अधिक की कहल जाए ।

उपर्युक्त घटनाक्रमसँ ई स्पष्ट भए जाइत अछि जे एक समय गोविन्ददास बंगालमे रहैत गीत रचैत छलाह आ' से वृन्दावन स्थित जीवगोस्वामीकेँ पठाओल जाइत छल । ई घटना चैतन्य महाप्रभु आ रूपगोस्वामीक वैकुण्ठवासक बहुत दिन बादक थिक, प्राय: १६०० ई०क आस-पासक । तहिआ गोविन्ददास ३० वर्षक छल होएताह । एहिसँ हिनक जन्म १५८० ई० क आस-पास सिद्ध होइत अछि आओर हिनक परिचयक प्रसंग मिथिलामे उठाओल गेल सभ मतमतान्तर समाप्त भए जाइत अछि ।

गोविन्ददासकेँ [illegible] आलोचक जयदेव, विद्यापति आ' चण्डीदासक [illegible] मानैत छथि आओर बहुधा हिनक तुलना विद्यापतिसँ करैत छथि। [illegible] वास्तवमे गोविन्ददास ओ विद्यापतिक बीच बहुत अन्तर अछि। दुनूक बीच कालक अन्तर कमसँ कम तीन सए वर्ष अछि। स्वभावतः ई अन्तर [illegible] गीतहुमे प्रतिफलित अछि। मैथिली साहित्यक इतिहासमे विद्यापति प्राचीन कालमे अबैत छथि तँ गोविन्ददास मध्यकालमे। भाषाक दृष्टिएँ ई विभाजन विशेष स्पष्ट अछि। विद्यापतिक भाषा तद्भव-बहुल ग्राम्य [illegible] अछि तँ गोविन्ददासक नागर आ पण्डिताम। आन-आन विषयमे जे दुनूक बीच अन्तर अछि तकर बड़ सुन्दर विवेचन आचार्य रमानाथ झा (प्राचीन गीत, पृ. २०१-२०३) कएने छथि। सूत्र रूपमे दुनूक तुलना एहि रूपेँ कएल जा सकैत अछि :

(१) विद्यापति लौकिक शृंगाररसक गीत लिखल तँ गोविन्ददास दिव्य शृंगार रसक (मधुर भावक) भजन।

(२) विद्यापतिमे प्रसादगुण प्रधान तँ गोविन्ददासमे पदलालित्य।

(३) विद्यापति सहज अभिव्यक्तिक प्रेमी तँ गोविन्ददास आलंकारिक अभिव्यक्तिक।

(४) विद्यापतिक दृष्टि बहुमुखी तँ गोविन्ददासक एकाग्र।

(५) विद्यापतिक परिवेश ग्रामीण तँ गोविन्ददासक नागर।

(६) विद्यापति भागवत-परम्पराक तँ गोविन्ददास चैतन्यमहाप्रभु प्रवर्तित अभिनव वैष्णव परम्पराक।

(७) विद्यापति शुद्ध मिथिलाक भाषा धएल तँ गोविन्ददास बंगालक मिश्रभाषा।

(८) विद्यापति काव्यशास्त्र (रीतिशास्त्र) सँ निरपेक्ष तँ गोविन्ददास वैष्णव काव्यशास्त्रक, विशेषतः **उज्ज्वलनीलमणिक** अनुगामी।

(९) **विद्यापतिमे** श्याम नहि तँ गोविन्ददासमे दूती नहि।

डॉ० अमरनाथ झा गोविन्ददास झाक गीतक अपन संकलनक नाम जे **शृङ्गारभजनगीतावली** रखलनि से अवश्य यथार्थ आ' अभिव्यंजक अछि।

एहि गीतसभ कें श्रृंगारगीत सेहो बूझू आ' भजन सेहो । किन्तु विचारणीय जे कतेक धरि भजन आ' कतेक धरि श्रृंगार ? रमानाथ झा स्पष्ट कए देने छथि जे एहि गीतसभमे भजनत्व केवल भनितामे अछि । गीतमे केवल श्रृंगार अछि । जकरा वस्तुत: भजन कही तेहन गीत हमरा जनैत एकेटा अछि—भजहु रे मन नन्दनन्दन । जँ राधाकृष्णक नाम जोड़नहि गीत भजन भए जाए तँ विद्यापतिक एहन गीतकें भजन किएक नहि कही ? तहिना गोविन्ददासहुक बहुत गीतमे राधा-कृष्ण नहि छथि, तखन ओकरा भजन कोना कहब ? जँ विद्यापतिक गीतक राधा-कृष्ण लौकिक प्रेमी-प्रेमिकाक प्रतीक मानल जाथि तँ गोविन्ददासहुक गीतमे से किएक नहि हो ? एहि शंकासभक समाधानार्थ हम इएह कहब जे एक सुन्दरी युवतीकें देखलासँ ककरहु सौन्दर्यानुभूति होइत छैक तँ ककरहु कामानुभूति, तहिना जाहि पाठककें अपन वासनाक अनुसार भक्तिभावना जगतनि तनिका हेतु एहन गीत भजन थिक आ' जनिका कामवासना जगतनि तनिका हेतु श्रृंगारगीत ।

अलंकार शब्द सुनितहि आजुक पाठकक नाक घोकचि जाइत छनि । परन्तु कहिओ एहन समय छल जखन अलंकारे कवित्वक कसौटी मानल जाइत छल, विशेषत: पण्डितलोकनि मध्य । गोविन्ददास जेहने रसिक कवि छलाह तेहने पण्डित कवि । की अर्थालंकार, की शब्दालंकार दूनू मे हिनक कौशल समान छल । शब्दालंकारमे हिनक प्रिय छल आद्यानुप्रास जाहिमे यथासाध्य प्रत्येक शब्द एके व्यंजनसँ आरम्भ होइत अछि । जेना

मदनमोहन मुरुति माधव मधुर मधुपुर तोहि ।

मुगुध मानिनि मान मरदन मिछहि मारग जोहि हत्या ।।

प्रस्तुत संग्रहमे एहन गीत दस गोट अछि (४७, ७३, ९४-१०३); **श्रृङ्गार भजन** मे करीब तीस गोट-अर्थात् दस प्रतिशत ।

ज्ञातव्य जे आद्यानुप्रासक एहन छटा संस्कृत साहित्यहुमे कदाचिते भेटत । इहो ज्ञातव्य जे आजुक मैथिलीक कवि काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क परम प्रिय शब्दलंकार यमक गोविन्ददासमे कतहु नहि अछि ।

अर्थालंकारमे गोविन्ददास सभसँ अधिक चमत्कार श्लेषालंकारसँ पोषित सांग रूपकमे देखाओल अछि । एकर एक उत्कृष्ट उदाहरण अछि गीत ५,

जाहिमे कृष्ण सोनार बनाओल गेलाह अछि आ' तकरा प्रमाणित करबाक हेतु सोनारक बाँसक फोँफी वंशी बनाओल गेल, कामदेव आगि भेलाह, मन भेल सोन इत्यादि । श्लेष थिक एक शब्द सँ दू अर्थ बुझाएब । एहिमे **वेणु** शब्दमे श्लेष अछि– एक वंशी आ दोसर फोँफी (फुकनी) । एहिना गीत १२ मे कृष्ण समुद्र बनाओल गेल छथि । एहिमे श्लेष अछि **घनरस** शब्दमे; एक अर्थ प्रगाढ़ प्रीति आ' दोसर जल । आजुक मैथिली साहित्यमे एहि अलंकारक प्रयोग पण्डित सुरेन्द्र झा आ' पण्डित काशीकान्त मिश्र खूब कएने छथि । पण्डित झा गंगाकेँ कल्पनाक बलेँ विश्वविद्यालय बनाओल तँ पण्डित मिश्र **राधाविरह** मे राधाकेँ मेहतरनी, धुनिआइन आ' की-की ने बनओने छथि । कवि जँ पण्डित होथि तँ एहन-एहन अलंकारक चमत्कार कोना नहि हो ।

विद्यापति सेहो पण्डित छलाह । परन्तु ई श्लेषबाला सांग रूपकक प्रयोग बड़ कम कएल । अर्थालंकारक प्रयोग सेहो संयमहिसँ कएल विद्यापतिक अलंकारमे सभसँ अधिक चमत्कारक अछि अर्थान्तरन्यास जाहिमे प्रासंगिक विशेष स्थिति देखाए तकर समर्थन प्रचलित सामान्य स्थितिसँ कएल जाइत अछि । जेना कामदेवक राज भेल तँ राधाक चरणक चंचलता आँखि पओलक आ' आँखिक स्थिरता चरण । कवि एहि स्थितिक समर्थन करैत छथि–**भिन-भिन राज भीन बेबहार** । एहिमे लोकोक्ति आ' अलंकार दूनूक **मणिकांचन** संयोग चमत्कारकेँ दूना क' दैत अछि । आश्चर्य जे गोविन्ददास एहि प्रकारक प्रयोग कतहु नहि कएल ।

गोविन्ददास पण्डितसँ अधिक रसिक छलाह । हिनक गीतमे करीब २५ प्रतिशत अलंकार-प्रधान अछि तँ ७५ प्रतिशत रस-प्रधान । ई कहब अत्युक्ति नहि होएत जे रसोन्द्रेकमे विद्यापति उनैस तँ गोविन्ददास बीस छथि ।

सभसँ कठिन अछि एहि गीतसभक भाषाक विवेचन । ई गीतसभ रचल गेल सम्भवत: विद्यापति-परम्पराक प्राचीन मैथिलीमे; गाओल गेल बंगालमे बंगलाभाषी सन्तसभक बीच तथा वृन्दावनमे बंगलाभाषी आ व्रजभाषाभाषी सन्तलोकनिक बीच ; लिपिबद्ध कए छापल गेल बंगलाभाषी द्वारा बंगलाक वर्तनीमे ; आओर अन्त मे प्रतिलिपि कएल गेल ओहि छापल पोथीसँ मैथिल पण्डित द्वारा यथा-सम्भव ओकरा पुन: विद्यापति-परम्पराक भाषाक रंग

चढ़बैत । एहना स्थिति मे कोना कहल जाए जे गोविन्ददास [illegible]
भाषामे आ' कहन भाषा मे कएलनि । [illegible]
अछि जे उपर्युक्त प्रक्रियाक अन्तमे [illegible]
स्वरूप देलनि से मैथिली थिक आ' एही [illegible]
रचना कएने होएताह ।

गोविन्दासक विषयमे आओग बहुत [illegible] ।
प्रस्तुत संस्करणमे जतबा सामग्री देल गेल अछि [illegible]
ततबहुसँ गोविन्ददासक गीतक सम्यक् [illegible] ।

एहि भजनावलीमे गीतक पाठ [illegible]
अनुरूप अछि । ताहिमे अर्थ संगतिक हेतु जे-जे अन्तर कएल गेल अछि से
पाठान्तर मे देखाए देल गेल अछि । किन्तु [illegible]
अनावश्यक वृद्धि छाड़ि देल गेल अछि ।

गोविन्दझा

२० श्रावण १९२८ शाके

१२ अक्टूबर २००६

विषय-क्रम



गोविन्ददास-भजनावली

वन्दना

[१]

कवि स्वयं अपनाकेँ उपदेश दैत छथि–

भजहु रे मन नन्द-नन्दन अभय चरणारविन्द ।
दुलह मानुष जनम सतसंग तरह ए भवसिन्धु ॥२॥
सीत आतप बात बरषा ए दिन-जामिनि जागि ।
विफल सेवन कृपन दुरजन चपल सुख सभ लागि ॥४॥
ए धन जौवन पुत्र परिजन एत कि अछि परतीति ।
कमल दल जल जिवन टलमल भजहु हरिपद नीति ॥६॥
श्रवण कीर्तन स्मरण वन्दन पाद-सेवन दास ।
ध्यान पूजन आत्मनिवेदन गोविन्ददास अभिलास ॥८॥

पाठान्तर–१. पुजन ध्यान ।

(१) हे मन, नन्दमहरक बेटा श्रीकृष्णक चरण-कमलक भजन करह, जे सांसारिक भय (भव-पीड़ा) केँ दूर कयनिहार थिक । (२) मनुष्य कोखिमे जन्म पायब दुर्लभ होइत अछि ; अतः मनुष्य-जन्मकेँ सफल करबाक हेतु सत्संग (ज्ञानी ओ सन्तलोकनिक संसर्ग) क' एहि संसाररूपी समुद्र (जन्म-मरणक बन्धन)केँ पार करह । (३-४) क्षणस्थायी सांसारिक सुख सभ प्राप्त करबाक हेतु दिनराति जागि-जागि क' शीत (जाड़), रौद-बसात ओ पानि-बुन्नीकँ सहैत एहि संसारमे कृपण (अनुदार) ओ दुष्ट लोकसभक आगु-पाछु करैत रहब निरर्थक थिक । (५) कारण जे धन, यौवन, पुत्र ओ संगी-साथीक कोनो विश्वास नहि; कखन नष्ट भ' जायत से के कहय । (६) अपनो जीवन तेहने चंचल (अस्थिर) होइत अछि जेहन पुरइनिक पात परक जल-बिन्दु । तेँ नित्य भगवान् श्रीकृष्णक चरण-कमलक वन्दना करह । (७-८) गोविन्ददास कृष्णक भक्तिक अभिलाषी छथि जे शास्त्रानुसार नवविध अछि- श्रवण (कथाश्रवण), कीर्तन (गुणचर्चा), स्मरण, वन्दन, पादसेवन, दास्य, ध्यान, पूजन ओ आत्मनिवेदन ॥१॥

टिप्पणी–भक्ति आ' वैराग्यक उद्‌गार । भाव पूर्णतः पारम्परिक । लक्षण गोविन्ददासक रचना-सन नहि । स्तुतिगीत होएबाक कारणेँ मंगलार्थ संकलनक आदिमे राखल ।

नित्यानन्दकृत *प्रेमविलास* मे कहल गेल अछि : गोविन्ददास (संकेत गोदा) पहिने शाक्त छलाह । रोगग्रस्त रहैत छलाह । श्रीनिवास आचार्यसँ वैष्णव धर्मक दीक्षा लेलनि कि रोगमुक्त भए गेलाह । मुहसँ स्वतः बहरएलनि भजहु रे मन......। भनितामे नवधा भक्ति गनाओल गेल अछि । एकर मूल श्रीमद्‌भागवत (७.५.२३) मे अछि :

श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम् ।
अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यम् आत्मनिवेदनम् ॥

गीतक आदिमे *भजहु* कहल गेल, भनितामे ताहि भजनक रीति गनाओल गेल । एहिमे सात गोट 'रीति' थिक, दुइ गोट दास्य आ सख्य 'भाव' थिक । सगुण उपासक इष्टदेवसँ सम्बन्ध जोड़ैत अछि आ' ताहि भावेँ हुनक आराधना करैत अछि । दास्य भावक उदाहरण थिकाह हनुमान्, सख्य भावक अर्जुन । गोविन्ददास सखी-भाव रखने छलाह, सेहो सख्य भावे भेल ।

[२]

कवि रामक स्तुति करैत छथि–

जय जय श्रील राम रघुनन्दन जनकसुता-रतिकन्त[१] ।
सुन नर बानर खचर निसाचर जसु गुन गाब अनन्त ॥२॥
नव दूर्वादल[२] श्यामल सुन्दर कञ्ज-नयन रनवीर ।
वाम धनुर्धर दहिन निसित सर जलधि कोटि गम्भीर ॥४॥
श्रीपद पादुक धर भरतानुज चामर छत्र निछोड़ि ।
शिव चतुरानन सनक सनन्दन शतमुख रहु कर जोड़ि ॥६॥
भक्ति आनन्दित मारुतनन्दन चरन-कमल करु सेवा ।
गोविन्ददास हृदय अबधारल[३] हरिनारायण देवा ॥८॥

पाठान्तर – १. कान्त । २. दूर्वा दल नव । ३. अवधानल ।

(१) रघुनन्दन (रघु आदि पूर्वजकेँ आनन्दित कयनिहार) श्रीयुत रामचन्द्रक जय हो, जय हो । रामचन्द्र केहन छथि ? महाराज जनकक पुत्री

जानकीरूपी रतिक स्वामी कामदेव-सन छथि, अर्थात् जेना रतिकें कामदेव प्रिय छथिन तहिना सीताक प्रिय छथि। (२) देवता-गण, मानव, वानर, गगनचारी गन्धर्वादि, तथा रात्रिसंचारी राक्षस आदि सभ एक स्वरें हिनक अनन्त गुणराशिक गान (कीर्तन) करैत छथि । (३) हिनक देहक रंग नवीन दूबि-सन श्याम अछि । हिनक नयन कमलक फूल-सन अछि। एतेक कोमल-कान्त रहितहुँ ई रणमे वीर छथि । (४) वाम (कान्ह) मे धनुष लेने छथि ओ दक्षिणमे (तरकसमे) निशित (नीक जेकाँ पिजाओल) बाण राशि छनि । गम्भीरतामे हिनक उपमा समुद्रसँ देल जा सकैत अछि ।(५) हिनक अनुज (छोट भाय) भरत राज्य-चिह्न चामर ओ छत्रक त्याग क' हिनक शुभकारी चरणक खड़ाओँक सेवन कयलनि । (६) महादेव, ब्रह्मा तथा सनक सनन्दन ओ शतमुख नामक ऋषिलोकनि हिनका समक्ष कर जोड़ने ठाढ़ रहैत छथि । (७) भक्तिवश आनन्दमग्न भ' पवनसूत हनुमान् हिनक चरण-कमलक सेवा करैत छथि । (८) गोविन्ददास एहि रामरूपधारी ईश्वर हरिनारायणकें हृदय मे धारण कएने छथि ।।2।।

टि०-वैष्णव सम्प्रदाय एकदेवोपासक होइत अछि । कहल गेल अछि :

हृषीकेश गोविन्द सेवा ना पूजिब देवी-देवा एइ त अनन्य भक्ति हय

तखन कृष्णक अनन्य भक्त गोविन्ददास रामक स्तुति कएल से कोना-दन लगैत अछि । भए सकैत अछि, ई आन कविक रचना हो । सम्भवतः ई गीत कंसनारायण (राज्यकाल १५१०-१५२५) केर मन्त्री गोविन्द ठाकुरक रचल हो, आ' भ्रमवश 'मन्ति गोविन्द' क स्थान मे 'गोविन्ददास' आबि गेल हो । भनिताक 'हरिनारायण देवा' राजाक नाम छल । (देखू **गोविन्ददास,** पृ. २८)। गीत शुद्ध भजन थिक, तें काव्यक कोनो लक्षण नहि । रूपक जनकसुता = रति अप्रासंगिक लगैत अछि ।

प्रीति

[३]

राधा अपन प्रेमदशा सखीसँ सुनबैत छथि–

हृदय मन्दिर मोर कान्ह समाओल प्रेम प्रहरि रहु जागि ।
गुरु-जन-गौरव चोर सरिस भेल दुरहि दूर रहु भागि ॥२॥
सजनी, एते दिने भाँगल धन्द ।
कान्ह-अनुराग-भुजंग गरासल कुल -दादुर मति मन्द ॥४॥
आपन चरित अपने नहि समुझिअ आन करैत होअ आन ।
भाव-भरल मन, पर-जन वाञ्छित, गृहपति सौतिनि-ठान ॥६॥
निन्दहु निन्द नयन नहि हेरिअ न जानिअ की भेल आँखि ।
एत परमाद कहहि नहि पारिअ गोविन्ददास एक साखि ॥८॥

पाठान्तर १.(क) तुकाओल (ख) घुमाओल । २. दूर रहुदुर ।
३. परिजन ।

(१) हमर हृदयरूपी घरमे कृष्ण पैसि गेल छथि । 'घुमाएल ' पाठक अनुसार ''सूतल छथि'' ई अर्थ होयत । प्रेमरूप प्रहरी जागरूक भेल कृष्णक पहरा क' रहल छनि जे भागि ने जाथि। (२) गुरुजनक प्रति जे गौरव (आदर-भाव) छल से चोर जकाँ दूरे भगल रहैत अछि अर्थात् गुरुजन आदरणीय नहि, प्रत्युत बलाय बुझाइत छथि । (३-४) ई बुझबासे आयल जे एना किएक होइत अछि जे कृष्णक प्रेमरूपी साप हमर कुल-रूपी दादुर (बेङ) के ँ ग्रसित क' लेलक अछि । (५) अपनहि जे करैत छी सेहो अपना नहि बुझबामे अबैत अछि; करय लगैत छी किछु आ' करा जाइत अछि आने। (६) मनमे भाव (अनुराग) भरल अछि ; आ' से अनुराग पर पुरुषक प्रति (कृष्णक प्रति) अछि । अपन गृहस्वामी जे छथि से सौतिनिक ओतय छथि । (७) निद्रहुमे (सपनहुमे) आँखि नीनके ँ नहि देखैत अछि । जानि नहि आँखिके ँ की भ' गेल अछि । (६) ततेक प्रमाद (गलती) भ' रहल अछि जे कहब कठिन ।

टि०–प्रेमक प्रथम अवस्था जे काव्यशास्त्रमे पूर्वराग कहल अछि । प्रमाद (चित्त-विभ्रम), अनिद्रा, अज्ञान ई सभ ओहि पूर्वरागक अनुभाव (लक्षण)

थिक । अलंकार सांग रूपक । कृष्ण (गुप्त प्रेमी जकाँ) राधाक मन-मन्दिरमे पैसलाह तँ प्रहरी जकाँ राधाक प्रेम जागि उठल । कृष्ण जे प्रेमरूपी साप पोसने छलाह से राधाकेँ डँसि लेलक । पाँच गोट रूपक एक ठाम, सभमे परस्पर सम्बन्ध, तेँ माला रूपक नहि, सांग रूपक । पदकल्पतरुमे *घुमाओल* पाठ अछि, मुदा *समाओल* (अर्थात् पैसल) पाठ समीचीन प्रतीत होइत अछि । अलंकार कविकल्पित (अभिनव) थिक तँ कामदशा-वर्णन रूढिबद्ध । अत: एकरा अलंकार-प्रधान कहब, रस-प्रधान नहि । भनितासँ प्रकट होइत अछि जे कवि राधा-कृष्णक प्रेम-लीला परोक्षहिसँ (सम्भवत: सखी-भावेँ) देखि-देखि मुग्ध होइत छथि, लीन नहि (देखू पुनश्च पृ. ?) ।

[४]

राधा अपन प्रेम-पराभव सखीकेँ सुनबैत छथि—

काजर-तिमिर-भमर[१] जसु[२] तनु-रुचि निबसए कुंज-कुटीर ।
बंसि-निसास मधुर बिख उगिरए[३], गति अति कुटिल सुधीर ॥ २॥
सजनी, कान्ह से बरजु भुजङ्ग ।
से मोर हृदय -चन्दन-रुह लागल भागल धरम-विहङ्ग ॥४॥
लोचन-कोर पड़ैते नव[४] नागरि रहए न पारए थीर ।
कुंचित अरुन अधर भरि पीबए कुजवति-बरत-समीर ॥ ६॥
एक अपरूप, नयन-बिस तनिकर[५] मेटए दंसन-दंस ।
बिस-औसध पुन[६] बिस अवधारल गोविन्ददास परसंस ॥८॥

पा०-१. भरम । २. जनु । ३. उदगर । ४. जब । ५. (क) ताकर ।
६. (ख) ओ विष औषध ।

(१) जनिक देहक रंग काजर, अन्धकार आ भ्रमर सन घोर कारी अछि, जे कुंजकुटीरमे रहैत छथि , (२) वंशीक नि:श्वासमे मधुर विष उगलैत छथि, जनिक गति (चालि) धीर ओ कुटिल छनि, अर्थात् जे मन्द-मन्द ऐँचैत चलैत छथि, ताहि सर्परूपी कृष्णकेँ बरजह अर्थात् मना करह जे हमरासँ हँटल रहथि । (४) से कृष्ण हमर हृदयरूपी चन्दन-वृक्षमे लागि गेलाह, तेँ ओतयसँ कुलधर्मरूपी पक्षी उड़ि गेल । (५) कटाक्षहुसँ ओहि कृष्णसर्पकेँ

[illegible] [illegible]) ओर [illegible] पकैत अछि । (३) [illegible] [illegible] पतिव्रत्यरूपी [illegible] अछि । (४) [illegible] । हुनक नयनसँ [illegible] हुनक [illegible] हुनक दर्शन [illegible] बालक [illegible] विषय [illegible] ॥ ४ ॥

टि०—[illegible] । सांग रूपक । [illegible] कृष्ण [illegible] । [illegible] कृष्ण [illegible] । [illegible] । अलंकारमे [illegible] ।

५]

कृष्णक प्रेमसँ व्याकुल राधा सखीकेँ अपन वेदना सुनबैत छथि—

बेनुक फूक धूक' मदनानल फुल-इन्धनहि पजारि' ।
परसि पानि दह ताहि सोहागल, स्रमजल बोरल' बारि ॥२॥
सजनी, कान्ह से छइल सोनार ।
मोर मन-काञ्चन अपन प्रेम-मनि जोरि पिन्धाएल हार ॥४॥
नव अनुराग-रङ्ग पुनु रञ्जल मूल न जानए कोइ ।
गुरु-जन-नयन-चोर पए छापए प्रान [धरिअ ते] गोइ ॥६॥
जे रस-आगरि बिदगधि नागरि रितहि तनिकर साथ ।
गोविन्ददास कह आन जनओले' होएत धनि' परमाद ॥८॥

पा०—१. बृक । २.(क) इन्धन मैं जारि, (क) इन्धन-मह जारि ।
३. दरश पाणि दुहु पर । ४. जोरल । ५. अन अन बचने ।
६. जाने ।

(१) ई कृष्ण सोनार थिक जे कामरूपी अग्निकेँ फुलरूपी जारनिसँ पजारि बेनुक (फोँफी वा बँसुरीक) फूकसँ धूकैत (प्रज्वलित करैत) अछि। (२) पाणिस्पर्शरूपी सोहागा छिटैत अछि आ घामक जलमे हमर

देखैत नवयुवतीलोकनि थीर नहि रहि पबैत छथि । (६) ओ अपन लाल ठोरकेँ कोँचिआक कुलकामिनीक पातिव्रत्यरूपी वायुकेँ पिबि लैत छथि । (७) एक बात मुदा अद्भुत अछि । हुनक नयनमे जे विष छनि ताहीसँ हुनक डँसबाक विष झड़ि जाइत छैक अर्थात् हुनक दर्शन होइतहिँ सभ वेदना दूर भ' जाइत छैक । (८)गोविन्ददास एहि बातक प्रशंसा करैत छथि जे विषस्य विषमौषधम् ।। ४ ।।

टि०—पूर्वरागक अलंकार-प्रधान वर्णन । सांग रूपक । संस्कृतमे कृष्ण सर्पक अर्थ थिक कालानाग । एहिमे कृष्ण सेह कालानाग बनाओल गेलाह अछि । सापक सभटा लक्षण घटैत छनि । ठोर कोँचिआए अधरपान करबाक दृश्यमे चित्रात्मकता । भनिताक भाव रूढ़िबद्ध । अलंकारमे नवीनता ।

५]

कृष्णक प्रेमसँ व्याकुल राधा सखीकेँ अपन वेदना सुनबैत छथि—

बेनुक फूक धूक[1] मदनानल कुल-इन्धनहि पजारि[2] ।
परसि पानि दुहु ताहि[3] सोहागल, स्रमजल बोरल[4] बारि ।।२।।
सजनी, कान्ह से छइल सोनार ।
मोर मन-काञ्चन अपन प्रेम-मनि जोरि पिन्धाएल हार ।।४।।
नव अनुराग-रङ्गे पुनु रञ्जल मूल न जानए कोइ ।
गुरु-जन-नयन-चोर पथ छापए प्रान [धरिअ ते] गोइ ।।६।।
जे रस-आगरि बिदगधि नागरि हेरितहि तनिकर साध ।
गोविन्ददास कह आन जनओले[5] होएत धनि[6] परमाद ।।८।।

पा०—१. बूक । २.(क) इन्धन मैं जारि, (क) इन्धन मह जारि ।
३. दरश पाणि दुहु पर । ४. जोरल । ५. अन अन बचने ।
६. जाने ।

(१) ई कृष्ण सोनार थिक जे कामरूपी अग्निकेँ कुलरूपी जारनिसँ पजारि वेणुक (फोँफी वा बँसुरीक) फूकसँ धूकैत (प्रज्वलित करैत) अछि । (२) पाणिस्पर्शरूपी सोहागा छिटैत अछि आ घामक जलमे हमर

मनरूपी सोनकेँ बौरैत अछि । (३) हे सखी, ओ कृष्ण रसिक सोनार थिक; (४) जे हमर मनरूपी सोनमे अपन प्रेमरूपी मणि गाँथि क' हमरा हार बनाय पहिरा देलक अछि । (५) ओहि हारकेँ ओ नव अनुरागरूपी रंगसँ रँगने अछि; आ' एहि हारक मूल्य केओ नहि जनैत अछि । (६) गुरुजनक नयनरूपी चोर बाटमे धपायल अछि एहि प्रेममणिक हारकेँ चोरयबा लय; तेँ ओकरा प्राणमे नुकाय रखने छी । (७) जे केओ रसज्ञा ओ विदग्ध ललना छथि, एकरा देखितहिँ तनिक साध (लिप्सा) जागि उठैत अछि । (८) गोविन्ददास कहैत छथि जे हे धनि, ई बात अनका कहब प्रमाद (गलती) होयत ॥ ५॥

टि०—पूर्वरागक आलंकारिक वर्णन । नव कल्पना । श्लेष अलंकारसँ पोषित सांग रूपक । कृष्ण एहिमे सोनार बनाओल गेल छथि । आओर अनेक रूपक एही रूपकक सम्पोषणमे बान्हल गेल अछि ।

[६]

राधा सखीसँ कहैत छथि—

दरसने नोर नयन-युग झाँप[1] ।
करइत कोर दुअओ भुज काँप[2] ॥ १॥
दुरि करु हे सखि, तसु[3] परसङ्ग ।
नामहि जकर अबस होअ अङ्ग ॥ २ ॥
चेतन न रहए चुम्बन-बेलि ।
के जान केहन रभस-रस-केलि ॥ ३ ॥
जे धनि मानि सुरत अधिदेवि ।
तनिकर चरन-कमल[4] मोर सेवि ॥ ४ ॥
कान्हक परस जतहु अनुभाव ।
अनुभवि आप, पर के समुझाव ॥ ५ ॥
तबहु जगत भरि घोसित एह ।
राधा-माधव अविचल नेह ॥ ६ ॥
ए किअ सरुप[5] किए परवाद[6] ।
गोविन्ददास न भाँगब विवाद ॥ ७ ॥

पा० – १. झाँपि । २. काँपि । ३. तुय । ४. कमल पर । ५. सुदृढ़ । ६. परिवाद ।

(१) कृष्णक दर्शन होइतहिँ प्रेमाश्रुसँ दुनू आँखि झँपा जाइछ । कोरमे करैत काल दुनू भुजा काँपय लगइछ । (२) हे सखी, हुनक गप्प हटाउ, जनिक नामे लैत अंग सभ कहलमे नहि रहैत अछि । (३) जखन चुम्बनेक बेरिमे चेतना चल जाइत अछि; बेसुधि भ' जाइत छी, तखन ई अनुभव कहाँसँ होयत जे रतिरंगक आनन्द केहन होइत छैक । (४) जे धन्य ललनालोकनि रतिकालमे अपनाकेँ वशमे (ज्ञानावस्थामे) राखि पबैत छथि तनिक चरण-कमलक हम पूजा करैत छिअनि । (५) कृष्णक स्पर्शसँ जतेक भाव जगैत छैक तकर अनुभव जखन पूरा-पूरा अपनहुँ नहि भ' सकैत छैक, तखन से दोसराकेँ बुझायब तँ असम्भवे । (६) तथापि लोकमे ई बात विख्यात अछि जे राधा ओ कृष्णक बीच प्रेम अविचल छनि । (७) ई बात सत्य थिक कि किंवदन्तीमात्र, एहि दुविधाकेँ गोविन्ददास नहि तोड़ताह ।।६।।

टि० –प्रेमक प्रबल वेगमे प्रेमी-प्रेमिकाक चैतन्य लुप्त भए जाइत छैक । रस प्रबल भेलापर भाषामे अनायास सरलता आ स्वाभाविकता आबि जाइत अछि; अलंकारक ने अवसर रहैत छैक ने प्रयोजन । एहि स्थितिक ई गीत उत्तम उदाहरण थिक । पूर्वक पाँचो गीतक ठीक विपरीत । सखी चाहैत छथि जे राधा अपन अनुभव सुनाबथि, किन्तु विवश छथि ।

[७]

राधा अपन पूर्वरागक अनुभव सखीकेँ सुनबैत छथि–

आधक आध आध दिठि-अंचल जब धरि पेखल कान ।
कत सत कोटि कुसुम-सरे जरजर रहत कि जाएत[1] परान ।। २ ।।
सजनी, जानल बिहि मोर बाम ।
दुहु लोचन भरि जे हरि हेरए तसु पद मोर परनाम ।। ४ ।।
'सुनयनि' कहैत कान्ह घन सामर मोहि बीजुरि सम लागि ।
'रसवति' करक[2] परस-रस भासत हमर हृदय जनि आगि ।। ६ ।।
'प्रेमवति' प्रेम लागि जिव तेजत चपल जिव न मोर साद ।
गोविन्ददास भन श्री [धारा] कान्ह[3] रसवति रस-मरजाद ।। ८ ।।

पा० – १.ज्यात । २. तकर । ३. श्री वल्लभ जन ।

(१) जहिआसँ चंचल दृष्टिक आधाक आधाक आध भागसँ (अर्थात् अझकहिँ) कृष्णकेँ देखलहुँ अछि, (२) तहिआसँ कामदेवक सय कोटि (एक अरब) कुसुमशरसँ प्राण जर्जर भ' गेल अछि, ओ आशंका अछि जे बाँचत कि नहि। (३) हे सखी, आब बुझबामे आयल जे विधाता हमर प्रतिकूल छथि। (४) परन्तु जे ललना कृष्णकेँ दुनू आँखिक पूर्ण दृष्टिसँ देखि लैत छथि तनिक हम चरणवन्दन करैत छी। (५) जखन घनश्याम कृष्ण हमरा 'सुनयनि' कहि सम्बोधन करैत छथि तखन हमरा लगैत अछि जेना बिजुरी लागि गेल हो; (६) जखन 'रसवती' कहि सम्बोधन करैत छथि तखन हुनक स्पर्शरससँ हमर हृदय आगिजेकाँ उद्भासित भ' उठैत अछि; (७) जखन 'प्रेमवती' कहि सम्बोधन करैत छथि, तखन हुनक प्रेमक हेतु प्राण छूटय लगैत अछि। चंचल प्राण हमर साध्य नहि रहि जाइत अछि। (८) गोविन्ददास कहैत छथि जे श्रीराधा ओ श्रीकृष्ण क्रमशः रसवती तथा रसक पराकाष्ठा (अपार राशि) थिकहि ॥ ७ ॥

टि०—गोविन्ददास कतहु-कतहु उक्तिकेँ प्रभावी बनएबाक प्रयासमे ततेक तीरैत छथि जे ओ अस्वाभाविक अतिरंजना भए जाइत अछि। विद्यापति जतए 'आधक आध' दिठि कहैत छथि ततए गोविन्ददास एक डेग बढ़ि आधक आधक आधहिसँ सन्तोष नहि कए ओकरहु अंचल (कोरे) टा छुवैत छथि। कामवाणक संख्या अरब धरि पहुँचाए दैत छथि। तहिँ कहल जाइत अछि जे विद्यापति कालिदास तँ गोविन्ददास श्रीहर्ष। परन्तु थिक ई गीत निःसन्देह उत्तम व्यंग्य काव्य। राधा करैत तँ छथि अपन निन्दा आ आनक प्रशंसा, परन्तु व्यंग्य अर्थ तकर उनटा प्रतीत होइत अछि—आन की जानत जे प्रेम की थिक।

[८]

राधा अपन प्रेमक अनुभव सखीसँ सुनबैत छथि—

पहिलहि कूल तूल-सम ऊड़ल जाकर बेनुक फूके।
धरम करम मति भरम-सरिस भेल नारी गिरिसम दुःखे ॥ २ ॥
सजनी, किअ हम करब उपाय।

हेरइत मे कान्ह अपन-अपन तन काहि करब[1] अन्तराय ॥ ४॥

निन्दहु निन्द नयन नहि हेरिअ[2] हानल फुलसर बान ।

जत[3] परमाद कहए नहि परिअ गोविन्ददास परमान ॥ ६ ॥

पा०–१. करत । २. नयनहि निन्दहु निन्द नहि हेरह । ३. एत ।

(१) जनिक वंशीक फूकसँ हमर कुल-मर्यादा धूनल तूर जेकाँ उड़ि गेल; (२) धर्म, कर्म ओ विवेक सभ भ्रम जेकाँ बुझाय लागल–हाय, नारीकेँ पर्वतसमान दु:ख उठबय पड़ैत छैक; (३) सखी, हम कोन उपाय करू–(४) ताहि कृष्णकेँ देखैत शरीर अपन नहि रहैत अछि । कथीसँ अढ़ करब । (५) स्वप्नहुमे आँखिमे नीन नहि होइत अछि । कामदेव पुष्पबाणक प्रहार क' देलनि । (६) अवर्णनीय प्रमाद भ' रहल अछि, आ तकर साक्षी छथि गोविन्ददास ॥ ८ ॥

टि०– कोनो नव भाव नहि । एके भावभूमि पर भिन्न-भिन्न छटामे नब-नब गीत रचब अधिक रचना कएनिहारमे देखल जाइत अछि । कुलमर्यादा नष्ट होएबाक भय, भ्रान्ति (प्रमाद) आदि पूर्वरागक सामान्य अनुभाव थिक । हँ, लज्जावश अपन शरीरकेँ अओढ़ करब एहि गीतमे नब बात अछि । निन्दहु निन्द एकर अर्थ पदकल्पतरुमे एहि तरहेँ कएल गेल अछि–"नयन के निन्दा करि (सेइ) अभिमाने आमार नयन निद्राकेंओ परित्याग करियाछे ।"

[९]

राधा सखी सँ कहैत छथि–

सुनइत अनुखन जसु नव गुन-गन स्रवन नयन भए गेला ।

दरसने तनिकर एहन नोर झर स्रवन नयन सम भेला ॥ २ ॥

हरि हरि, की भेल दारुन काज ।

न जानिअ के बिहि विघिन बढ़ाओल कान्ह समागम माझ ॥ ४॥

जा सञो[1] केलि-कला-रस-लाल लाख मनोरथ कएल ।

ताकर पानि-परसे तनु परबस तबहि अचेतन भेल ॥ ६ ॥

हिअ घनसार-हार नहि पहिरल जाक परस-रस-आसे ।
ताक बिछेदे जीव[२] नहि निकसए कहतहिँ गोविन्ददासे ॥ ८ ॥

पा०–१. जौं शय । २. तनिक वियोगैँ जिउ ।

(१) हे सखी, सतत कृष्णक नव-नव गुणसभ सुनैत-सुनैत हमर श्रवण अर्थात् कान (कृष्णक रूप देखबाक अभिलाषासँ) नयन बनि गेल; (२) आ ओम्हर हमर नयन कृष्णकेँ देखैत देरी ततेक आनन्दाश्रु बहब' लागल जेना ओ नयन स्रवण (दू अर्थ, एक पक्षमे झरना ओ दोसर पक्षमे श्रवण अर्थात् कान) भ' गेल । (३) अहा, की अद्भुत बात भ' गेल । (४) जानि नहि, के विधाता कृष्णक मिलनमे ई दारुण विघ्न उपस्थित क' देलक । (५-६) जनिका संग केलि-विलास करबाक लालसासँ मनमे नाना प्रकारक मनोरथ पोसने छलहुँ, तनिकर हाथक स्पर्श होइतहिँ, शरीर परवश ओ चित्त चेतनाशून्य भ' गेल । (७-८) जनिक स्पर्शरसक आशासँ गरामे कर्पूरोक हार नहि पहिरलहुँ (जाहिसँ आलिंगनमे व्यवधान नहि हो), तनिक विरह भेलहु पर प्राण नहि निकलि रहल अछि । गोविन्ददास कहैत छथि ॥ ९ ॥

टि०-एहिमे चमत्कार आनल गेल अछि *परिणाम* नामक अलंकार द्वारा । एक वस्तुक दोसर रूपमे परिणत भए जाएब थिक परिणामालंकार । एहिमे बदलबाक कारण कवि-कल्पित रहैत अछि आ बदलब कवि-प्रौढ़ोक्ति-सिद्ध (अयथार्थ) । कर्पूरक हार ताहि दिन पहिरल जाइत छल । हारक व्यवधान असह्य होएब कवितामे बड़ प्रसिद्ध अछि–*हारो नारोपित: कण्ठे मया विश्लेषभीरुणा ।*

[१०]

राधा सखी केँ अपन प्रेमानुभव सुनबैत छथि–

नव-नव गुन-गन स्रवन-रसायन नयन-रसायन अंग ।
रभस-सम्भाषन हृदय-रसायन परस-रसायन संग ॥ २ ॥
ए सखि, रसमय अन्तर यार[१] ।
स्याम सुनागर गुन-गन आगर के धनि बिसरए पार ॥ ४ ॥
गुरुजन गरजन[२] गृहपति-तरजन[३] कुलवति कुवचन भास ।

जत परबाद[4] सबहि पुनु मेटय मधुर मुरलि-आसोआस ॥ ६ ॥
कि लए करब कुल दिवस-दीप तुल प्रेम-पवन घनडोल ।
गोविन्ददास जतन कए राखह लाजक जाल अगोल ॥ ८ ॥

पा० १. हार । २. गंजन । ३. गरजन । ४. कत परमाद ।

(१) हे सखी, कृष्णक जे अनुक्षण नव-नव गुण सुनैत छी से हमरा कानक हेतु रसायन (रसक भंडार, अनुपम सुखकर) होइत अछि; हुनक अंग (रूप) हमरा आँखिक हेतु रसायनक काज करैत अछि । (२) हुनक विलासपूर्ण आलाप हमरा हृदयक हेतु रसायन होइत अछि; ओ हुनक संगति हमर स्पर्शेन्द्रियक हेतु रसायन होइत अछि । (३-४) हे सखी, जनिक (**यार** बंगला, **यस्य**) अन्तर एहि प्रकारेँ रससँ भरल छनि ताहि गुण-गण-पूर्ण श्यामसुनागरकेँ के कामिनी बिसरि सकैत छथि । (५) गुरुजन गरजन करैत छथि, गृहपति तर्जन करैत छथि आ कुलललना लोकनि कुवचन कहैत छथि । (६) जे किछु आनक दुर्वचन (परवाद, 'परमाद' पाठसँ अर्थ बैसैत नहि अछि) सुनैत छी से सभ कृष्णक मधुर मुरलीक आश्वास भेटितहिँ बिसरि जाइत छी । (७) कुलमर्यादा तहिना निरर्थक बुझाइत अछि जेना दिनक दीप; ताहिपर प्रेमक बिहाड़ि जोरसँ बहैत अछि, तखन एहि दीपक कोन गति होयत । (८) गोविन्ददास कहैत छथि, प्रेमक दीपकेँ लाजरूपी जाल (आवरण)सँ अगोरि (रक्षित क') यत्नपूर्वक बचाबह ॥ १० ॥

टि०—पूर्वराग प्रगाढ़ भए अनुरागक अवस्थामे आएल । मिलनक आतुर लालसा नहि, सुखद अनुभव मात्र । वर्जनक परबाहि नहि । कवि उपदेश दैत छथि—प्रेमक दीपकेँ लाजक आवरण दए बचाबह; गुरुजनक आगाँ लाज-संकोच राखह जे गुप्त प्रेम प्रकट नहि हो । रस-प्रधान गीत, सरल, प्रसादगुणसँ भरल ।

[११]

राधा कृष्णक रूपवर्णन सखीकेँ सुनबैत छथि—

चूड़क-चूड़ मयूर-शिखण्डक, मंडित मालति-माले ।
सौरभ उनमत भ्रमरि भ्रमर कत चौदिशि करए झंकारे ॥ २ ॥
सजनी, के कह काम अनंग ।
केलि कदम्बतर से रति-नागर पेखल नटवर-भंग ॥ ४ ॥

कतहु विषमशर नयन-तूण भर संचर भौंह कमान ।
नागर-नागरि मरम मह[1] हानए लखए न पारए आन ॥६॥
श्रुति-मुल चंचल मणिमय कुण्डल दोलित मकराकार ।
गोविन्ददास अतए अनुमानल मदनमोहन अवतार ॥८॥

पा०-१. मरमँह ।

(१) चूलक शीर्षपर मयूरक पाँखि खोसल छनि, ओ चूल चतुर्दिक मालती-मालासँ भूषित छनि । (२) सोरभसँ पागल भेल अनेक भ्रमर ओ भ्रमरी चतुर्दिश गुंजार कयने अछि । हे सखी, के कहत जे कामदेव अनंग (अंगहीन) छथि । ओ तँ कृष्णरूपमे अंगधारी भए गेल छथि । (४) हम रतिनागर (रतिक पति, अर्थान्तरमे कामविलासमे पटु)केँ नटवर कृष्णक व्रेशमे केलि-कदम्बक गाछ तर साक्षात् देखल अछि । (५) नेत्ररूपी तरंकसमे कतेक रास कटाक्षरूपी तेज तीर भरने छथि ओ तकरा भौंहरूपी धनुषपर छोड़ैत रहैत छथि । (६) रसिक नर-नारी सभकेँ मर्म तका मारैत छथि । आ' हुनक कटाक्षक ई प्रहार केओ आन देखि नहि सकैत अछि (७) कानमे चंचल मणिमय मकराकृति कुण्डल झुलैत छनि । । (ज्ञातव्य जे कामदेव 'मकरध्वज' कहबैत छथि) (८) एहिसँ गोविन्ददास अनुभव करैत छथि जे कामदेव कृष्णरूपमे अवतार लेल अछि ।

टि०-अलंकारप्रधान । श्लेषसँ संपोषित सांग रूपक । कामदेवक रूपमे कृष्णक वर्णन । हुनक सभ लक्षण तेहन जे कामदेवहुमे घटैत अछि । अनंग शब्द एहि सांग रूपकमे व्यतिरेक अलंकार अनैत अछि : कामदेव तँ अंगहीन छथि, परन्तु कृष्णरूपी कामदेव अंगहीन नहि छथि । अनंग शब्दमे श्लेष । एहिना रति शब्दमे श्लेष । कामदेव मकरध्वज छथि । हुनक पताकाक प्रतीक थिक मकर (गोहि) । से प्रतीक कृष्णहुक कर्णालंकारमे अछि । छुच्छे अलंकारे अलंकार । मिलाउ गीत सं. ३, ४, ५, १२, १३, ४१, ११६ ।

[१२]

सखी कृष्णक वर्णन राधाकेँ सुनबैत छथि-

घन-रसमय तन अन्तर गहीन । निमगन[1] कतहु रमनि-मन-मीन ॥१॥
स्त्रवन मकर, गिम कम्बु बिराज । हिअमह लखमि-मिलित मनिराज ॥२॥

हे सखि श्याम -सिन्धु कए चोरि[२] । कैसे धएल कुच-कनय-कटोरि[३] ॥३॥
जसु मुख चान्द, सुधा सम हास । गरलहि भरल नयन परगास ॥४॥
अधर पवार[४], दसन मनि-मोति[५] । रोचन-तिलक मैनाकक जोति ॥५॥
सुर-तरु-कुसुम-सुगन्ध निवास । चूड़ा पीछ जलद-धनु-भास[६] ॥६॥
गति गजराज, चरन अरविन्द । नख-मनि-निछनि दास गोविन्द ॥७॥

पा०–निगमन । २. चोर । ३. कटोर । ४. पडीर । ५. जोति । ६. चूड़ा जलद पिंज जनु मास ।

(१) जनिक अंतर (हृदय) गहन रस (जल ओ शृंगारभाव)सँ भरल ओ गहीँर छनि; जाहिमे असंख्य सुन्दरीक मनरूपी माछ सभ निमग्न अछि; (२) कानमे मकर (गोहि ओ मकराकृति भूषण) छनि; ग्रीवा शंखसदृश छनि (वा शंख मानू ग्रीवा थिकनि); हृदयमे लक्ष्मी (वा शोभा)सँ युक्त उत्तम मणि (कौस्तुभ) लटकल छनि; (३) एहन श्याम-सिन्धुकेँ (कृष्णरूपी समुद्रकेँ) तोँ अपन स्तनरूपी सोनाक कटोरामे कोना रखने छह ? (४) जनिक चन्द्ररूपी मुख हासरूपी अमृतसँ भरल छनि ओ आँखि प्रकटत: विषसँ भरल छनि; (५) अधर प्रवालरूप छनि ओ दाँत मणिमुक्तारूप; कपारपर जे गोरोचनक तिलक (पीतवर्ण) छनि से मानू मैनाक पर्वतक ज्योति (वड़वानल) थिक; (६) शरीरमे जे सौरभ छनि से थिक पारिजातक फूल। माथपरक चूड़ामे जे मयूरपंख खोँसल छनि से मानू इन्द्रधनुष थिक । (७) हिनक गति गजराज (ऐरावत हाथीक) सदृश छनि ओ चरण मानू अरविन्द पुष्प थिकनि। गोविन्ददास हिनक नखमणिपर निछाउरि भेल छथि ॥१२॥

टि०– एहिमे श्लेषसँ अनुप्राणित साङ्ग रूपक अछि । कृष्णमे ताहि-ताहि वस्तुक अस्तित्व उपमा, श्लेष आदि द्वारा प्रतिपादित अछि जे समुद्रमे होइत अछि, जेना गहीर अन्तर रससँ भरल, माछ, गोहि, शंख, लक्ष्मी, कौस्तुभ मणि, सुधा, गरल, प्रवाल, मणि, वड़वानल, पारिजात, ऐरावत ओ कमल । ई मानू अलंकारक भंडार थिक । सांग रूपक, अंगरूपमे विभावना, विशेषोक्ति, अतिशयोक्ति, विरोधाभास आदि अनेक अलंकार हुलकी दैत अछि । तहिना ध्वनि (व्यंग्यार्थ) सेहो भरल अछि । कृष्णरूप सागरकेँ (जतए अनेकानेक रमणी भरल अछि) स्तनरूपी कटोरीमे अँटाए लेब (एकनिष्ठ प्रेमी बनाए लेब) विषमालंकार-ध्वनि भेल ।

[१३]

सखी राधाक सौभाग्य वर्णन करैत छथि—

जे गिरि गोचर विपिनहि संचर कृश कटि कर अवगाह ।
चन्द्रक चारु छटा परिमंडित अरुन कुटिल दिठि चाह ॥२॥
सुन्दरि, भाग तोर हरिन-नयानि ।
से चचंल हरि हिअ[१] पंजर धरि धएलह कइसे सयानि ॥४॥
कत वर दन्ति करहि कर बारैत दसनहि गंड[२] बिदार ।
बल कए खरतर नखर सिखर सञो मोतिम बनहि[३] बिथार ॥६॥
अधर-सुधा दए पुनहि जिआबए पुनु निरमद कए तेज ।
गोविन्ददास भन तनिक सयन पुन अहनिस किसलय-सेज ॥८॥

पा०—१. प्रिय । २. दंड । ३. बनय ।

(१) जे पर्वतमे, गोचर भूमिमे ओ वनमे घूमैत रहैत छथि, जे पातर डाँड़ लचकबैत विचरण करैत रहैत छथि, जे मयूरक पाँखिक चारु छटा छविसँ भूषित छथि, वा (सिंहक पक्षमे) मयूरक पाँखि-सदृश छटा (अर्थात् सटा)सँ शोभायमान छथि, तथा जे लाल-लाल वक्र दृष्टिसँ तकैत रहैत छथि, (३-४) ताहि चंचल हरिकेँ (कृष्णकेँ ओ पक्षान्तरमे सिंहकेँ) प्रेमक पिजरामे बझाय कोना रखलह, हे चतुर सखी । हे मृगनयनी, तोँ भागमन्ति छह । (५) ई हरि केहन उत्पाती अछि से देखह । (५) अनेक श्रेष्ठ दन्तिकर (हाथीक सूँढ़)केँ (कृष्णक पक्षमे, हाथीक सूढ़ सदृश नायिकाक जाँघकेँ) अपन करसँ रोकैत ओकर गण्ड (हाथीक मस्तक वा नायिकाक गाल)केँ दाँतसँ फाड़ि दैत अछि । (६) नायिकाक शिखर(चूड़)सँ (हाथीक पक्षमे ओकर मस्तकसँ) सबल तीव्रतम नख-प्रहार क' मोति भूमिमे छिड़िआ दैत अछि । (७) अधरामृत पिआय पुनः जिआ दैत अछि, आ पुनः मदहीन बना तेजि दैत अछि । (८) गोविन्ददास कहैत छथि जे ओ सतत किसलयक सेज (विरहशयन) ध' लैत छथि ॥१३॥

टि०—एहिमे कृष्ण कल्पनाक बलेँ सिंह बनाओल गेलाह अछि, आ' तकरा सिद्ध करबाक हेतु कल्पनाक बलेँ अनेक तर्क देल गेल अछि—एहन-एहन विशेषता जे कृष्ण आ सिंह दूनूमे लागू हो । किछु विशेषतामे श्लेषक सहारा

लेल गेल अछि । जेना कटि केर एक अर्थ डाँड़ तँ दोसर अर्थ पर्वतक उपत्यका । एहिना छटा, हरि, बरदन्ति, गण्ड दू-दू अर्थ दैत अछि । तदनुसार एहिमे श्लेषसँ पोषित सांग रूपक अलंकार भेल । एकर रस पक्ष दुर्बल अछि। कविक कल्पना-शक्तिए चमत्कार दैत अछि ।

[१४]

कृष्णसँ प्रेम कए पराभवमे पड़लि राधाकेँ सखी कहैत छनि–

सुनइते कान्ह-मुरलिरव-माधुरि स्रवन निबारल तोहि[१] ।
हेरइते रूप नयन-जुग झाँपल तबे रोखलि गोरि मोहि[२] ।।२।।
सुन्दरि, तहिखन कहल मञे तोइ[३] ।
भरमहु तासञो नेह बढ़ओले जनम गमओबह रोइ ।।४।।
बिनु गुन परखि परक रूप लालस कहि सोपल निज देह ।
दिन-दिन खोएबह ई[४] रूप-लाबनि जिबइते भेल सन्देह ।।६।।
जञो तोहेँ हृदय प्रेम-तरु रोपलह श्याम-दरस-रस-आसे ।
से निज नयन-नीर पुन सीँचह कहतहँ गोविन्ददासे ।।८।।

पा०–१. तोरि । २. मोहि रोषलि गोरि । ३. कहल न तोय ४. इह ।

(१) जखन तोँ कृष्णक मधुर मुरली-ध्वनि सुनैत रहह तखन हम तोहर कान मूनि देने रहिअहु, (२) जखन तोँ कृष्णक रूप हेरैत रहह तखन हम तोहर दुनू आँखि झाँपि देने रहिअहु आ' ताहि समयमे तोँ हमरापर रुष्ट भेलि रहह । (३) हे सुन्दरी, हम तँ तखनहि बुझा देने रहिअहु जे (४) जँ भ्रमहुमे तनिकासँ प्रीति बढ़यबह तँ कानि-कानि क' जीवन बितयबह । (५) गुण-परीक्षण बिनु कयनहि आनक रूपक लालसा (लोभ)सँ हुनका अपन देह किएक समर्पित क' देलह ? (६) ई रूप-सौन्दर्य दिन-दिन घटले जयतहु, आ तकरा बादसँ प्राणहुपर संकट उपस्थित होयतहु । (७) हे सखी, जँ तोँ अपना हृदयमे प्रेमक वृक्ष रोपलह अछि एहि आशासँ जे श्यामघन रसवृष्टि करबे करत (८) तँ तकर प्रतीक्षामे पहिने तोँ अपने आँखिक जलसँ ओकरा पटाबह–गोविन्ददासक इएह कहब छनि ।।१४।।

टि०-आचार्य रमानाथ झा कहैत छथि जे गोविन्ददासक गीतमे प्रसाद गुण नहि अछि । प्रस्तुत गीत आ' एहन आनो बहुत गीत हुनक एहि धारणाक खण्डन करैत अछि । सहज-स्वाभाविक आ रससँ भरल ई गीत लगैत अछि जेना विद्यापतिक हो । कृष्णसँ प्रेम करबाक अर्थ थिक जीवन भरि विरह भोगैत रहब । विरहे थिक प्रेम-मार्गक साधना ।

[१५]

सखी राधाक गुप्त प्रेमक उद्घाटन हुनकहि सुनबैत छथिन-

चौदिस चकित नयन घन हेरसि झाँपसि झाँपल अंग ।
वचनक भाँति' बुझए नहि पारिअ कहाँ सिखल एहो रंग ॥२॥
सुन्दरि, कि कएल परिजन बंचि ।
श्याम-सुनागर गुपुत प्रेम-धन राखल[२] हिअमह संचि ॥४॥
ई तुअ हास मरम परकासए प्रति अंग-भंगिम साखि ।
गाँठिक हेम वदनमह झलकए एत दिन पेखल आँखि ॥६॥
गहन मनोरथ पन्थ निहारसि जीतलि मनमथ राज ।
गोविन्ददास कहए धनि बिरमह मौनहि बूझल काज ॥८॥

पा०-१. वचनक भाँति । २. मानल ।

(1) तोँ अकचकायल नजरिसँ बारंबार चारू कात तकैत रहैत छह । झँपलो अंग (स्तन) केँ पुनि-पुनि झपैत रहैत छह । (२) तोहर वचनक भंगिमा हमंरा बुझबामे नहि अबैत अछि । ई रंग, ई भंगिमा कतय सिखलह ? (३) हे सुन्दरी, तोँ परिवारक लोकके धोखा द' कोन कर्म कयलह अछि (से हम बूझि गेलिअहु) । (४) गुप्त-प्रेमी रसिकवर श्यामकेँ तोँ अपना हृदयमे साँचि क' (जुगुता क') रखने छह । (५) मुदा से गुप्त रहनिहार नहि । तोहर मुख परक बिहुँसी तोहर मर्म (भीतरी बात)केँ प्रकट क' रहल छहु । तोरह प्रत्येक अंगभंगिमा (देहक चालि) एहि बातक साक्षी अछि । (६) गेँठमे सोन बान्हल छैक (अन्तरमे प्रेमधन छैक) से बात मुहे देखलासँ प्रकट भ' जाइत छैक । दिन-दिनसँ ई बात देखैत अयलहुँ अछि । (७) तीव्र अभिलाषासँ उत्कण्ठापूर्वक ककरो बाट तकैत रहैत छह । तोरापर राजा कामदेवक विजय भ' गेल अछि अर्थात् तोँ कामदेवक बश भ' गेलि छह ।

(८) गोविन्ददास कहैत छथि, हे सुन्दरी, कनेक बिलमह (हमरहुसँ गप्प करह)। तोँ कोन फेरमे छह से तँ तोहर मौनावलम्बनहिसँ बुझा गेल ॥१५॥

टि०—चकित दृष्टि, अंग-गोपन, मन्द दास मुग्धा नायिकाक लक्षण थिक। विद्यापतिसँ मिलाउ *चरन चपल गति लोचन पाब; आबे अनुखन देल आँचर हाथ;* इत्यादि। पर-पुरुष-प्रेम, तेँ गोपन। हृदयक भाव मुह पर झलकैत अछि ई प्रसिद्ध बात गाँठक हेम कहि चमत्कारी बनाओल गेल अछि। प्रेमरूप हेम नहि कहि सोझे गाँठक हेम कहब अतिशयोक्ति अलंकार थिक। राधा प्रतिवाद नहि कए सभ सुनि लैत छथि तेँ सभ आरोप सत्य—गोविन्ददास इएह फैसला करैत छथि, परन्तु गाँठिक हेम आ मौनहि बूझल किछु नवीनता आनि देलक अछि।

[१६]

सखी कृष्णक प्रेममे निमग्न राधासँ कहैत छथि—

निससि निहारसि फुटल कदम्ब। कतरल वदन सघन अवलम्ब ॥१॥
छन तन मोड़सि कए कत भंग। अविरल पुलक-मुकुल तरु-अङ्ग ॥२॥
ए धनि, मोहि न करु अरु[१] छन्द। जानल, भेटल तोहि श्यामल चन्द ॥३॥
भाव कि गोपसि, गोपल न रहई। मरमक वेदन वदन सब कहई ॥४॥
जतने निबारसि नयनक नोर। गदगद वचन कहसि अधबोल ॥५॥
आन थल[२] अंग नयन छल पन्थ। सघन गतागति करसि एकन्त ॥६॥
दुर रहु गुरुजन गौरव लाज। गोविन्ददास कह पड़ल अकाज ॥७॥

पा०—१. अरु शब्द अवधीक थिक। अन्यत्र नहि भेटैत अछि। २.छल।

(१) हे सखी, तोँ जोर-जोरसँ निसास लैत छह। फुलायल कदम्बक गाछ दिस बेरि-बरि तकैत छह। (२) अलसाइलि जेकाँ हाथपर मूड़ी टेकने छह। (२) वारंवार अनेक भंगिमा करैत अड़ैंठीमोड़ करैत छह। तोहर अंगरूपी वृक्षमे पुलकरूपी कली घनगर भ' व्याप्त छहु, अर्थात् देह वारंवार पुलकित होइत छहु। (३) हे सखी, हमरासँ आओर छल नहि करह। हमरा बुझबामे आबि गेल जे तोरा कृष्णचन्द्रसँ प्रेम भेलहु अछि। (४) तोँ अपन हृदयक भावकेँ नुकबैत किएक छह। ओ कि किन्नहु नुकायल रहि सकैत

अछि । मर्ममे (अन्तरमे) जे वेदना (भावना) रहैत छैक से मुहे कहि दैत छैक, अर्थात् चेहरे देखि बुझा जाइत छैक । (५) आँखिमे अबैत नोरकेँ यत्नपूर्वक रोकैत छह । टूटल-फूटल भाषामे गद्गद स्वरेँ बजैत छह । (६) अंग कतहु रहैत छहु, कोनो आन काजमे मग्न रहैत छहु, मुदा आँखि बेरि-बेरि बाट दिस दौड़ैत छहु । निर्जन स्थानमे व्यर्थ खन एतय खन ओतय करैत रहैत छह—अनेर बौआइत रहैत छह । (७) गुरुजनक प्रति गुरुत्वभाव (आदर) ओ लाज दूर भ' गेलहु । गोविन्ददास कहैत छथि जे अनर्थ भेल ।।१६।।

टि०-प्रेमाकुल राधाक दशाक सुन्दर, सरल आ स्वाभाविक वर्णन । रीतिबद्ध । काव्यशास्त्रमे वर्णित लक्षणक अनुरूप । रस प्रधान । अलंकार अल्पे-तरु = अंग आ पुलक = मुकुल रूपक । गुरुजनक भयकेँ गोविन्ददास प्रेममार्गक स्वाभाविक संकट कहैत छथि ।

[१७]

सखी आलंकारिक भाषामे राधाक संगमोत्तर दशाक वर्णन करैत छथि—

कुटिल कटाख-विशिख घन-बरखने दुर करु विविध तरंग ।
निज तनु-औषध-सरस-रस-लेप[१] थकित करु अंग ।।२।।
सुन्दरि, धनि तोर[२] पिताम्बर मेल[३] ।
एकहि[४] हिलोर श्याम-रस-सागर सबहुँ सार हरि लेल ।।४।।
दुरवगाह[५] अन्तर महामन्थर[६] मदन कमठ अवगाह ।
उच कुच मन्दर[७] हार-भुजगवर भेल[८] मथन-निरबाह ।।६।।
अधर-सुधा पिय-प्रेम लखमि हिय बाहर नख-पद चन्द ।
प्रीति अनुभाव-रतन परिपूरल गोविन्ददास रहु धन्द[९] ।।८।।

पा०-१. दहि लेश । २. तोह । ३. भेल । ४. एक । ५. दूर अवगाह । ६. महामन्तर । ७. मन्थर । ८. मेलि । ९. कन्द ।

(१) तोँ कटाक्ष-रूपी बाणक जोरदार वर्षा क' कृष्णरूपी समुद्रक विविध मनरूपी (अनेक रमणीक प्रति प्रेमरूपी) तरंगकेँ शान्त कयलह (ज्ञातव्य जे भारी वर्षा भेलापर समुद्रमे जोआरि शान्त भ' जाइत छैक) । (२) तोँ अपन शरीररूपी औषधक स्पर्शसुखकारी रसक लेप कृष्णक देहमे

लगा क' हुनक अंगकेँ शिथिल अथात् विह्वल बना देलह अछि । (३) हे सुन्दरी, कृष्णसँ तोरह प्रेम धन्य थिक । (४) कृष्ण-प्रेम-रूपी समुद्रमे जे किछु सार (उत्कृष्ट वस्तु सभ) छैक से सभ तोँ एके हिलकोर (प्रेम-तरंगमे) हरि लेलह अर्थात् कृष्णकेँ सर्वतोभावेन वश क' लेलह । (५) ओहि समुद्रक दुरवगाह (अथाह, अगाध) अन्तरमे महामन्थर मदनरूपी कच्छप प्रवेश कयलक । (६) तोहर उन्नत स्तनद्वय मन्दर पर्वत भेल ओ तोहर हार शेषनाग बनल–आ एहि तरहेँ कामदेवरूपी काछुपर कुचरूपी मन्दरपर्वत राखि हार-रूपी नागपाशसँ कृष्णक प्रीतिरूपी लक्ष्मी जे बहरयलीह से हृदयमे रखलह आ नखक्षतरूपी चन्द्रमा हृदयक बाहर रखलह । (८) प्रीतिक (शृंगार रसक) जे विविध अनुभावसभ होइत अछि से मानू एहि समुद्र-मथनसँ बहरायल विविध रत्न थिक । गोविन्ददास विस्मित छथि ।।१७।।

टि०–अलंकारप्रधान गीत । सांग रूपक द्वारा कवि देखाओल अछि जे कृष्णसँ संगम कए राधा हुनक सभ सम्पत्ति (गुणगण) हरि लेलनि । कृष्ण मानू रससमुद्र थिकाह, आ समुद्रमे जे-जे वस्तु रहैत छैक से सभ मानू राधा लए लेलथिन, जेना कच्छप, शेष नाग, मन्दर-पर्वत इत्यादि । अलंकारहुसँ अधिक चमत्कारी अछि व्यंग्यार्थ । तरंग दूर करबाक आशय थिक प्रेमातिरेकसँ विह्वल कए देब ।

[१८]

कृष्ण अपन प्रेमानुभूति सखीकेँ सुनबैत छथि–

निरमल-वदन-कमल-वर-माधुरि हेरइते भए गेल भोर ।
अलखित-रंगिनि भौंह-भुजंगिनि मरमहि दंसल मोर ।।२।।
सजनी, जब सओ देखलि राई ।
मदन-महोदधि-निगमन मोर मन आकुल तट' नहि पाई ।।४।।
बंकिम हास विलोकन चंचल मोरपर जते दिठि देल ।
किए अनुरागिनि किए से[२] विरागिनि बुझइत संशय भेल ।।६।।
मरमक वेदन मरमहि जानए[३] सदय हृदय तहँ जाइ ।
गोविन्ददास कह नित-नित नूतन नागर रसवति राइ ।।८।।

पा०–१. आकुलता । २. किय । ३. मरम ही जानत ।

(१) हमरासँ ई चूक भेल जे राधाक निर्मल वदन-कमलक छवि देखल। (२) राधाक भौँहरूपी नागिनि, जकर गतिविधि हमरा लक्षित नहि भ' सकल, हमरा मर्मस्थलमे (हृदयमे) डँसि लेलक । (३) हे सखी, जखनसँ हम राधाकेँ देखलहुँ अछि (४) तखनसँ हमर मन मदनरूपी महासागरमे डूबि छटपट क' रहल अछि, किन्तु तट कतहु नहि पाबि रहल अछि । (५) वक्र हँसी ओ चंचल नजरिसँ राधा जे हमरा उपर दृष्टिक्षेप कयलनि (६) से हमरापर वास्तवमे अनुरागिनी भ' कयलनि आ कि विरागिनी भ' उपहासार्थ, से संशय दूर नहि होइछ । (७) अपन हृदयक वेदना अपने हृदय जानि सकैत अछि । केवल दयावाने हृदय ओतए पहुँचि सकैत अछि अर्थात् आनक हृदयक वेदना बूझि सकैत अछि । गोविन्ददास कहैत छथि जे नागर कृष्ण ओ रसवती नागरी राधा नित्य नूतन छथि (अर्थात् नित्य नवे प्रेम क' रहल छी एहने बोध होइत छनि) ॥१८॥

टि०-कविक दृष्टि सामान्यतः नायिका पर रहैत अछि, किन्तु एहि गीतमे वर्ण्य छथि कृष्ण आ' अपना पर पड़ल प्रेमक पराभव अपनहि मुहेँ सुनबैत छथि, आ' से आलंकारिक शैलीमे । राधाक मुह भ्रमवश देखल एतेक सोझ बात जे चारि शब्दमे कहल जाए सकैत अछि अलंकारक वक्रमार्गें (नओ शब्दमे) कहल । मुह मानू कमल थिक, भौँह नागिनि । रूपक अलंकार। एकटा बात नब-सन अछि; राधाक हँसब प्रेमक द्योतक थिक कि उपहासक ?

१९

कृष्ण राधाक रूप लावण्य तथा हावभावक स्मरण करैत छथि–

जहँ-जहँ निकसए तसु[1] तनु-जोति । तहँ-तहँ बीजुरि चकमक[2] होति ॥१॥
जहँ-जहँ अरुन चरन तसु[3] चलई । तहँ-तहँ थल-कमलक दल झलई[4] ॥२॥
देख सखि के धनि सहचरि मेलि । हमर जिवन सञो करतहँ खेलि ॥३॥
जहँ-जहँ भंगुर भौँह विलोल । तहँ-तहँ उछलए कालिन्दी-हिलोल ॥४॥
जहँ-जहँ तरल विलोकन पड़ई । तहँ-तहँ निल उतपल-वन भरई ॥५॥
जहँ-जहँ हेरिअ मधुरिम हास । तहँ-तहँ कुन्द-कुमुद परकास ॥६॥
गोविन्ददास कह मुगुधल कान । चीन्हए राहि, चिन्हए नहि आन ॥७॥

पा०–१. तनु । २. चमकय । ३. चल । ४. खलई ।

(१) जतय-जतय ओकर (राधाक) देहक ज्योति अछि, ततय-ततय मानू बिजुली चमकि उठैत अछि । (२) जतय-जतय ओकर लाल चरण चलैत अछि ततय-ततय मानू स्थलकमलक पँखुड़ी छिड़िआ जाइत अछि । (३) हे सखी, देखह तँ जे ई के ललना अपन सखीक संग आबि हमर जीवनसँ खेल करैत अछि । (४) जतय-जतय ओकर वक्र ओ चंचल भौँह देखाइत अछि, ततय-ततय मानू यमुनामे हिलकोर उठय लगैत अछि । (५) जतय-जतय ओकर चंचल दृष्टि पड़ैत अछि ततय-ततय मानू नील कमलक वन लागि जाइत अछि । (६) जतय-जतय ओकर हासमाधुरी देखि पड़ैत अछि ततय-ततय मानू कुन्द ओ कुमुद (फेँटक फूल) फुला जाइत अछि । (७) गोविन्ददास कहैत छथि जे कृष्ण राधापर मुग्ध भ' गेल छथि; राधा तँ चिन्हैत छथि जे कृष्ण के थिकाह, किन्तु कृष्ण नहि चिन्हैत छथिन ।।19।।

टि०-उत्प्रेक्षाक माध्यमसँ राधाक अंग आ आंगिक भावक वर्णन । प्रसिद्ध उपमान-उपमेय, यथा देहक चमक = बिजली, पाएर = थलकमल । कृष्णक पर्वराग (प्रथम दर्शन) । शुद्ध दैहिक आकर्षण । जहँ-जहँ, तहँ-तहँ केर आवृत्तिसँ लोकगीतक छटा आएल अछि ।

[२०]

कृष्ण राधाक प्रति अपन प्रेमक अनुभूतिक वर्णन करैत छथि-

कांचन-कमल पवन उलटाओल ऐसन वदन संचारि ।
सरबस लए पलटलि पुन बीन्धल रंगिनि बंक निहारि ।।२।।
हरि-हरि ! के देल[१] दारुन बाधा ।
नयनक साध आध नहि पूरल, पलटि न हेरल राधा ।।४।।
घन-घन आँचर कुच-कनकाचल झाँपल हँसि-हँसि हेरि ।
जनि मोर मन हरि कनक-कुम्भ भरि महुंरि राखए कत बेरि ।।६।।
जब मन बाँधल इन्द्र-फाँस[२] पर नयन[३] मिलल आन-आन ।
काठक पुतरि ऐसन मुरुछाएल गोविन्ददास परमान ।।८।।

पा०-१. देय । २. इन्द्रिय फाँस । ३. तबहि ।

(१) जेना सोनाक कमल बसातक झोँकसँ उनटाओल हो तहिना अपन मुहकेँ घुमाय राधा हमरा दिस संचारित कयलनि, आ (२) पुनः एक बेर हमरा दिस घुरलीह; हमर सर्वस्व लय (होस-हबास गुम कय) वक्र दृष्टिसँ निहारि पुनः हमरा कटाक्षसँ विद्ध कयलनि । (३) हाय, राधाक अवलोकनमे ई दारुण बाधा के उपस्थित कयलक ।(४) हमर आँखिक आधो मनोरथ नहि पुरलैक । राधा पुनः पलटि क' हमरा दिस नहि तकलनि । (५) राधा अपन स्वर्ण पर्वतसदृश स्तनकेँ खूब सम्हारि क' आँचरसँ झँपैत हँसि-हँसि हमरा दिस तकलनि; (६) जेना हमर मनकेँ हरि सोनाक घैलमे भरि मुनि क' राखि लेलनि । (७) जखन मन इन्द्रपाशमे बाझल आ' नयन परस्पर (आन-आन, अन्योन्य) मिलल (८) तखन हमर मन काठक मूर्ति जकाँ स्तब्ध भए गेल । गोविन्ददास एकर साक्षी छथि ॥२०॥

टि०-राधाक प्रति कृष्णक आरम्भिक आकर्षण (पूर्वराग) । राधाक रूपक लावण्य आ हावभाव पर कृष्णक व्याकुलता-नवम कामदशा जड़ता (काठक पुतरी भए जाएब) । मिलन नहि, दर्शन मात्र, तेँ विप्रलम्भ शृंगार । रस-प्रधान गीत । प्रवाह, प्रसाद गुण । उत्प्रेक्षा (कांचन कमल; जनि मोर मन इत्यादि)। मुह ताकब आ' घुराए लेब, आँचर सरिआएब राधाक रसोदयक प्रथम लक्षण (पूर्वराग) ।

[२१]

कृष्ण राधाक प्रथम दर्शनक वर्णन सखीसँ करैत छथि–

सहचरि मेलि[१] चललि जब सुन्दरि कालिन्दि करए सनान ।
कांचन-सिरिस-कुसुम जनु तनु रुचि दिनकर-किरन मलान ॥२॥
सजनी, से धनि चित्तक चोर[२] ।
चोरिक पन्थ भोर दरसाओल चंचल नयनक ओर ॥४॥
कोमल चरन चलए अति मन्थर उतपत बालुक बेल ।
हेरइते हमर सजल दिठि-पंकज दुहु पादुक कए लेल ॥६॥
चित्त नयन मोर ए दुहु चोराओल सून हृदय अवधान ।
मनमथ-ताप[३] दहन तनु जारए,[४] गोविन्ददास भल जान ॥८॥

पा०–१. मिलि । २. चित्तचकोर । ३. पाप । ४. आरत ।

(१) जेना सोनाक कमल बसातक झोँकसँ उनटाओल हो तहिना अपन मुहकेँ घुमाय राधा हमरा दिस संचारित कयलनि, आ (२) पुनः एक बेर हमरा दिस घुरलीह; हमर सर्वस्व लय (होस-हवास गुम कय) वक्र दृष्टिसँ निहारि पुनः हमरा कटाक्षसँ विद्ध कयलनि । (३) हाय, राधाक अवलोकनमे ई दारुण बाधा के उपस्थित कयलक ।(४) हमर आँखिक आधो मनोरथ नहि पुरलैक । राधा पुनः पलटि क' हमरा दिस नहि तकलनि । (५) राधा अपन स्वर्ण पर्वतसदृश स्तनकेँ खूब सम्हारि क' आँचरसँ झँपैत हँसि-हँसि हमरा दिस तकलनि; (६) जेना हमर मनकेँ हरि सोनाक थैलमे भरि मुनि क' राखि लेलनि । (७) जखन मन इन्द्रपाशमे बाझल आ' नयन परस्पर (आन-आन, अन्योन्य) मिलल (८) तखन हमर मन काठक मूर्ति जकाँ स्तब्ध भए गेल । गोविन्ददास एकर साक्षी छथि ॥२०॥

टि०-राधाक प्रति कृष्णक आरम्भिक आकर्षण (पूर्वराग) । राधाक रूपक लावण्य आ हावभाव पर कृष्णक व्याकुलता-नवम कामदशा जड़ता (काठक पुतरी भए जाएब) । मिलन नहि, दर्शन मात्र, तेँ विप्रलम्भ शृंगार । रस-प्रधान गीत । प्रवाह, प्रसाद गुण । उत्प्रेक्षा (कांचन कमल; जनि मोर मन इत्यादि)। मुह ताकब आ' घुराए लेब, आँचर सरिआएब राधाक रसोदयक प्रथम लक्षण (पूर्वराग) ।

[२१]

कृष्ण राधाक प्रथम दर्शनक वर्णन सखीसँ करैत छथि-

सहचरि मेलि[१] चललि जब सुन्दरि कालिन्दि करए सनान ।
कांचन-सिरिस-कुसुम जनु तनु रुचि दिनकर-किरन मलान ॥२॥
सजनी, से धनि चित्तक चोर[२] ।
चोरिक पन्थ भोर दरसाओल चंचल नयनक ओर ॥४॥
कोमल चरन चलए अति मन्थर उतपत बालुक बेल ।
हेरइते हमर सजल दिठि-पंकज दुहु पादुक कए लेल ॥६॥
चित्त नयन मोर ए दुहु चोराओल सून हृदय अवधान ।
मनमथ-ताप[३] दहन तनु जारए,[४] गोविन्ददास भल जान ॥८॥

पा०-१. मिलि । २. चित्तचकोर । ३. पाप । ४. आरत ।

(१) सखीकें संग ल' जखन सुन्दरी राधा यमुनामे स्नान करय चललीह (२) तखन सोनहुला सिरीसक फूलसन कोमल हुनक शरीरक आभा रौदसँ मलान भ' गेल । (३) हे सखी, से राधा हमर मन चोराए लेलनि । (४) चोर कोन बाटें गेल से ओ भोरमे अपन कटाक्षसँ देखाए गेलीह । (५) राधा उत्तप्त (धींपल) बालुकामय तटपर कोमल चरणसँ अति मन्द गतिएँ चलैत रहथि, (६) से देखैत हमर सजल (नोरायल)दुनू आँखि मानू हुनक पायरक खड़ाओं बनि गेल । (७) राधा हमर मन ओ नयन दुनू चोरा लेलनि । हृदयमे अवधान (सुधि-बुद्धि) नहि रहल । (८) कामदेवक सन्तापरूपी आगि शरीरकें जरा रहल अछि । गोविन्ददास ई भाव निकें-ना जनैत छथि ।।२१।।

टि०-कृष्णक आरम्भिक प्रेम (पूर्वराग) । चोरि रातिमे होइत अछि किन्तु राधा भोरहिमे चोरि कएल तथा चोरि साकार वस्तुक हो, किन्तु ई चोरि निराकार वस्तु मनक भेल एहिसँ व्यतिरेक (बेमेल) अलंकार ध्वनित । राधाक कोमल चरणक पादुका बनबाक इच्छा प्रेमातिशयक व्यंजक । उत्प्रेक्षा ध्वनित । सुधि-बुधि हराएब प्रीतिक प्रसिद्ध अनुभाव । सरस प्रेम-गीत ।

[२२]

सखी कृष्णकें राधाक दशा सुनबैत अछि-

सुनइत चमकए गृहपति-राव । तुअ मंजिर-रव उनमत धाव ।।१।।
नाह न चिन्हए कार की गोर । जलद निहारि नयन झरु नोर ।।२।।
कहाँ तोहें गोरि अराधल कान । जानल, राहि तोहि मन मान ।।३।।
स्वामिक शयन मन्दिर नहि उठई । एकलि गहन कुंज मह लुठई ।।४।।
पति-कर-परस मानए जंजाल । बिजन आलिंगए तरुन तमाल ।।५।।
मुरलि-निनाद श्रवण भरि पिबई । गुरुजन-वचन सुनिओ नहि सुनई ।।६।।
ऐसन मरम जतहुँ अभिलाष । कतहुँ निवेदब गोविन्ददास ।।७।।

(१) हे कृष्ण, राधा अपन गृहपतिक शब्द सुनैत चौंकि उठैत अछि, किन्तु तोहर मंजीर-ध्वनि सुनितहि बताहि जेकाँ दौड़ि जाइत अछि । (२) ओ इहो नहि जनैत अछि जे ओकर पति गोर छथिन कि कारी, परन्तु (तोहर

शरीरक सदृश होयबाक कारणेँ) मेघकेँ देखैत नोर चुअब' लगैत अछि (जे घन तँ आयल, घनश्याम कहाँ) । (३) हे कृष्ण, तोँ कतय गौरीक आराधना कयलह जे राधा तोरा हृदयसँ मानैत छहु, ई विदित-बात अछि । (४) राधा अपन पतिक भवन जयबाक हेतु उठैत नहि रहैत अछि, किन्तु गहन कुंजमे एकसरिए लोटाइत रहैत अछि । (५) ओ अपन पतिक हाथक स्पर्शकेँ बलाय बुझैत अछि, किन्तु (तोहर अंगक सदृश वर्णबाला) तरुण तमाल वृक्षकेँ(तोहरा भ्रमेँ)आलिंगन करय लगैत अछि । (६) तोहर मुरलीक शब्द कान भरि पीबैत अछि, किन्तु गुरुजनक वचन सुनिओ क' नहि सुनैत अछि। (७) जतए एहन गहन अभिलाषा (प्रेम) अछि ततए गोविन्ददास की कहताह ।। २२ ।।

टि०–राधा संकटमे पड़लि छथि । एक दिस पति, दोसर दिस कृष्ण: एक दिस विरक्ति तँ दोसर दिस अनुरक्ति । विलक्षण वैषम्य । काव्य-शास्त्रने ई असंगति नामक अलंकार कहाओत ।

[२३]

राधाक सखी कृष्णकेँ राधाक विरहदशा सुनबैत अछि–

तुअ अपरुब रूप हेरि दूरसञो लोचन मन दुहु धाए ।
परसक लागि आगि जर अन्तर जीवन रह किअ[१] जाए ।। २ ।।
माधव, तोहि कि कहब कवि-भंगी ।
प्रेम-अजान-दहन धनि पैसलि जनु तनु दहति पतंगी ।। ४ ।।
कहैत संवाद कहए नहि पारिअ कैसे असोआसब बाला ।
अनुखन धरनि-सयन कत मेटब सुतनु अतनु शर-ज्वाला ।। ६ ।।
कालिन्दिकूल कदम्बघन कानन नाम नयन झरु वारि ।
गोविन्ददास कहए अब माधव कैसे जिउति वरनारि ।। ८ ।।

पा०-१. (क) हिय ।

(१) हे कृष्ण, राधा दूरहिसँ तोहर अद्भुत रूपलावण्य देखलक कि ओकर नयन ओ मन तोहरा दिस दौड़ि गेलैक । (२) तोहर स्पर्शक हेतु ओकरा हृदयमे मानू लालसारूपी आगि लागि गेलैक अछि, आ प्राण बचतैक

की नहि ताहूमे सन्देह । (३) हे कृष्ण, तोरा कवित्वमय शैलीमे की कहबहु (तोँ तँ स्वयं भावुक छह) । (४) राधा प्रेमरूपी अज्ञान (पागलपन)क आगिमे पैसि गेलि अछि, आ' ताहिमे ओ मानू अपन देहकेँ भस्म करबाक हेतु उद्यत अछि । (५) ओकर संवाद कहय लगैत छी तँ कहि नहि होइत अछि । ओहि बाला (राधा)केँ कोन तरहेँ भरोस दिऔक । (६) निरन्तर माटिमे सूतलि रहलासँ की ओकर कामबाणक सन्ताप मेटा सकतैक ? (७) यमुनाक तट ओ कदम्ब-वनक नाम सुनैत ओकरा आँखिसँ नोर झहर' लगैत छैक । (८) गोविन्ददास कहैत छथि जे हे कृष्ण, अहीँ कहू, आब वरनारि राधा कोना जिउतीह ? ॥ २३ ॥

टि०—नायिकाक विरहदशाक काव्यशास्त्रीय रीतिएँ वर्णन । कोनो नवीनता वा वक्रोक्ति नहि । मिलनक अभिलाषा (परसक लागि), उन्माद (धरणिशयन), जड़ता (कहैत संवाद कहए नहि पारिअ) इत्यादि विविध कामदशा थिक । अपरूप-रूप, लोचन-मन, लागि-आगि, सुतनु-अतनु ई सभ छेकानुप्रास । कालिन्दि कूल कदम्ब घन कानन इत्यादि आद्यानुप्रास श्रुति-मधुर बनबैत अछि ।

[२४]

राधाक सखी कृष्णकेँ चढ़बैत छथि जे राधाक संग रति-युद्ध करह गए –

कालिय-दमन जगत तुअ घोसए सहचरि सुनइत काने ।
तुअसञे वाद करए धनि आउति मनमथ चढ़लि झपाने ॥ २ ॥
माधव, अतए कहिअ तुअ लागि ।
त्रिवलिक माझहि रोम-भुजंगिनि हेरइत तुअ जनि भागि ॥ ४ ॥
नयँन-कमलपर युगल भुजगवर काजर गरल उगारि ।
मदन-धन्वन्तरि आपे जबे आओब[१] से विष तबहु न सारि ॥ ६ ॥
वेणि भुजगवर डोलए पीठपर चिर दिन भुखल पिआसे ।
सुनइत नागदमन[२] तनु कम्पित कहतहँ गोविन्ददासे ॥ ८ ॥

पा०–१. आगु जौँ आबति २. दहन ।

(१) तोहरा संसार भरिक लोक 'कालिय-दमन' (अर्थात् कालिय नामक नागकेँ नथनिहार) कहैत छहु–से बात अपन सखीक मुहसँ सुनि क' (२)

राधा कामदेवरूपी महफापर चढ़ि तोहरासँ स्पर्धा करय आओत जे तों पैघ सपेरा छह कि ओ। (३) हे माधव, तें हम तोहर हितक बात कहय आइलि छिअहु, जे (४) राधाक त्रिवलीक बीचमे जे रोमरूपी नागिनि अछि तकरा देखितहिँ तों पड़ा नहि जाह। (५) राधाक आँखिक उपरमे जे भौँहरूपी दूटा बड़का साप अछि (६) से काजररूपी विष उगिलैत अछि; आ से विष तखनहु नहि दूर भ' सकैत अछि जखन कामदेवरूपी धन्वन्तरि वैद्य स्वयं आबि चिकित्सा करताह। (७) राधाक पीठपर जे एकटा बड़का नाग जुट्टीक रूपमे लटकल अछि से बहुत दिनसँ भूखल-पिआसल अछि, ओकरासँ सावधान रहिहह। (८) राधाक शरीरमे सह-सह साप भरल अछि ई बात सुनैत देरी नागदमन कृष्ण तनिको शरीर काँपय लगलनि, गोविन्ददास ई बात कहैत छथि ॥ २४ ॥

टि०–प्राचीन समयमे सपहरिआ सभक बीच प्रतिद्वन्द्विता होइत छल। ओहिमे प्रतिपक्षीक सापकेँ जे वशमे नहि कए ओकरासँ डँसाए जाइत छल से पराजित मानल जाइत छल। कवि एहि गीतमे कृष्ण आ राधा दूनूकेँ सपहरिआ बनाए लड़एबाक जोगाड़ कएल अछि। एहिमे रूपक अलंकारक सहायतासँ बनाओल गेल एक-एक वाक्य व्यंग्यसँ भरल अछि। चारिम पंक्तिक व्यंग्य अर्थ थिक तों राधासँ संगम करह गए। एहि तरहेँ कालिय नागकेँ दमन कएनिहार कृष्णकेँ कवि एहि नव सपहरिआक प्रतिद्वन्द्वितामे ठाढ़ करैत छथि। सम्भोग श्रृंगार अलंकारसँ पोषित।

[२५]

राधा गुप्त संगम हेतु कृष्णसँ प्रार्थना करैत छथि–

पति अति दुरमति, कुलवति नारि। स्वामि-बरत पुनि छोड़ि न पारि ॥१॥
से रूप जौवन एको नहि ऊन। बिदगध नाह न होए बिनु पून[१] ॥२॥
ए हरि अतए देखाबिअ पन्थ। पूजब पसुपति-गौरि एकन्त ॥३॥
सहजे वधूजन गति-मति-हीन। घर सञो बाहर पन्थ न चीन्ह ॥४॥
न मिलए वनहि केओ जन[२] आन। अनुसरि मुरलि अइलिहुँ एहिठान ॥५॥
अइलिहुँ दूर पुर बानिज[३] साधे। एकसरि जानि करह जनि बाधे ॥६॥
तोहेँ जैसे गौरि अराधल कान। गोविन्ददास ताहि परमान ॥७॥

पा०–१. न होयब पून । २. के बनहिवन आन । ३. बनिजय ।

(१) हे कृष्ण, हमर स्वामी बड़ दुर्मति (बदमास) छथि । स्त्री भ' हम पातिव्रत्य छोड़ब कोना । (२) ताहिपर ओ ने रूपमे ककरहुसँ ऊन छथि आ ने यौवनमे । बड़ पुण्यसँ विदग्ध (रसिक) पति भेटैत छैक । (३) हे कृष्ण, तेँ तोँ हमरा बाट देखा दैह । एहिसँ उद्धार पायब तँ एकान्तमे गौरी-शंकरक पूजा करब । (४) कुलवधू सहजहि उपाय ओ बुद्धिसँ हीन होइत अछि । घरसँ बाहर बाटो नहि देखल रहैत छैक । (५) वनमे कोनो आनहु लोककेँ नहि देखि रहलि छी । तोहर मुरलीध्वनिकेँ ठेकनबैत एहि ठाम अयलहुँ अछि । (६) वाणिज्यक प्रयोजनसँ एतेक दूर नगर अयलहुँ अछि । तोँ एहिमे बाधा नहि पहुँचाहब । (७) हे राधा, तोँ कोना गौरीक बदला कृष्णक आराधना कयलहिह–गोविन्ददास तकर साक्षी छथि ।। २५।।

टि०–दुरमतिक अभिप्राय ई जे राधाक पति आन नारीमे फँसल छथिन । हुनका सन्मति होइन्ह एहि कामनासँ गौरीक पूजा करतीह । पूजा थिक व्याज । वक्रोक्तिसँ कृष्णकेँ अपन आशय बुझबैत छथि । करह जनि बाधे मे विपरीत व्यंजना, रंगरभस करह गए । व्याज कए मिलनक प्रसिद्ध रीति आ' गीतसभ अछि दान-लीला नौकातरण, दही बेचब आदि ।

[२६]

कृष्ण राधाकेँ कहैत छथि–

मनमथ-मकर-डरहि[१] कातर उर मोर मानसझष काँप ।
तुअ हिअ-हार तटिनि-तट कुच-घट उछलि पड़ल दए झाँप ॥ २ ॥
सुन्दरि, संबरु कुटिल कटाख ।
कलसिक मीन बँड़सि[२] किअ जड़सी ई अति कठिन विपाक ॥ ४ ॥
पुनु दए झाँप पड़ल जब आकुल नाभि-सरोवर माह ।
ततहु[३] रोमावलि-भुजगी सओँ भय[४] त्रिवलि वेणि अवगाह ॥ ६ ॥
ताहि फिरत कत कतहु मनोरथ दैवक गति नहि जान ।
किंकिणिजाल पड़ब[४] भेल संशय गोविन्ददास रस-गान ॥ ८ ॥

पा०-१. भरहि । २. वणिस । ३. ताहि । ४. संगभय ५. पड़ल ।

(१) हे सुन्दरी, हमर भीरु हृदयरूपी मानस-मीन कामदेवरूपी गोहिक डरसँ कम्पित (आतंकित) भ' तोहर हृदयक हार-रूपी नदीक कछेरमे राखल स्तनरूपी घैलमे उछलि क' कूदि शरण लेलक । (३) हे सुन्दरी, तों ओकरापर कुटिल कटाक्ष (रूपी बनसी) नहि चलाबह । (४) जे माछ कलसी (बसनी) मे शरण लेने अछि, तकरा बनसी किएक लगबैत छह ? ई ओकर क्रूर सजाय होयत । (५) देखह, पुनः ओ माझ कलसीसँ उछलि क' आकुल भ' नाभिरूपी झीलमे कूदि गेल । (६) ततहु रोमावलीरूपी नागिनिक डर । तें ओतहुसँ तोहर त्रिवलीरूपी त्रिवेणीमे डुबकी लगओलक । (७) ततहु कतेक मनोरथ (आशा) लय ओ विचरण करय लागल, किन्तु, दैवक गति के जनैत अछि; (८) ओतहु तोहर किंकिणी (घुघरू)क जालमे फँसबाक शंका उपस्थित छैक । ई गोविन्ददासक सरस गीत थिकनि ॥२६॥

टि०—माला-रूपक अलंकार, सांग रूपक नहि किएक तँ अनेक रूपक मे कोनो एक प्रधान नहि । कामातुर कृष्ण राधासँ संगमक याचना कहैत छथि आलंकारिक चाटूक्ति द्वारा । कल्पनाक अपूर्व उड़ान ।

[२७]

कृष्ण राधासँ कहैत छथि–

मदन-किरात-कुसुमशर-जरजर वृन्दावन-वन माझ ।
तेहि आकुल हरि तोहर स्मरण करि परिहरि पौरुष लाज ॥ २ ॥
सुन्दरि, तुअ दिठि अथिर सन्धान ।
मनमथ मारइते[१] जोड़ि नयनशर हनलह हमर परान ॥ ४ ॥
दुहु शरें जरजर जीवन अन्तर कि करब[२] से नहि ज्ञान ।
निज जन[३] चाहि राहि अब देह मोहि[४] अधर-सुधा-रस दान[५] ॥ ६॥
मनिमय-हार-तरंगिनि-तीरहि कुच-कनकाचल छाए ।
ऐसन दान धनि[६] गुपुतेहि राखब गोविन्ददास गुन गाए ॥ ८ ॥

पा०—१. मातल । २. किय करब । ३. यश । ४. देयब । ५. पान । ६. एहन तपत जन ।

(१) हे सुन्दरी, एकरा (अर्थात् हमरा) मदनरूपी किरात (शिकारी) फूलक बाणसँ क्षत-विक्षत क' देलक अछि । (२) तँ ई हरि (अर्थात् हम) घबरा क' अपन पौरुष ओ लाज (प्रतिष्ठा) गमाय तोहर स्मरण कयल (तोहर शरण धयलहुँ) । (३) हे सुन्दरी, तोहर दृष्टिरूपी बाणक निशान चूकि गेलहु, (४) कारण जे तोँ नयनशर जोड़ि मदनरूपी ओहि किरातकेँ मारय चाहलह, किन्तु लगा देलह हमरे प्राणपर । (५) तोहर नयनरूपी शरसँ हमर प्राण ओ हृदय पुनः क्षत-विक्षत भ' गेल अछि । आब की करू, किछु नहि फुरैत अछि । (६) हम घायल भेल पड़ल छी; आब तोँ हमरा अपन लोक बूझि, हे राधा, अपन अधर-सुधारूपी रसायनक दान देह (औषध खोआबह) जाहिसँ हम स्वस्थ होइ । (७) तोहर मणिमय हाररूपी नदीक तटपर स्तनरूपी स्वर्णपर्वत अछि । तकर छायामे कएल एहन दान हे धनि, हम गुप्त राखब । गोविन्ददास गुण गबैत रहताह (आन केओ नहि बूझत) ।

टि०-कल्पनाक छटा आ' रूपकालंकारक घटा । कामदेव कृष्ण पर तीर चलओलक तँ राधा हुनका बचएबाक हेतु कामदेवकेँ मारए चाहल, निशाना चूकि गेल, तीर लागि गेलनि कृष्णहिकेँ । विकट दुर्घटना । राधाक अधरामृते हुनका जिआए सकैत अछि । तुलनीय विद्यापति–उठ उठ *माधव....अलपओ अवसर दान अतूल* ।

[२८]

कृष्ण राधासँ चाटुवचन कहैत छथि–

काननें कुसुम तोड़सि[१] किए गोरि । कुसुमहि निरमित सब[२] तनु तोरि ॥१॥

आनन हेम-सरोरुह भास । सौरभे श्याम-भ्रमर मिलु पास ॥२॥

नयन-युगल निल उतपल जोर । सहजे सोहाओन श्रवणक ओर ॥ ३॥

अपरुब तिल फुल सुललित नास । परिमल जितल अमर-तरु-वास ॥४॥

बन्धुक मिलित अधर जहँ हास । दसनहि[३] कुन्द कुसुम परगास ॥५॥

सब तनु घटित[४] चम्पकसम गोरा । पानिक तल थलकमल इजोरा ॥६॥

गोविन्ददास अतए अनुमान । पूजह पशुपति निज तनु-दान ॥७॥

पा०-१.तोड़ल । २. सब तनु निरमित । ३. (प.) मुकुलित । ४.(प.) फुटल ।

(१) हे गौराङ्गिनी, तोँ फुलबाड़ीमे फूल किएक लोढ़ैत छह । तोहर तँ अपने सभ अंग फूलसँ बनल छहु । (२) तोहर मुह स्वर्ण-कमल सन चमकैछ, जकर सौरभक लोभेँ श्याम (कृष्ण वा कारी रंगक) भ्रमर लगमे मड़रा रहल अछि । (३) दुनू आँखि नील-कमल थिकहु, जे सहज सुन्दर कान (कान्ह) दिस बढ़ल छहु । (४) सुन्दर नासिका तिलक फूल थिकहु, जकर सौरभ सुरतरु अर्थात् पारिजातक सौरभकेँ जितने अछि । (५) तोहर अधर मधुरी फूलक तुल्य छहु जतय हास विराजमान अछि । तोहर दाँत मानू कुन्द फूल फुलायल हो । (६) तोहर सगर अंग चम्पाफूल सन गोर बनल छहु । तोहर चरणतल (तरबा) स्थलकमल जकाँ भासमान छहु । (७) तेँ गोविन्ददास अनुमान क' कहैत छथि जे तोँ पशुपति (एक पक्षमे शिव ओ दोसरमे गाइक मालिक कृष्ण) केँ फूलक बदला अपन शरीरे द' पूजह । गोविन्ददास एहने अनुमान करैत छथि । ॥ २८ ॥

टि०-प्रतीयमान उपमा मालारूपा अथवा सांग रूपक । पशुपति शब्द मे श्लेष- (१) शिव, (२) पशुक (गांइक) चरबाह कृष्ण ।

[२९]

कृष्ण राधासँ कौतुकालाप करैत छथि-

ए धनि पदुमनि पड़ल अकाज । जनि बेधह हिअ कुंजक माझ ॥१॥
तोहेँ गजगामिनि मति अति भोर । उच कुचकुम्भ गरब नहि ओर ॥२॥
जौवन गरब न हेरसि पन्थ । परिमले वासित करसि दिगन्त ॥३॥
जब हमे[1] करब अरुन दिठि भंग । निअर न हेरब सहचरि-संग ॥४॥
ई खर नखर[2] परस जब होति । ई कुच-कुम्भ न राखति मोति ॥५॥
गण्ड करब जब दशनक घात । मुरुछि पड़ब तब[3] धरनि निपात ॥६॥
गोविन्ददास जखन सुमिराब । अधर-सुधा दए तखन जिआब ॥७॥

पा०-१. तोहेँ । २. ईश्वर नरवर । ३. तँह ।

(१) हे धनि पद्मिनी (उच्च कोटिक नायिका), गड़बड़ भेल । एहि कुंजमे तों हमरा हृदयकें विद्ध नहि करह । (२) तों गजगामिनी थिकह, हथिनी जेकाँ मस्त भेलि गर्वसँ चलनिहारि थिकह । तोहर मति (बुद्धि) भोर (भ्रान्त) छहु । तोरा अपन घैल-सन पैघ-पैघ दुहू स्तनक असीम अभिमान छहु । (३) अपन यौवनक अभिमान ततेक छहु जे बाटो नहि तकैत छह (मूड़ी अलगओनहि छाती तानि क' चलैत छह)। अपन अंग-सौरभसँ दिग्-दिगन्तकें सुरभित करैत चलैत छह । (४) (मुदा हम तोरासँ दबनिहार नहि) तों गजगामिनी थिकह तँ हम हरि अर्थात् सिंह थिकहुँ । जखन हम अपन आँखिकें लाल करब, जखन हमर एहि तेज नखाग्रक स्पर्श होयतहु (जखन हम स्तनपर नखक्षत करबहु), तखन एहि स्तनरूपी घैलमे मोति नहि रहि सकत (जेना सिंह हाथीक मस्तक बिदारि ओहिसँ गजमुक्ता निकालि लैत अछि, तहिना हम स्तनपर नखक्षत क' तोहर अभिमान (गजमुक्ता) निकालि लेबहु) । गालपर जखन दाँतसँ प्रहार करबहु तखन तों मूर्छित भ' हारि क' धरती ध' लेबह । ततःपर जखन हमर स्मरण करबह, गोविन्दास कहैत छथि जे तखन हम अधर-सुधा द' तोहर मूर्छा दूर क' देबहु ।। २९ ।।

टि०—रति-क्रियाक वर्णन युद्धक रूपक बान्हि करबाक परम्परा अछि । तुलनीय विद्यापति *दुहुकसंयुतचिकुरपूजल,दुहुकदुहूबलाबलबूझल* । एहने भावभूमिपर ई गीत अछि । राधाक दिससँ एक कटाक्षक तीर छुटैत अछि तँ कृष्ण आक्रामक भए जाइत छथि । गर्वोक्ति चलैत अछि । अपन प्रिय अलंकार प्रतीयमान उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षाक सहायता लए कृष्ण पराक्रम देखबैत छथि । कृष्ण धीरोद्धत नायकक रूपमे वर्णित छथि—*मायापरः प्रचण्डः चपलोऽहंकारभूयिष्ठः, आत्मश्लाघानिरतः*—एहि सभमे मायापरः छाड़ि आओर सभ लक्षण उपस्थित अछि ।

[३०]

कृष्ण राधासँ प्रणयालाप करैत छथि—

मोर[1] पद दंशल मदन भुजंग । गरलहि भरल अवश भेल अंग ॥१॥
तोहें यदि सुन्दरि करसि उपाए । दगधल[2] जन तब जीवन पाए ॥ २॥
पहिलहि झारब दीठि पसारि । करे कर पंजन भाव सम्भारि ॥३॥

श्रम-जल अंगहि करब बिथार । उच कुच[3]कलश करब पनिसार ॥४॥
खर नख-रंजनि तुअ नख मानि । झारब निरबिख उर पर हानि[4] ॥५॥
जतनहि अधर अधर-रस देब । अधरक दंशन अधर-रस लेब ॥६॥
रजनि उजागरि रहब अगोरि । गोविन्ददास गुन गाओब तोरि ॥७॥

पा-१. (प.) मझु । २. मुगुधल । ३. कुचकुच ।

(१) हे सुन्दरी, हमरा पायरमे कामदेवरूपी साप डसि लेलक अछि । सगर देह विषसँ भरि गेल । अंग अवश (संचारहीन, शून्य) भ' गेल अछि । (२) हे सुन्दरी, तोँ यदि एकर उपाय (उपचार) करह तखनहि ई विषदग्ध व्यक्ति जीवन पाबय (अर्थात् हम जीबि सकी) । (३) पहिनेँ तोँ अपन आँखि पसारिक' झाड़बह । (करे कर.....सम्भारि–अर्थ अस्पष्ट) । (४) अंगपर श्रमजल (घाम) पसारि देबह (सर्प-विषक प्रसंगमे, देहपर मन्त्र पढ़ि पानि छीटह; श्रृंगारपक्षमे रतिश्रमसँ देहमे घाम चला देबह) । दुनू स्तनरूपी कलशकेँ 'पनिसार' बनाबह । (५) तोँ अपन नहकेँ तेज नहरनी मानि ओहिसँ हमरा छातीपर क्षत क'-क' रक्त बहाय विष उतारह । (६) यत्नपूर्वक हमर अधरमे अपन अधर-रस देह; तखन हमर अधरमे दन्तक्षत क' ओहि अधर-रसकेँ घीचि लेह । (७) भरि राति जागि क' हमरा अगोरने रहह । गोविन्ददास तोहर गुन गओथुन ॥ ३० ॥

टि०–एहिमे साप कटबाक आ' तकर विष झाड़बाक रूपक बान्हि कृष्णक कामातुरताक वर्णन कएल गेल अछि ।श्रृंगार रस गौण, अलंकार प्रधान । आँखि गुड़ारि ताकब (त्राटक), हाथ पकड़ि जोर-जोर सँ झमारब, देहपर पानि ढारब, कलश स्थापित कए मन्त्र पढ़ब, नहरनीसँ दाढ़ चीरि बिखाह शोणित गारब, ठोर लगाए दाढ़सँ बिखाह रक्त चूसि फेकब ई छओ विधि सर्पविषक उपचारमे ताहि समय प्रचलित छल ।

[३१]

कृष्ण राधासँ अनुनय करैत छथि–

कनकलता किअ बिकसल[1] पदुमिनि, किअ महि बिजुरि इजोर ।
कुंज-कुटिर किअ ऊगल[2] हिमकर हेरइत भए गेल भोर ॥ २ ॥
सुन्दरि, तोहर चरित विपरीते ।

बिघटल समय पलटि नहि आओत गोविन्ददास परमान ॥ ८ ॥
आसा-पास हास दरसाबसि[३] कति[४] खन राखब[५] परान ।
उच कुच-पाथर सरस परस दए उदघाटह दिठि-बान ॥ ६ ॥
तबे अगेआने कएल तोहेँ अइसन, अब सुपुरुस बध जान ।
काजर-गरलहि भरल नयन-शर हनलह अन्तर चीते ॥ ४ ॥

पा०-१. किसलय । २. ऊजल । ३. दरसायल । ४. एहि । ५. धरब ।

(१-२) हे राधा, तोरा देखि हम संशयमे पड़ल छी जे की स्वर्णलता (=राधाक देह)मे पद्मिनी (=राधाक मुह) फुलायल अछि, की धरतीपर बिजलौका उतरि आयल अछि, किंवा कुंजकुटीरमे चान उगल अछि । (३) हे सुन्दरी, तोहर रंग-ढंग हमरा विचित्र (विरोधाभासी) लगैत अछि । (४) तोरा हम स्वर्णलता, पद्मिनी ओ विद्युल्लता बुझैत छलहुँ, किन्तु तोँ तँ काजररूप विषसँ माखल नयनरूपी बाण चला क' हमर अन्तस्तलकेँ बेधि देलह । (५) बूझि पड़ैछ जे एहन काज तोँ अज्ञानवश कयलह । आब ई बूझह जे एहिसँ एक भलमानुस मरि रहल अछि । (६) अतः अपन उन्नत स्तनरूपी पारसक सरस स्पर्श करा क' हमर हृदयमे गड़ल अपन दृष्टिबाणकेँ निकालि दैह । (७) तोँ मुसुका क' हमरा आशाक सन्देश (उद्धारक भरोस) दैत छह, मुदा हमर प्राणकेँ एहि आशापाशमे बझओने कतेक दिन रखबह । (८) अवसर बीति जाइत अछि तँ ओ फेर घुरि क' नहि अबैत अछि । गोविन्ददास एकर साक्षी छथि ॥ ३१॥

टि०—कृष्णकेँ पहिने राधाक रूप तँ बड़ रमणीय लगैत छनि, किन्तु नयन-बाण लगैत छनि तँ छटपटाए लगैत छथि । हृदयमे पैसल एहि बाणकेँ चुम्बक (अर्थात् चुम्बन) द्वारा निकालि देबाक अनुरोध करैत छथि । बाण लगबाक बात तँ विद्यापति बेरि-बेरि कहने छथि परन्तु चुम्बक-विधिसँ ओकरा बहार करबाक बात नब । सम्भोग श्रृंगार । चाटुवचन । सन्देहालंकार (किअ सँ सूचित) । उत्प्रेक्षा, रूपक आदि आनो अलंकार सभक मिश्रण ।

[३२]

सखी राधाकेँ कृष्णक कोरमे बाझलि देखि अपनामे बतिआइत छथि—

सौरभ आगरि राहि सुनागरि कनकलता सम साज ।
हरिचन्दन बदि[१] कोर अगोरल कुंज-भुजंगम-राज ॥२॥

अब किअ करब उपाए ।
काल-भुजग-कोर छाड़ि मुगुध सखि गमन जुगुति न बुझाए ॥४॥
चन्द्रक चारु नागफण[२] मण्डित विष विषमारुण दीठ ।
राहिक अधर गरल अनुमानिअ दशनक दंशन मीठ ॥६॥
एक सन्देह शीतकेर भीतहि पुलकिनि झाँपय राहि ।
गाविन्ददास कह मीलि सबहु सखि बूझथि रस अवगाहि ॥८॥

(१) श्रेष्ठ नागरी राधा मानू सौरभक खानि छथि, आ हुनक देह कनकलता-सन लगैत अछि । (२) तेँ कुंज-भुजंगम-राज (एक पक्षमे कुंजमे स्वच्छन्द विहार कयनिहार रसिक; दोसर पक्षमे कुंजमे रहनिहार सर्पराज) कृष्ण हुनका श्रीखण्ड चन्दनक गाछ बूझि ओहिपर डेरा क' लेल अछि । (३) राधाकेँ एहि कृष्णसर्पसँ बचयबाक आब हम कोन उपाय करू । (४) हमर ई बकलेल सखी कृष्णसर्पक कोरसँ कोना छुटतीह तकर कोनो युक्ति ध्यानमे नहि अबैत अछि । (५) एहि कृष्णसर्पक माथपर जे मयूरक पाँखि शोभायमान अछि से मानू फन थिक । एकर दृष्टि विचित्र लाल लगैत अछि, जेना विषसँ भरल हो । (६) राधाक अधरमे मानू विष भरि गेल अछि, जकर प्रभावसँ दाँतसँ दंशन ओकरा मीठ लगैत छैक । (७) [**एक सन्देह.........राहि**—भाव स्पष्ट नहि हिोइछ] (८) गोविन्ददास कहैत छथि जे सभ सखी मिलि भीतर पैसि रसक थाह पबैत छथि ॥३२॥

टि०-कोनो सखी कल्पना करैत छथि जे कृष्ण कालानाग थिकाह जे राधाकेँ बझाए लेल । सखीक कौतुक । कविक कल्पना । सम्भोग श्रृंगार । श्लेष—हरिचन्दन केर दू अर्थ : श्रीखण्ड चन्दन आ चन्दन सन शीतल आ सुरभित कृष्ण (हरि) । कुंजभुजंगम एहूमे श्लेष । अनेक उपमा ।

[३३]

कवि स्वयं कहैत छथि—

धनि-धनि रमणि-शिरोमणि राही[१] ।
नयनक ओट[२] करए नहि माधव निशि दिन[३] रस अवगाही ॥२॥
करतल कुंकुम लए मुख माजए अलक-तिलक लिखि भोर ।

सजल[४] विलोकन पुन पुन हेरए भाषए गद-गद बोल ॥४॥
लोचन खंजन अंजन रंजए नव कुवलय श्रुतिमूल ।
अतसि कुसुम स्मरि ललित हृदय धरि कृपण हेम समतूल ॥६॥
यावक चित्र चरण पर लेखए मदन-पराभव पात ।
गोविन्ददास कहए भल [सोभय][५] कान्हक आरकत हात ॥८॥

पा०–१. राधा ही । २. ओर । ३. निशि दिशि । ४. सकल ५. होएत ।

(१) रमणीलोकनिमे श्रेष्ठ राधा धन्य थिकीह (२) जनिका कृष्ण कखनहु अपन नयनक परोक्ष नहि होअय देअय चाहैत छथि । निरन्तर हुनक प्रेमसिन्धुमे डूबल रहैत छथि । (३) स्वयं हाथमे कुंकुम (एक प्रकारक लाल पाउडर) ल' राधाक वदनमे लगबैत छथि । राधाक ललाट आदिमे अलक-तिलक (पसाहिनि) अंकित क' आनन्द-विभोर भ' जाइत छथि । (४) प्रेमाश्रुभरल लोचनसँ हुनक मुह निहारैत छथि ओ गदगद वचन बजैत छथि । (५) खंजनसदृश चंचल आँखिमे अंजन (काजर) लगबैत छथि । कानमे नव नीलकमलक फूल पहिरबैत छथि । (६) राधा तीसीक फूलक स्मरण कय ओहि नीलकमलकेँ कृपणक सोन जकाँ हृदयसँ लगा लैत छथि । (७) कृष्ण राधाक चरणपर यावक (आरत, पायर रङबाक घोर) सँ चित्र बनबैत छथि, मानू कामदेवक हारिक निर्णयपत्र (डिक्री) हो । (८) गाविन्ददास कहैत छथि, कृष्णक आरतसँ रङल हाथ खूब शोभा पबैत अछि ।

टि०–नायिकाक प्रसाधन करैत नायकक वर्णन सुदूर कालसँ होइत रहल अछि । गोविन्ददासक आनो गीत एहि भावभूमिक अछि, देखू *धनिमुखपंकज* (गीत सं. 57) । एहिमे नायक ओ नायिका दूनूकेँ एक विशेष प्रकारक संवेदन होइत अछि जकरा व्याज-सम्भोग (पसाहिनि करबाक लाथेँ रस लेब) कहि सकैत छी ।

अभिसार

[३४]

सखी राधाकृष्णक प्रेमलीला अपन सखीकेँ सुनबैत अछि–

सजनी, कि कहब राहिक सोहागि ।
जनिक देहरि हरि[१] बदरि-कोर धरि रजनि गमाउलि जागि ॥
कोकिल-सम हरि संकेत करइते द्वार फोआओल राधा ।
कंकन झनकैत गुरुजन जागल भए गेल दारुन बाधा ॥
ननन्दि कहए धनि किए बहरइलिहे[२] भीत पुतरि सम देहा ।
नोर मेटायल पीन-पयोधर-मृगमद-कंकुम-रेहा ॥
बिघटु मनोरथ आन चलल हरि तहँ दुइ संकेत राखि ।
हार सुकुसुमित सररिज मुकुलित गोविन्ददास एक साखि ॥

पा०–१. जनिकर देहरि । २. के बहराइति ।

(१) हे सखी, ओहि राधाक सोहागक वर्णन की करू, (२) जनिक देहरि धयने कृष्ण सगर राति बितओलनि । (३) कृष्ण कोकिलक ध्वनिक अनुकरण क' संकेत कयलनि । राधा केबाड़ फोललनि । कगनाक झंकार सुनि गुरुजन जागि गेल ओ अभिसारमे बाधा भ' गेल । (५) ननदि पूछि बैसलथिन जे हे धनि, तोँ किएक बहार भेलह ? से सुनि राधा भीतमे लिखलि मूर्ति जेकाँ ठकुआ गेलीह । नोर जे बहलनि ताहिसँ पीन पयोधरपर कस्तूरी तथा कुंकुमसँ लिखल प्रसाधन मेटा गेल । (६) भग्नमनोरथ कृष्ण राधाक हेतु केबाड़ लग दुइ गोट संकेत राखि घूरि गेलाह । (८) एक छल कुसुमित हार, जाहिसँ ध्वनित होइत छल जे मिलन-स्थल फुलबाड़ी वा कुञ्जवन होयत, आ दोसर छल संकुचित कमलपुष्प, जे सन्ध्याकालक सूचक छल; तात्पर्य भेल जे सन्ध्याकाल कुञ्जवनमे भेँट होयत । गोविन्ददास एहि बातक एकमात्र साक्षी छथि ।

टि०–ई गीत रूपगोस्वामीकृत उज्ज्वलनीलमणिक निम्नलिखित श्लोकक भावानुवाद थिक :

संकेतीकृतकोकिलादिनिनदं कंसद्विषः कुर्वतो

द्वारोन्मोचनलोलशङ्खवलयक्वाणं मुहुः शृण्वतः ।
केयं केयमिति प्रगल्भजरतीवाक्येन दूनात्मनो
राधा-प्राङ्गणकोणकोलविटपिक्रोड़े गता शर्वरी ।

(देखू गोविन्द झाक *गोविन्ददास*, पृ० 81) । परकीया नायिका । गुप्त मिलनक प्रयासक विफलता नाटकीय रूपेँ । कूट भाषामे संकेत । अलंकारक शून्यता । सरल भाव ओ भाषा । इएह सभ थिक एहि गीतक विशेषता ।

[३५]

सखी अपन सखीकेँ राधाक साहसिक अभिसारकथा सुनबैत अछि–

पौषक रजनि पवन बह मन्द । चौदिस हिमकर हिम करु छन्द ॥१॥
मन्दिर रहैत सबहु जन काँप । जग-जनं शयन नयन करु झाँप ॥२॥
ए सखि, हेरि चमक मोहि नाहि । एहन समय अभिसारल राहि ॥३॥
परिहरि तइसन सुखमय सेज । उच कुच-कंचुक भरमहि तेज ॥४॥
धवलिम एक वसन तन गोए । चललिह कुंज लखए नहि कोए ॥५॥
कोमल चरन तुहिन नहि पलइ[१] । कंटक बाट तथिहुँ नहि अलइ[२] ॥६॥
गोनिन्ददास कह एत कि सन्देह । किएक बिघिन जहँ नविन सिनेह ॥७॥

पा०–१. दलई । २. ढलई ।

(१) पूस मासक राति । मन्द-मन्द बसात बहैत । चतुर्दिश चन्द्रमाक शीतल किरण ओ हिम (पाला) सँ आच्छन्न । (२) घरहुमे रहने लोक जाड़सँ कापि रहल अछि । संसार भरिक लोक शय्यापर सूतल आँखि मुनने अछि । (३) हे सखी, तोँ एहन समयमे हमरा देखि अकचकाह नहि । एहने समयमे राधा अभिसारमे चललि अछि । (४) ओ ओहन सुखकर शय्याकेँ छोड़ि, तथा सम्भ्रममे उन्नत स्तन झपबाक कंचुक (चोली) तकरहु बिसरि (५) एकमात्र श्वेत वस्त्रसँ अपन देह झाँपि कुंज बिदा भेलि जे केओ देखैक नहि । (६) राधाक कोमल चरण पाला पर पड़ैत अछि । बाटमे काँट कूस अछि, मुदा राधा ततहु अड़ैत (रुकैत) नहि अछि । (७) गोविन्ददास कहैत छथि जे एहिमे कोन सन्देह–जतय नवीन प्रेम रहैत छैक ततय विघ्न-बाधाक परबाहि की ।

टि०–प्रिय-मिलनक आतुरता प्रेमिका मे साहस भरि दैत अछि । माघक

जाड़ हो कि भादबक बरखा, अभिसार नहि रुकत । जाड़क गतिक सहजसुन्दर वर्णन । शीताभिसारिका नायिका ।

[३६]

कवि राधाक अभिसारक वर्णन करैत छथि—

नीलिम मृगमद तनु अनुलेपन, नीलिम हार उजोल ।
नील वलयगणे भुजयुग मंडित परिहन नील निचोल ॥२॥
सुन्दरि हरि-अभिसारक लागि ।
नव अनुरागे गोरि भेलि सामरि कुहु-यामिनि भय भाँगि ॥४॥
नील अलकाकुल अलिकुल लोलित[1] नील तिमिर चलु गोइ ।
नील नलिनि जनि सामर सागर[2] लखए न पारए कोइ ॥६॥
नील भ्रमरगण परिमल धाबए चौदिस करए झंकार ।
गोविन्ददास अतए अनुमानल राहि चलिलि अभिसार ॥८॥

पा–१. (क) अलि कुहु लोलित, (ख) अलिके हिलोलत । २. (क) श्यामसिन्धुरसे ।

(१) नील (कारी) रंगक कस्तूरीक लेप देहमे लगाओने अछि । चकमक नील मणिक हार पहिरने अछि । (२) कारी रंगक चूड़ि दुनू हाथमे छैक ओ कारी रंगक चोली पहिरने अछि । (३) सुन्दरी राधा कृष्णक अभिसार हेतु प्रस्तुत अछि । (४) ओ अभिनव प्रेमवश अमावास्या रातिक (घोर अन्धकारक) डरकेँ दूर क' गोरिसँ कारी बनि गेलि अछि । (५) नील अलकराशि (केशपाश) मे भओँरा मड़रा रहल छैक । ओ गुप्त रूपेँ (घरक लोकसँ चोरा क') कारी अन्धकारमे लीन भ' चललि अछि । (६) जेना कारी पानिबाला सागर मे नीकमल लक्षित नहि होइछ तहिना राधाकेँ केओ देखि नहि सकैछ । (७) वस्त्राभरणक सौरभ पाबि नील भ्रमरगण ओकर पाछु दौड़ैत चारू दिस गुंजायमान क' रहल अछि, (८) ताही ध्वनिसँ गोविन्ददास अनुमान करैत छथि जे राधा अभिसारमे चललि ।

टि०—कृष्णाभिसारिका नायिका जे अन्हारमे कारी वस्त्रालंकार कए अलक्षित भए गुप्त अभिसार करैत अछि । तुलनीय शुक्लाभिसारिका ।

साहित्य मे नील आ कारी एहि दूनूक भेद नहि मानल जाइत अछि। पारम्परिक भाव। श्रुतिमधुर गेय पद। अलंकारहीन सहज सौन्दर्य। प्रसाद गुण।

[३७]

कवि राधाक अभिसारक वर्णन करैत छथि–

गगनहि निमगन दिनमणि काँति। लखए न पारिअ दिन की राति ॥१॥
अइसन जलद कएल अँधिआर। निअरेहु केअओ लखए नहि पार ॥२॥
चलु गजगामिनि हरि-अभिसार। गमन निरंकुश आरति[1] बिथार ॥३॥
जग भरि शीकर-निकर हिलोल। चौदिस अथिर पवन भरु[2] लोल ॥४॥
चलइत चौँकि नगरपुर बाट। मन्दिरे-मन्दिरे लागल[3] कपाट ॥५॥
जानल[4] पुनफल गुनवति सोइ। दुरदिन काहुक[5] शुभ दिन होइ ॥६॥
जब धनि कुंज मिललि हरि पास। दुरहि दूर रहु गोविन्ददास ॥७॥

पा०–१. मदन। २. अस्थिरपन करु। ३. मन्दिर लागल। ४. जनिकर। ५. दुरजन जनिकर।

(१) सूर्यक प्रकाश आकाशमे (मेघ लागि जयबाक कारणेँ) झपा गेल अछि। लक्षित नहि भ' पबैत् अछि जे दिन थिक कि राति। (२) मेघ एहन अन्हार कयने अछि जे केओ लगहुक लोकके देखि नहि पबैछ। (३) एहन समयमे गजगामिनी राधा हरिक हेतु अभिसारमे चललि अछि। ओकरा मार्गमे कोनो रोक-टोक नहि, कारण जे ओकरा हृदयमे आर्ति (मिलनक आतुरता) जे व्याप्त छैक। (४) सगरो वायुमंडल शीकर-निकर (वाष्पसदृश फूही) सँ आन्दोलित अछि। सर्वत्र चंचल पवन झकझोर मचओने अछि। (५) शहर-बजारक बाटमे सभ अपन-अपन खिड़की-केबाड़ बन्द कयने अछि। (६) गुणवती राधा बुझलक जे एहन समय ओकरे पुण्यक फलेँ तुलायल अछि। ककरहु हेतु दुर्दिन [एहि शब्दक दू अर्थ होइछ, एक बदरिआह दिन आ दोसर अधलाह दिन; एतय श्लेषसँ दूनू अर्थ] सेहो शुभ दिन भ' जाइत अछि। (७) जखन राधा कुंजमे कृष्णक निकट पहुँचलि, तखन गोविन्ददास दूर भ' गेलाह।

टि०-दिवाभिसारिका नायिका जे दिनमे चुपेचाप कोनो व्याजेँ अभिसार करैत अछि। विद्यापति रातुक अभिसारक निन्दा कए दिवाभिसारक प्रशंसा

कएने छथि– *रातुक रति आरति-समधान, अन्धकूप सम रयनिविलास, चोरक मन जओं बसए तरास* । केवल प्रौढ़ा नायिका दिवाभिसार कए पबैत छथि । परन्तु गोविन्ददासक एहि अभिसारगीतमे दिवाभिसारिका दिनहुमे मेघजन्य अन्हार तकैत अछि । अलंकार श्लेष (दुर्दिन) । दोसर चमत्कारक तत्त्व अछि भनितामे । गोविन्ददास सखी भावेँ कृष्णक उपासक छलाह । सखी प्रेमी-प्रेमिकाक मिलन कराए कात भए जाइत अछि जे निःसंकोच संगम होइक । इएह भाव (व्यंग्यार्थ) *दुरहि दूर रहु गोविन्ददास* सँ बहराइत अछि ।

[३८]

कवि राधाक अभिसारक वर्णन करैत छथि–

मेघ-यामिनि चललि कामिनि पहिरि नील निचोल रे ।
संग नायक कुसुमसायक, छाड़ि मंजिर लोल[१] रे ।।२।।
गरुअ[२] कुच भरे उलटि पद चल पीन जघनक भार रे ।
हेरि दामिनि[३] फटिक-तरु जानि[४] चमकि-धरु निरधार[५] रे ।।४।।
देखि फनिमनि दीप जनु जानि[६] वाम कर देअ झाँपि रे ।
जानल युवती ताहि[७] फनिमनि सघन तनु उठ काँपि रे ।।६।।
प्राणवल्लभ भेटल दुरलभ पुरल दुहु मन आस रे ।
ऐसन[७] पाबि नेह[८] सफल करु देह वदति गोविन्ददास रे ।।८।।

पा०–१. बोल । २. गुरु । ३. कामिनि । ४. जनि । ५. चमक धरनीधार । ६. आनि । ७. एहन । ८. गेह ।

(1) बरिसातक रातिमे कामिनी राधा कारी रंगक चोली पहरि अभिसारमे चललीह । (२) संगमे फूलक तीर चलओनिहार कामदेव नायक (मार्गदर्शक) छथिन । चंचल (मुखर) मंजीर खोलि क' राखि देलनि अछि । (३) बिजली जे चमकैत अछि तकरा स्फटिक-वृक्ष बूझि चौंकि क' निराधार पकड़य चाहैत छथि जे प्रकाशमे लोक देखि ने जाय । (६) आ' जखन युवती राधा ओकरा नागमणि बूझि जाइत छथि तखन हुनक शरीर सहसा काँपि उठैत छनि । (७) राधाकेँ दुर्लभ प्राणप्रिय कृष्ण भेटलथिन, ओ दुनूक मनोरथ पुरलनि । (८) गोविन्ददास उपदेश दैत छथि जे एहन प्रीति पाबि अपन तन (ओ जीवन) केँ सफल बनाउ ।

टि०—नायिका निशाऽभिसारिका। भारी कुच आ जघन, बरिसातक राति इत्यादि सभ पारम्परिक। दुइ गोट भ्रान्तिमान् अलंकार नव-फणि मणिकेँ दीप बूझि हाथसँ मूनब आ' विद्युल्लताकेँ स्फटिक लता बूझि अवलम्बनार्थ पकड़ब। दृ० चित्रात्मक।

[३९]

कवि थाकलि राधाक शुश्रूषा करैत कृष्णक वर्णन करैत छथि—

आदरे अगुसरि राहि हृदय धरि जानु उपर पुनु राखि।
निज-कर-कमल चरन-युग पोछए[1] हेरए चिर थिर आँखि ॥२॥
परिति-मुरुति-अधिदेवा।
जाकर[2] दरसने सब दुख मेटय से अपनहि करु सेवा ॥४॥
हिमकर-शीतल नीरहि तीतल करतले माँजए मूख।
सजल नलिनिदले मृदु-मृदु बीजए पूछए पन्थक दूख ॥६॥
अंगुलि चिबुक धरि बदने ताम्बुल पुरि मधुर सम्भाषए कान।
गोविन्ददास भन नित नव नूतन राहिक अमिअ सनान ॥८॥

पा०—१. (प.) मोछइ। २. जनिकर।

(१) कृष्ण राधाकेँ आदरपूर्वक अरिआति क' अनलनि ओ हुनक दूहू पायरकेँ अपन जंघापर राखि (२) अपना हाथेँ पोछलनि (जँतलनि)। ओ बड़ी काल धरि थीर नजरिसँ हुनका दिस तकैत रहलाह। (३) श्रीकृष्ण प्रीतिरूपी प्रतिमाक देवता थिकाह, (४) जनिक दर्शनसँ सभ दुःखक अन्त होइत अछि, से अपनहि हाथेँ राधाक सेवा करैत छथि। (५) चन्द्रमाक किरणेँ जुड़ाओल पानिसँ भीजल हाथेँ राधाक मुह पोछैत छथि। (६) जलसँ सीतल पुरइनिक पातसँ नहूँ-नहूँ हौंकैत छथि आ' पूछैत छथि जे बाटमे कोनो कष्ट त ने भेल। (७) आदरसँ दाढ़ी पकड़ि मुहमे पान खोअबैत छथि तथा मधुर-मधुर बतिआइत छथि। (८) गोविन्ददास कहैत छथि, राधा नित्य एहिना नव-नव प्रेमामृत-स्नान करैत रहैत छथि।

टि०—मानल जाइत अछि जे पुरुष भोक्ता थिक आ नारी भोग्या; पुरुष सेव्य थिकाह आ' नारी सेविका। परन्तु प्रगाढ़ प्रेममे पड़ि प्रेमी प्रेमिकाक पाएर जँतए से सम्भव छैक। प्रमाण अछि ई गीत। एहिमे प्रेमक पराकाष्ठा

टि०—नायिका निशाऽभिसारिका । भारी कुच आ जघन, बरिसातक राति इत्यादि सभ पारम्परिक । दुइ गोट भ्रान्तिमान् अलंकार नब-फणि मणिकेँ दीप बूझि हाथसँ मूनब आ' विद्युल्लताकेँ स्फटिक लता बूझि अवलम्बनार्थ पकड़ब । दूनू चित्रात्मक ।

[३९]

कवि थाकलि राधाक शुश्रूषा करैत कृष्णक वर्णन करैत छथि–

आदरे अगुसरि राहि हृदय धरि जानु उपर पुनु राखि ।
निज-कर-कमल चरन-युग पोछए[१] हेरए चिर थिर आँखि ॥२॥
परिति-मुरुति-अधिदेवा ।
जाकर[२] दरसने सब दुख मेटय से अपनहि करु सेवा ॥४॥
हिमकर-शीतल नीरहि तीतल करतले माँजए मूख ।
सजल नलिनिदले मृदु-मृदु बीजए पूछए पन्थक दूख ॥६॥
अंगुलि चिबुक धरि वदने ताम्बुल पुरि मधुर सम्भाषए कान ।
गोविन्ददास भन नित नव नूतन राहिक अमिअ सनान ॥८॥

पा०—१. (प.) मोछइ । २. जनिकर ।

(१) कृष्ण राधाकेँ आदरपूर्वक अरिआति क' अनलनि ओ हुनक दूहू पायरकेँ अपन जंघापर राखि (२) अपना हाथेँ पोछलनि (ज़ँतलनि) । ओ बड़ी काल धरि थीर नजरिसँ हुनका दिस तकैत रहलाह । (३) श्रीकृष्ण प्रीतिरूपी प्रतिमाक देवता थिकाह, (४) जनिक दर्शनसँ सभ दुःखक अन्त होइत अछि, से अपनहि हाथेँ राधाक सेवा करैत छथि । (५) चन्द्रमाक किरणेँ जुड़ाओल पानिसँ भीजल हाथेँ राधाक मुह पोछैत छथि । (६) जलसँ सींचल पुरइनिक पातसँ नहूँ-नहूँ हौकैत छथि आ' पूछैत छथि जे बाटमे कोनो कष्ट त ने भेल । (७) आङुरसँ दाढ़ी पकड़ि मुहमे पान खोअबैत छथि तथा मधुर-मधुर बतिआइत छथि । (८) गोविन्ददास कहैत छथि, राधा नित्य एहिना नव-नव प्रेमामृत-स्नान करैत रहैत छथि ।

टि०—मानल जाइत अछि जे पुरुष भोक्ता थिक आ नारी भोग्या; पुरुष सेव्य थिकाह आ' नारी सेविका । परन्तु प्रगाढ़ प्रेममे पड़ि प्रेमी प्रेमिकाक पाएर जाँतए से सम्भव छैक । प्रमाण अछि ई गीत । एहिमे प्रेमक पराकाष्ठा

व्यक्त होइत अछि । जयदेवक *गीतगोविन्द* मे कृष्ण राधासँ कहैत छथि **देहि पदपल्लवम् उदारम्** ''पाएर दिअ जे हम सेवा करी'' । एहिपर बहुत कथा गढ़ल गेल । कहल जाइत अछि जे जयदेवकेँ ई लिखबाक साहस नहि भेलनि; ओ रुकि गेलाह तँ कृष्ण स्वयं आबि लिखि देलथिन । गोविन्ददासकेँ *निज कर कमल चरनजुग पोछए* लिखबाक साहस भेलनि । दोसर बात जे एहिमे असाधारण अछि से थिक कृष्णमे ईश्वरत्व भावना–*जाकर दरसने सब दुख मेटए* । ज्ञातव्य जे सामान्यत: गोविन्ददास केवल भनितामे अपन भक्तिभाव प्रकट करैत छथि, गीतमे हुनक कृष्ण शुद्ध मानव छथिन–प्रेमीशिरोमणि मानव ।

[४०]

सखी राधाक प्रेमोत्कर्ष कृष्णकेँ सुनबैत छथि–

कंटक गाड़ि कुसुमसम पदतल मंजिर चीरहि झाँपि ।
गागरि बारि ढारि[१] कए पिच्छर चलतहँ आँगुरि चाँपि ॥२॥
माधव, तुअ अभिसारक लागि ।
दुरतर[२] पन्थ गमन धनि साधए मन्दिर जामिनि जागि ॥४॥
करयुग नयन मूँदि चलु भाविनि तिमिर पयानक आसे ।
कर-कंकन पन करि सुखबन्धन सिखए भुजग-गुरु पासे ॥६॥
गुरुजन-वचन बधिर सम मानए आन सुनैत कह आने ।
परिजन-वचन मुगुधि सम हासए गोविन्ददास परमाने ॥८॥

पा०–१. बारि । २. दुस्तर ।

(१) राधा फूल-सन कोमल अपन तरबामे अभ्यासार्थ काँट गड़बैत छथि; पायरक मंजीरकेँ चीर (साड़ी) सँ झँपैत छथि (जे ध्वनि नहि होअय)। (२) घैलसँ पानि ढारि भूमिकेँ पिच्छर बनाय आङुर दाबि-दाबि चलैत छथि । (३) हे कृष्ण, राधा अहाँक अभिसारक हेतु कोन-कोन साधना क' रहलि छथि से सुनू । (४) ओ अभिसारमे दूर धरि चलबाक क्षमता प्राप्त करबाक हेतु घरमे राति-राति भरि जागि चलबाक अभ्यास करैत छथि। (५) अन्हारमे चलबाक अभ्यासार्थ राधा दुनू हाथेँ आँखि मूनि चलैत रहैत छथि । (६) सपेराकेँ कगना देब गछि ओकरासँ सिखैत छथि जे

अभिसारमे बाटमे साप भेटय तँ ओकरा कोना बझाबी । (७) गुरुजनक कहल सुनि बहीर जेकाँ अनठा दैत छथि; सुनैत बकलेल जेकाँ हँसि दैत छथि । गोविन्ददास एहि बातक साक्षी छथि ।

टि०–कविक कल्पना कखनहु-कखनहु विश्वसनीयताक सीमाकेँ पार कए जाइत अछि । अलंकारमे से बात नहि छैक, किन्तु वस्तुमे कल्पनाक एतेक उड़ान हृदयंगम नहि भए पबैत अछि । ई व्रजभाषाक बिहारीलाल आ संस्कृतक श्रीहर्षक स्मरण करबैत अछि ।

[४१]

सखी राधाक प्रेमोत्कर्ष कृष्णकेँ बतबैत अछि–

भीतक चीत[१] भुजग हेरि जे धनि चमकि-चमकि घन काँप ।
अब अँधिआर अपन तन झाँपए कर दए फनि-मनि झाँप ॥२॥
माधव, कि कहब तुअ अनुराग ।
तुअ अभिलाष-अवश नव-नागरि जीबए बहु पुन भाग ॥३॥
जे पदतल थलकमल-सुकोमल धरनि-परसे उपचंक ।
अब कंटकमय संकट बाटहि आबए-जाए[२] निसंक ॥६॥
मन्दिर माझ साँझ नहि तेजए[३] देहरि मानए[४] दूर ।
अब कुहु-यामिनि चलए[५] एकाकिनि गोविन्ददास कह फूर ॥८॥

पा०–१. बीच । २. आओतिजाति, (प.) आयत जायत । ३. तेजथि; (प) तेजत । ४. मानथि; (प.) मानत । ५. चलथि; (प.) चलत ।

(१) जे राधा भीतमे लिखल साप (चित्र) देखि क' चौँकि-चौँकि कापय लगैत छलि, (२) से आब तोहर अभिसारमे नागमणिकेँ अपना हाथेँ झापि अन्धकारमे अपन शरीरकेँ छिपा लैत अछि । (३) हे कृष्ण, राधाकेँ तोहरा प्रति कतेक अनुराग छैक से कोना कहिअहु । (४) ओ नवयुवती सांनिध्य पयबाक व्यग्रतासँ विवश भ' एहू अवस्थामे जे जीबैत अछि से बड़ भाग्यक बात थिक । (५) थलकमलहुसँ बढ़ि कोमल जे राधाक तरबा धरणीक स्पर्शहिसँ अवचंकमे पड़ि जाइत छल, (६) से आब काँट-कूससँ

भरल संकटमय बाटहुमे नि:शंक भावसँ विचरण करैत अछि । (७) जे राधा सन्ध्याक मध्यकालहिमे डरेँ घरसँ बहाराय नहि ओ घरक देहरिओकेँ दूर बूझय, (८) से आब अमावस्याक रातिअहुमे एकसरिए गतागत करैत अछि । गोविन्ददास कहैत छथि जे ई सभ बात सत्य थिक ।

टि०–रीतिबद्ध अभिसार गीत । विषम नामक अलंकार जाहिमे दू कोटि मध्य परस्पर विरोध रहैत अछि । एक आचरण डेरबुक सन, दोसर निर्भीक साहसिक सन ।

[४२]

राधाक सखी कृष्णकेँ अभिसार हेतु प्रेरित करैत छथि–

ऊजर ससधर दीपक जारल अलिकुल घाघर लोल ।
हनइत हरिनि-नयनि दरसाओल 'उहूँ उहूँ' पिक बोल ॥२॥
माधव, मनमथ फिरत अहेरा ।
एकलि निकुञ्ज धनि फुलसर जरजर पन्थ निहारए तेरा ॥४॥,
तोहेँ अतिमन्थर गमन दुरन्तर मधु-जामिनि अति छोटि ।
से घर-बाहर होइत[१] निरन्तर निमिष मान युग-कोटि ॥६॥
आसा-पास गरा लए बैसलि प्रेम-कलपतरु-मूले ।
किअ अमरित किअ फरब गरल फल दास गोविन्द कह फूरे ॥८॥

[पा०–१. (क) चलथि ।

ताहि दिन हरिणकेँ बझयबाक एक विधि छल–दीप लेसि दिऔक, उपर सँ टापि लटका दिऔक, दीप देखि हरिण आओत; एक द्रष्टा जे नुका क' बैसल रहैछ से हरिणकेँ टापिक तर आयल देखि संकेत-ध्वनि करत, कि टापि खसा दिऔक, हरिण बाझि जायत । एहि गीतक तीन पाँतीमे एही विधि क वर्णन अछि । आब अर्थ देखू– (१-३) कामदेवरूपी अहेर उज्ज्वल चन्द्रमारूपी दीप जरा देलक अछि; भ्रमरावली रूपी घाघर (जाल वा टापि) लटका देलक अछि; कोकिल उहूँ-उहूँ ध्वनि क' संकेत क' रहल जे हिनकापर प्रहार करू । हे कृष्ण, एहि कुञ्जवनमे कामदेवरूपी अहेर शिकार करबाक हेतु घूमि रहल अछि । (४) कुंजमे एकसरिए बैसलि कामदेवक बाणसँ जर्जर भेलि अहाँक बाट ताकि रहलि छथि । (५) हे कृष्ण, अहाँ बड़

मन्दगामी छी; जयबाक अछि बहुत दूर; ओ वसन्त राति बड़ छोट होइत अछि (तखन एहन चालिएँ बेर पर कोना पहुँचब)। (६) राधा खन घर जाइत छथि तँ खन बाट तकबाक हेतु बाहर अबैत छथि। एक-एक निमिष हुनका कोटि युगक समान बुझाइत छनि। (७-८) राधा प्रेमरूपी कल्पतरु तर गरदनिमे आशारूपी फाँस लगओने बैसलि छथि; हुनक एहि प्रेमरूपी कल्पतरुमे अमृत फड़त कि विष से बात गोविन्ददासे कहि सकैत छथि।

टि०—हरिण बझएबाक विधिसँ अभिसारकेँ जोड़ब नव वस्तु। दोसर नवीनता अछि पुरुषक अभिसार। राधा बाट तकैत छथि, अभिसार करबाक अर्थात् हुनक समीप जएबाक छनि कृष्णकेँ। साहित्यदर्पणमे पुरुषक अभिसारक उल्लेख अछि *या अभिसारयते कान्तम्, स्वयं वा अभिसरति सा अभिसारिका*। प्रेमीकेँ अभिसारित करओनिहारि प्रेमिका सेहो अभिसारिका। तदनुसार राधा अभिसारिका भेलीह, कृष्ण अभिसारी।

[४३]

कवि वा सखी राधा-कृष्णक प्रेमक वर्णन करैत छथि—

हिम रितु जामिनि जामुन-तीर। तरल लताकुल कुंज कुटीर ॥१॥
तहँ तनु थिर नहि तुहिन समीर। एत कैसे बंचलि श्याम-शरीर ॥२॥
धनि तोहेँ माधव, धनि तोर[१] नेह। धनि धनि से धनि परिहरि गेह ॥३॥
कुलवति-गौरव कठिन कपाट। गुरुजन-नयन सकंटक[२] बाट ॥४॥
के जान[३] एतहु बिघिन अबगाहि। अइसन समय मिलब धनि राहि ॥५॥
एत जओँ पूरल दुहु मनकाम। तनिकर चरन हमर परनाम ॥६॥
गोविन्ददास तबहु किए जाग। तोहेँ जनु तेजह नव अनुराग ॥७॥

पा०—१. तोहुँ। २. संकटक। ३. जन।

(१) एक तँ हिमऋतु, ताहिपर रातिक समय, आ ताहू पर यमुना नदीक कछेर। ठंढा बसात बहि-बहि कुंज-कुटीरक लतावलीकेँ तरल (चंचल) कय देने अछि। (२) ततय शरीर स्थिर नहि रहि सकैत अछि। तुषारमय पवन बहैत अछि। हे राधा, श्यामशरीर (कारी देहबाला) कृष्णकेँ कोना एतेक वशमे कयलह जे एहनो समयमे संकेत-स्थलमे जुमि गेलाह। (३) हे

कृष्ण, तोँ धन्य थिकह आ तोहर नेह धन्य थिकहु । से ललना (राधा) धन्य थिकीह जे एहनो समयमे घरसँ निकसि गेलीह । (४) एहि घरमे कुलकामिनीक मर्यादा रूपी सुदृढ़ केबाड़ लागल छल । (५) के जनैत छल जे एहनो समयमे एतेक विघ्न (खतरा) मे पैसि राधा ओ कृष्ण दुनू मिलि सकताह । (६) एहनो कष्टकर समयमे जे युगल स्नेही अपन मनोरथ पुरओलनि तनिक चरणमे हम प्रणाम करैत छिअनि कारण जे एहन साहसक हेतु प्रणम्य थिकाह ओ दुनू । (७) गोविन्ददास एहनो समयमे किएक जागल छथि ? (भक्तिक उद्रेकमे ओ जाड़सँ नीन टुटलहुपर राधा-कृष्णक हिमाभिसारक कल्पना करय लगैत छथि) । ओ राधा तथा कृष्ण दुनूकेँ उपदेश दैत छथि जे तोँ एहि नव प्रेमकेँ पाछाँ तोड़िहह नहि ।

टि०–नायक ओ नायिका दूनूक अभिसार जाड़क रातिमे । साहससँ दूनूक बीच प्रेमातिशय प्रमाणित । चमत्कार केवल भनितामे (व्याख्या देखू) ।

[४४]

राधाक सखी कृष्णकेँ उलहन दैत छथि–

पन्थ निहारि वारि झरु लोचन, अधर निरस घन साँसे ।
करतल वदन सघन अबलम्बन, गुनि-गुनि जिवन हतासे[१] ॥२॥
माधव, काहे असोआसलि रामा ।
सगरिओ जामिनि जागि गमाउलि कामिनि संकेत -ठामा ॥४॥
'हरि हरि' रोए धरनि धरि ऊठए रोदति[२] गदगद भाखि ।
नील गगन हेरि तोहर भरमे हरि बिहिसओँ माँगए पाँखि ॥६॥
कि करब चन्द चन्दन घन लेपन किसलय कुसुम-सयान ।
आन बेआधि आन पए औखध गोविन्ददास नहि मान ॥८॥

पा०–१. हुतासे । २. रोषति ।

(१-२) हे माधव, अपलक बाट तकैत-तकैत राधाक आँखिमे नोर भरि आयल, तेज साँस लैत-लैत अधर रस शुष्क भ' गेल । राधा आननकेँ हाथपर टिकओने छथि, आ चिन्ता करैत-करैत जीवनसँ निराश भ' गेलि छथि । (३) हे माधव, अहाँ राधाकेँ मिथ्या आश्वासन किएक देलिअनि ?

(४) कामिनी राधा संकेत-स्थलमे जागि क' सगर राति बितओलनि । (५-६) राधा छनहि 'हरि-हरि' कहि धरती टेकि उठि जाइत छथि, छनहि गद्‌गद स्वरमे कानय लगैत छथि । नीलवर्ण आकाशकेँ देखि अहाँक भ्रम भ' जाइत छनि । (७-८) चन्द्र (कर्पूर) ओ चानन घन क' लेपि की होयत । किसलय ओ फूलसँ सेज बनाय की होयत । व्याधि किछु ओ औषध किछु । गोविन्ददास कहैत छथि जे एहिसँ रोगक निवारण नहि होयत ।

टि०—विप्रलब्धा नायिका । वचन दए कृष्ण नहि अएलाह । राधा बाट तकैत रहि गेलीह । सभ किछु रूढ़िबद्ध । आतुरता, सन्ताप, भ्रान्ति (नील गगन हेरि) आदि । भनितामे दृष्टान्त अलंकार, सेहो प्रचलिते ।

[४५]

राधा सखीसँ कहैत छथि—

अम्बर डम्बर भरु नव मेह । बाहर तिमिर न हेरु निज देह ॥ १॥
अन्तरे[१] ऊगल सामर इन्दु । उछलल मनहि मनोभव-सिन्धु ॥२॥
आब जनि सजनी करह विचार । शुभ खन भेल जलद[२] अभिसार ॥३॥
मृगमद तनु अनुलेपह मोर । तेहि पहिराबह नील निचोल ॥४॥
की फल उच कुच कंचुक भार । दुरि करु सौतिनि मोतिम हार ॥५॥
तोहेँ सखि देखह देहरि लागि । के जन विघिन मन दुरजन जागि[३] ॥६॥
चलइत दीगभरम[४] जनि होए । गोविन्ददास संग चलु गोए ॥७॥

पा०—१. अम्बरे । २. पहिल । ३. गुरुजन अबहु घुमल किये जागि (प) । ४. दिगक भरम ।

(१)आकाश नव मेघक घटासँ आच्छन्न अछि । बाहरमे अन्धकारसँ अपनो देह नहि सूझैत अछि । (२)हे सखी, एहना समयमे हमरा हृदयमे श्यामल चन्द्र (कृष्ण) उदित भ' गेलाह अछि । (३)हे सखी, आब कोनो तारतम्य नहि करह । ई प्रथम अभिसारक शुभ अवसर प्राप्त भेल अछि । (४) हमरा देहमे कस्तूरीक लेप लगा दैह आ ताहिपरसँ कारी रंगक चोली पहिरा दैह । (५) उन्नत स्तनपर कंचुक बन्हबाक की प्रयोजन । मोतिक हारकेँ हटाबह, कारण जे ई तँ चक दय झलकि 'सौतिनि जेकाँ देखार क'

दैत । (६) हे सखी, तोँ द्वार पर ठाढ़ि भ' देखैत रहह जे गुरुजन एखनहु सुतल कि जागल छथि [अर्थ प. पाठक अनुसार] (७) बाट चलैत कतहु दिग्भ्रम ने भ' जाय तेँ गोविन्ददास कहैत छथि जे गुप्त रूपेँ तोँ संग चलहुन ।

टि०–वासकसज्जा नायिका । भादबक अन्हरिआ राति, पानि पड़ैत अभिसारमे चलब प्रेमातिशय व्यंजक । अभिसारिकाक तीन प्रभेद एकत्र कृष्णाभिसारिका, वर्षाभिसारिका आ वासकसज्जा भनितामे गोविन्ददासक सखी भाव स्पष्ट आ' भाव नब ।

[४६]

कवि अभिसार हेतु सजलि राधाक वर्णन करैत छथि–

आजुक सिंगार रचल धनि[१] बाला । युवजन- हृदय कुसुमशरज्वाला ॥१॥
हसि देखबय मुख दशनक जोत । पबारक[२] माझ गाँथल गज मोती ॥२॥
चाँचर चिकुर उलटि उर पड़ई । जनि कनकाचल[३] चामर ढरई ॥३॥
चंचल कुटिल दीठि हेर बाट । विमल कमल जनि खंजन नाट ॥४॥
यौवन-मदे गति मन्थर भाति । जनि मत कुंजर गति मद माति ॥५॥
मिललि कुंज धनि नागर पास । हेरइत आनन्द गोविन्ददास ॥६॥

पा०–१. धनि रे चलु । २. पंगारक ३. कन कागिरि ।

(१) आइ अभिसारक हेतु सुन्दरी अपूर्व श्रृंगार रचलनि । देखि क' युवकलोकनिक हृदयमे काम ज्वलित भ' उठत । (२) सुन्दरी हँसि क' अपन दाँतक चमक देखबैत छथि, से लगैछ जेना मूँगाक बीच-बीचमे गजमुक्ता गाँथल हो । (३) चंचल अर्थात् छिड़िआइत केशराशि उनटि क' छाती पर आबि गेल अछि, से लगैछ जेना सोनाक पहाड़ (=स्तन)केँ केओ चामर हौँकैत हो । (४) ओ चपल तथा वक्र दृष्टिसँ बाट तकैत छथि, से लगैछ जेना निर्मल कमल (=वदन) पर खंजन पक्षी (=नेत्र) नचैत हो । (५) यौवनक मदसँ हुनक चालि मन्द अछि, जेना मत्ता हाथी मस्तीसँ चलैत रहय । (६) राधा कुंजमे नागर कृष्णसँ मिललीह । से देखि गोविन्ददास हर्षित भेलाह ।

टि०–वासकसज्जा नायिका । वेश आ भावभंगी पारम्परिक । उत्प्रेक्षा प्रत्येकके॑ नवीनता दैत अछि । अलंकार प्रधान । प्रसाद गुण । पुनः भनिता मे कविक सखी-भाव स्पष्ट । मिलन कराएब सखीक लक्ष्य; से पूरा भेलापर आनन्द स्वाभाविक ।

[४७]

सखी राधाके॑ कृष्णक आतुरता जनबैत छथि–

मदन मोहन मुरुति माधव मधुर मधुपुर तोहि ।
मुगुध मानिनि मान मरदन[१] मिछहि[२] मारग जोहि ॥ २ ॥
मिलल मधुरितु मल्लि मुकुलित मंजु माधवि कुंज ।
मेलि मधुकरि मुखर मधुकर माति मधुपिबि गुंज ॥ ४ ॥
मिहिरजा-मृदु-मन्द मारुत मनहि मनसिज साति ।
मसृण मलयज मुरुछि मानिनि मही माह पड़ि[३] जाति ॥ ६ ॥
महा मणिमय महग मंडन[४] मलिन मुख-अरविन्द ।
मरन[५] मृगयति मुदिर मोहन[६] मोहित दास गोविन्द ॥ ८ ॥

पा०–१. माधवि मानि मानद । २. बिछइ । ३. गड़ि । ४. मंडल । ५. मरम । ६. मनोहर ।

(१-२) हे राधा, मदनहुके॑ मोहनिहार स्वरूपबाला तथा मुग्ध मानिनीक मान-मर्दन कयनिहार कृष्ण मधुपुर (मथुरा) नगरमे निष्फल (मिछहि) तोहर बाट तकैत छथुन । (३) वसन्त ऋतु आबि तुलायल । बेली फुला गेल । माधवी-लताक कुंज रमणीय भ' गेल । (४) भ्रमरीके॑ संग क' भमर सभ मधुक (पुष्परसक) पानसँ मत्त भ' कल-कल गुंजन क' रहल अछि । (५) सूर्यक कन्या यमुना नदीसँ अबैत मृदु मन्द पवन मनमे काम वेदना उत्पन्न करैत अछि । मेही क' घसल चाननक लेपसँ मानिनी नायिका मूर्छित भ' धरती पर खलि पड़ैत छथि । (७) *महा....मंडल*-अर्थ अस्पष्ट । कृष्णक मुख-कमल तोहर विरहे॑ मलिन छनि । (८) श्यामसुन्दर तोहर विरहे॑ आब मृत्युक बाट ताकि रहल छथि । ई देखि गोविन्ददास विस्मित छथि ।

टि०–एहि गीतक विशेषता थिक आदि-अनुप्रास, जाहिमे यथासंभव प्रत्येक शब्दक आरम्भ एके व्यंजनसँ होइत अछि, जेना एहि गीतमे 'भ'

व्यंजनसँ। गोविन्ददासकेँ ई अलंकार बड़ प्रिय छलनि। *शृंगारभजन गीतावलीक* कुल ३३५ गीत मध्य 29 गोट गीत एही प्रकारक अनुप्रास बाला अछि। गोविन्ददास अपन गीतक समीक्षा जे अपनहि कयने छथि–*रसना-रोचन स्रवन विलास रचइ रुचिर पद गोविन्ददास* से एहिमे द्रष्टव्य।

[४८]

सखी राधाकेँ कृष्णक आतुरता जनबैत छथि–

विपने मिलिल गोपनारि हेरि हसथि मुरलिधारि।
निरखि बयन पुछथि बात प्रेम-सिन्धु-गाहनी ॥ १ ॥
पुछथि सभक गमन-क्षेम कहथि किए करब प्रेम।
व्रजक सबहु कुशल तात[१] काहे[२] कुटिल चाहनी ॥ २ ॥
हेरि ऐसनि रजनि घोर[३] तेजि तरुनि पतिक कोर।
काहे[४] आइलि कानन[५] ओर थोर न एहो[६] काहिनी ॥ ३ ॥
गलित ललित कबरिबन्ध काहे धाबथि युवतिवृन्द।
मन्दिर काहे पड़ल दन्द बेढ़ल विपथ[७] वाहिनी ॥ ४ ॥
काहे शारद चान्दनि राति निकुंज भरल कुसुम पाँति।
हेरथि श्याम भमर[८] काँति बूझि आइलि साहनी ॥ ५ ॥
कतहु कहैत न कह कोइ राखए कहि मनहि गोइ।
इहहि आन न होए कोइ गोविन्ददास गाहिनी ॥ ६ ॥

पा०–१. बात। २. कहैक। ३. गोर। ४. कियै। ५. विपिन। ६. थोर न एहो। ७. विशिख। ८. भरम।

(१) गोपीलोकनि वनमे आबि कृष्णसँ मिललीह। से देखि मुरलीधर कृष्ण हँसैत छथि। सभक मुह निहारैत प्रेमरूपी समुद्रमे डूबल गप्प-सप्प पुछैत छथि। (२) पुछैत छथि जे की सभ कुशलपूर्वक पहुँचलहुँ? अहाँ सभक हम की प्रेम (अर्थात् प्रिय कार्य) करू? कहू व्रजमे सभ कुशल तँ छथि? दृष्टि एना वक्र किएक अछि? एना कटाक्षसँ हमरा किएक तकैत छी? (३) एहन घोर राति देखैत हे तरुणीलोकनि, अहाँ सभ अपन-अपन पतिक कोर छाड़ि वन दिस किएक अयलहुँ? ई कोनो छोट बात नहि थिक।

(४) युवतीसभक सुन्दर खोंपा एना ढील भ' फूजि किएक गेलनि अछि। ओसभ एना दौड़लि किएक अइलीह अछि ? की घरमे झगड़ादन भेलनि ? की शत्रुसेना चढ़ि आयल अछि ? (५) किएक शरद पूर्णिमाक रातिमे एहि वनमे एना वसन्त जेकाँ नाना फूल फुलायल अछि (अर्थात् युवतीलोकनि पसरलि छथि) ? श्याम एहि युवतीलोकनिकेँ स्वाधीना भ' आइलि जानि भ्रमर जेकाँ हुनका सभकेँ देखैत छथि ।(६) एतेक पुछलहुपर केओ उत्तर नहि दैत छथि। किएक सभ मनक भावकेँ मनहिमे दबओने छथि ? एतय तँ आन केओ नहि अछि । गोविन्दददास एहि गीतक गायक थिकाह ।

टि०–लगैत अछि जे ई श्रीमद्भागवत पर आधारित प्रबन्धकाव्यक अंश हो । मिलाउ १०।२९।७१–

स्वागतं किं महाभागाः प्रियं किं करवाणि वः ।

व्रजस्यानामयं कच्चिद् व्रजागमनकारणम् ॥

आओर देखू अगिला गीत ।

[४९]

कवि भागवतमे वर्णित रासक एक झलक देखबैत छथि–

अइसन वचन कहल जब कान । व्रज-रमणी-गण सजल नयान ॥१॥
टूटल सबहु मनोरथ भरनी । अवनत आनन नख लिखु धरनी ॥२॥
आकुल अन्तर गदगद कहई । अकरुन वचन-विशिख नहि सहई ॥३॥
सुनु सुनु सुकपट सामर चन्द । कैसे करसि तोहेँ एह अनुबन्ध ॥४॥
तेजल कुलसिल मुरलिक गाने । किंकरगण जनु केश धरि आने ॥५॥
अब कहु कपट धरमयुत बोल । धार्मिक हरए कुमारि निचोल ॥६॥
तोहि सोँ पल[१] जिव तोहेँ रस पाब । तुअ पद छोड़ि अब कहु कहाँ जाब ॥७॥
एतेक कहैत व्रजयौवति मेल । सुनि[२] नन्दनन्दन हरखित भेल ॥८॥
कए परसाद तहाँ करए विलास । आनन्दे निरखए गोविन्ददास ॥९॥

पा०–१. सोपि तैं । २. सुनि सुनि ।

(१) जखन कृष्ण एहन बात (गीत सं० ४२ देखू) कहलनि तखन से सुनि व्रजवनिता-लोकनिक आँखिमे नोर भरि आयल । (२) सभक मनोरथक

तानी-भरनी टूटि गेलनि, सभकेँ बड़ निराशा भेलनि । सभ मूड़ी झुकाय नहसँ माटि खोधय लगलीह । (३) व्याकुल हृदयसँ गद्गद (गह्वरित) कण्ठसँ कहय लगलीह । कृष्णक निष्करुण वचन-बाण (उपदेश) सह्य नहि भेलनि । (४) कहैत छथि, हे कपटी कृष्णचन्द्र, सुनू । अहाँ हमरा सभक संग एहन अनुबन्ध (पर-नारी पर-पुरुष-भाव) कोना जोड़ैत छी । (५) हम सभ तँ अहीँक मुरलीध्वनिपर अपन कुल-शील छोड़ल । अहाँक ई मुरलीध्वनि हमरा तहिना खीचि अनलक अछि जेना नोकरसभ (मालिकक हुकुमसँ) ककरहु केश धय अनैत अछि । (७) आब अहीँ हमरालोकनिकेँ वंचनापूर्वक धर्मोपदेश द' रहल छी । की धर्मात्माकेँ इएह चाही जे कुमारिक चीर-हरण करय ? (८) अहाँकेँ हमरालोकनि अपन जीवन-प्राण समर्पित क' देल, अहाँ एकर रसभोग करू । आब अहाँकेँ छोड़ि हमरालोकनि कतय जायब ? (९) व्रजांगना-लोकनि एतबा बात कहलनि कि से सुनि नन्दनन्दन कृष्ण हर्षित भ' गेलाह । हुनकालोकनि पर कृपा क' हुनकालोकनिक संग बिहार करय लगलाह । से छवि गोविन्ददास आनन्दपूर्वक देखैत छथि ।

टि०–ई गीत श्रीमद्भागवतक दशम स्कन्धक २९म अध्यायक कतिपय श्लोकक भावपर आधारित अछि । ई गीत तथा गीत सं.४८ कोनो आन प्रबन्ध -काव्यक अंश सन लगैत अछि ।

[५०]

कवि रासक वर्णन करैत छथि–

शरद चन्द पवन मन्द विपिन भरल कुसुम गन्ध
फुल्ल मल्लि मालति यूथि मत्त मधुप[१] भोरणी ॥ १ ॥
हेरैत राति ऐसन भाति श्याम मोहन सोहन काँति
मुरलितान पंचम गान कुलवती-चित-चोरणी ॥ २ ॥
सुनैत गोपि प्रेम रोपि मनहि मनहि आप सोँपि
ताहिँ चलति जाहिँ बोलय मुरली कल बोलनी[२] ॥ ३ ॥
बिसरि गेह निजहु देह एक नयन काजररेह
बाँहि[३] रणित मंजिर एक एक कुंडल दोलनी ॥ ४ ॥
शिथिल छन्द निविक बन्ध[४] वेग धाबए जुवतिवृन्द
गहैत खसए वसन चोलि[५] गलित वेणि लोलनी[६] ॥ ५ ॥

तत नवेलि सखिनि मेरि केअओ ककरो पथ न हेरि

अइसे मिलल गोविन्ददास गोकुलचन्द गोपनी[७] ॥ ६ ॥

पा०—१. मधुकर । २. कनक कनक लोलनी । ३. जाहि । ४. पवन शिथिल शिथिल बन्ध । ५. चोरि । ६. दोलनी । ७. एहन मिलल गोकुल चन्द गोविन्ददासक गोपनी ।

(१) शरदक चान उगल अछि । मन्द-मन्द पवन बहैत अछि । वन पुष्पक सौरभसँ भरल अछि । बेली, मालती, जूही फुलायल अछि, ताहिपर मत्त मधुकर बेहाल अछि । (२) एहन रमणीय राका देखि सोहाओन कान्तिबाला मनमोहन कृष्ण मुरलीपर पंचम तान उठओलनि, जे व्रजक कुलांगनालोकनिक चित्त चोरा लेलक । (३) से सुनैत देरी गोपी-लोकनि कृष्णक प्रेममे मत्त भ' मनहि-मन अपनाकेँ कृष्णक प्रति समर्पित क' देलनि आ जाहि दिससँ मुरलीक कल-नाद आबि रहल छल तेम्हर बिदा भ' गेलीह । (४) ओलोकनि अपन घर-आङन बिसरि देलनि । अपन देह पर्यन्त बिसरि देलनि । एक आँखिमे जे काजर कयने रहथि से ओही अवस्थामे बिदा भ' गेलीह । एके बाँहिमे मंजीर आ एके कानमे कुंडल झुलबैत बिदा भ' गेलीह । (५) व्रजयुवतीलोकनि जे दौड़लीह ताहिसँ हुनक साड़ीक कसनी-समेत ढील भ' गेलनि । साड़ी आ चोली जे ढील भ' खसैत छनि तकरा सम्हारैत चलैत छथि । लटकल जुट्टी गतिक वेगवश झूलि रहल छनि । (६) ओतय अनेक सखी सभक मेर (झुंड) छल, किन्तु केओ ककरो बाट नहि देखैत छल, सभ निछोह बढ़लि जाइत छलि । गोविन्ददास कहैत छथि जे एही प्रकारेँ गोकुलक चान श्रीकृष्ण ओ गोपांगना-सभक मिलन भेल ।

टि०—ई गीत श्रीमद्भागवत, स्कन्द १०, अध्याय २९क भाव पर रचल गेल अछि । प्रत्येक यति पर अन्त्यानुप्रास, सुगेय छन्द आ' प्रवाही लय एकरा सुन्दर सुगेय बनओने अछि । विषय-वस्तु सभटा रूढ़िबद्ध ।

[५१]

पतिक सेवामे लागलि राधा कृष्णकेँ भ्रमरक व्याजेँ संकेत दैत छथि—

मोर मुखकमल विमल रस[१] परिमले जानल तोहेँ अति भोर ।

स्वामिक निअर कतहु कर कलरव, न जानि केहन हिअ[२] तोर ॥२॥

दुर रहु श्याम भ्रमरवर राए ।